पालि-ग्रन्थमाला-17

अभिधम्मपिटके

धम्मसङ्गणिपालि

(मातिका चित्तुप्पादकण्डं च)

पठमो भागो

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)



पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
Accredited by 'NAAC' with 'A' Grade
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

पालि-ग्रन्थमाला-17

धम्मसङ्गणिपालि

(मातिका चित्तुप्पादकण्डो च)

पठमो भागो

संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता

संरक्षकः

प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री, कुलपतिः

संस्कृतच्छायाकारः हिन्दीअनुवादकः सम्पादकश्च

डॉ. वेदव्यासपाण्डेयः



पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)

NAAC द्वारा 'ए' श्रेण्यां प्रत्यायितः

(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)

लखनऊ-परिसरः, विशालखण्डः-4, गोमतीनगरम्, लखनऊ (उ.प्र.)

पालि-ग्रन्थमाला-17

धम्मसङ्गणिपालि

(मातिका चित्तुप्पादकण्डो च)

पठमो भागो

(संस्कृतच्छाया-हिन्दी-अनुवादसहिता)

संस्कृतच्छायाकारः हिन्दीअनुवादकः सम्पादकश्च डॉ. वेदव्यासपाण्डेयः

प्रकाशक : © प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमती नगर,
लखनऊ-226010 (उ. प्र.)
दूरभाष : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
E-mail : rskslucknow@yahoo.com

ग्रन्थमाला सम्पादक : प्रो. विजयकुमार जैन
डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

प्राप्ति स्थान : 1. प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमतीनगर, लखनऊ-226010
दूरभाष : 0522-2393748E-mail : rskslucknow@yahoo.com
2. दिल्ली मुख्यालय, बिक्री विभाग
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
56-57 इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
फोन- 28523949

ISBN : 978-81-949896-3-9

मूल्य : रु. 312/-

प्रथम संस्करण : 2020

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स, निशातगंज, लखनऊ

Pāli-Granthamālā-17

DHAMMASAṄGAṆIPĀLI

(MĀTIKĀ & CITTUPPĀDAKAṆḌA)
PAṬHAMO BHĀGO
(With Sanskritacchāyā & Hindi Translation)

Patron

Prof. Parmeshwar Narayana Shastry
Vice-Chancellor

Sanskritacchāyākāra, Hindi Translator& Editor

Dr. Ved Byas Pandey



Pali Study Centre
Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
Accredited by NAAC with 'A' Grade
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus, Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)

Pāli-Granthamālā-17

DHAMMASAṄGAṆIPĀLI

(MĀTIKĀ & CITTUPPĀDAKAṆḌA)
PAṬHAMO BHĀGO
(With Sanskritacchāyā & Hindi Translation)

Sanskritacchāyākāra, Hindi Translator & Editor - Dr. Ved Byas Pandey

Publisher : © Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan,
Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus,Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)
E-mail : rskslucknow@yahoo.com

General Editor : Prof. Vijay Kumar Jain
Dr. Gurucharan Singh Negi

Sales Counters : 1. Principal, Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus,Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)
E-mail : rskslucknow@yahoo.com
2. Delhi (H.Q.), The Sales Incharge
Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058

ISBN : 978-81-949896-3-9

Price : Rs. 312/-

First Edition : 2020

Printer : Shivam Press, Nishatganj, Lucknow

प्रो. पी.एन. शास्त्री
कुलपति
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
('ए' ग्रेड के साथ राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं
प्रत्यायन परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त)

Prof. P.N. Shastry
Vice-Chancellor
RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
Deemed to be University
(Under MHRD, Govt. of India)
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

शुभाशंसा

विगत वर्षों में 15-20 प्रकाशनों की शृंखला में

वर्ष 2019-20 में पालि अध्ययन केन्द्र चार भागों में महावंस (भाग-1), अनागतवंस, धम्मपद एवं मिलिन्दपञ्ह, धम्मसङ्गणि तथा सद्दनीति का प्रकाशन करने जा रहा है, यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इनके प्रकाशन से इसमें निहित सामग्री शोध के लिए उपलब्ध हो सकेगी।

संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद के कारण यह ग्रन्थ भी उपयोगी है। सद्दनीति का प्रकाशन प्रथम बार हो रहा है, जो पालि व्याकरण का अनुपलब्ध व्याकरण ग्रन्थ था। इससे भी शोध के कई आयाम खुलेंगे। मैं कामना करता हूँ कि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में चल रहा पालि अध्ययन केन्द्र निरन्तर प्रगति करता रहे। इसके सम्पादकों तथा परिसर के प्राचार्य तथा प्रभारी भी साधुवाद के पात्र हैं।

।।भवतु सब्बमङ्गलं।।

(प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री)

56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058 Ph.: (O) 28523949 (Fax) 28521948
EPABX : 28524993, 28521994, 28524995 E.Mail : rkspvc@yahoo.com

सम्पादकीय

भरत सिंह उपाध्याय ने धम्मसङ्गणि को अभिधम्म पिटक की प्रतिष्ठा कहा है। इसमें गणनात्मक एवं परिप्रश्नात्मक शैली के आधार पर मानसिक एवं भौतिक जगत की अवस्थाओं का चित्रण मिलता है। धम्मों को कामावचर, रूपावचर, अरूपावचर, लोकोत्तर आदि के रूप में संगणना और संक्षिप्त व्याख्या करने के कारण यह नाम है। इसे बौद्ध मनोविज्ञान की नैतिक व्याख्या या बौद्ध नीतिवाद की मनोवैज्ञानिक व्याख्या कहा है।

नैतिक व्याख्या से तात्पर्य है कर्म के शुभ (कुशल), अशुभ (अकुशल) और इन दोनों के अतिरिक्त अव्याख्येय (अव्याकृत) विपाकों के रूप में व्याख्या। आरम्भ में 'मातिका' या विषय सूची दी गई है, पश्चात् मन की अवस्थाओं की कर्म के शुभ, अशुभ आदि स्वरूपों के साथ व्याख्या की गई है जिसके कारण ग्रन्थ 'दुरुह' हो गया है लेकिन भरतसिंह उपाध्याय ने धम्मसङ्गणि को अभिधम्म समझने के लिए कुंजी भी कहा है।

धम्मसङ्गणि चार कण्डों में विभक्त है- चित्तुप्पादकण्ड, रूपकण्ड, निक्खेपकण्ड और अत्थुद्धारकण्ड। प्रथम कण्ड में कुशल-अकुशल और अव्याकृत धम्म की विस्तृत व्याख्या है। विञ्ञाण का वर्णन है। द्वितीय कण्ड में 'रूप' का वर्णन है इसे प्रो. भागचन्द्र जी ने अव्याकृत की परिधि में कहा और तृतीय कण्ड- प्रथम दो अध्यायों का सारांश है तथा चतुर्थ कण्ड- तृतीय अध्याय का संक्षिप्त रूप है। पालि अध्ययन केन्द्र द्वारा अभिधम्मपिटक का संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी के साथ प्रकाशन महत्त्वपूर्ण है।

पालि अध्ययन केन्द्र में प्रकाशन के पूर्व कार्यशाला भी होती है। अतः धम्मसङ्गणि की कार्यशाला में प्रो. प्रद्युम्न दूबे, प्रो. उमाशंकर व्यास, प्रो. हरिशंकर शुक्ल प्रो. विमलेन्द्र कुमार जी ने अपना मार्गदर्शन दिया। परिश्रम तो डॉ. वेद व्यास पाण्डेय का ही है। इन्होंने अथक परिश्रम करके यह कार्य सम्पन्न किया। पालि अध्ययन केन्द्र में कथावत्थु का भी हिन्दी अनुवाद एवं संस्कृतच्छाया सम्पन्न कर ली गई है। अभी कोरोना संकट आ जाने के कारण कार्यशाला नहीं हो पाई है। इसी प्रकार यमक और पट्ठान का भी कार्य चल रहा है।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के सम्माननीय कुलपति प्रो. पी. एन. शास्त्री जी तथा कुलसचिव प्रो. सुब्रह्मयम शर्मा जी के संरक्षणत्व में केन्द्र प्रगति कर रहा है। उपनिदेशक एवं पालि प्रभारी डॉ. देवानन्द शुक्ल जी एवं पालि प्राकृत अधिकारी भी कार्यालयीय कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं।

लखनऊ परिसर में कार्यरत केन्द्र के अध्येताओं का परिश्रम एवं विशेषज्ञों का समुचित मार्गदर्शन भी भुलाया नहीं जा सकता, लखनऊ केन्द्र के प्रभारी डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी जी भी मनोयोगपूर्वक लगे रहते हैं।

अभिधम्मपिटक के ग्रन्थों के प्रायः हिन्दी अनुवाद नहीं है। प्रो. रामशंकर त्रिपाठी जी का अभिधम्मत्थसंगहो का अनुवाद प्राप्त होता है जो अनुवाद के लिए अनुकरणीय हो सकता है क्योंकि पूज्य त्रिपाठी गुरु जी ने सम्पूर्ण अभिधर्म के विषय को लेकर आगत शब्दों की व्याख्या भी की है। अभिधम्मपिटक में मार्गदर्शन के लिए भिक्षु जगदीश काश्यप जी की 'अभिधम्म फिलासफी' अंग्रेजी पुस्तक उपलब्ध है। अभिधम्मपिटक के सभी ग्रन्थों की अ अट्ठकथाएं भी देवनागरी में प्रकाशित हैं। सातों ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवाद भी हैं।

पहले हमारे पास मात्र पुग्गलपञ्ञति का अनुवाद था पिछले वर्ष धातुकथा का संस्कृतच्छाया के साथ अनुवाद प्रकाशित हुआ है, प्रारम्भिक कार्यों में तथा नए विद्वानों के कार्यों की सीमा होती है। पालि अध्ययन केन्द्र द्वारा किए जा रहे अनुवाद भी मात्र रूपान्तरण ही कह सकते हैं। इसका लाभ अवश्य मिलेगा कि इन अनुवादों एवं संस्कृतच्छाया से शोधार्थियों को सहायता मिलेगी तथा भय दूर होगा।

आगे प्रो. रामशङ्कर त्रिपाठी जी ने जिस तरह अभिधम्मपिटक की विशद व्याख्या की है उसी प्रकार एक-एक शब्द पर टिप्पणी दी जाय तो बोधगम्य हो सकेगा। तथा मनोविज्ञान की दृष्टि से भी शोध कार्य हो सकेंगे। मनो भावों का इतना विस्तृत विवरण जैन परम्परा के करणानुयोग ग्रन्थों तथा कषायपाहुण आदि ग्रन्थों में भी मिलता है, जो तुलनीय है।

पालि-प्राकृत केन्द्र आगे भी इसी तरह प्रगति करते रहें, इसी मंगल कामना के साथ- 'भवतु सब्बमंगलं'।

(प्रो. विजयकुमार जैन)

प्र. प्राचार्य

ग्रन्थ के सम्बन्ध में

धम्मसङ्गणि अभिधम्मपिटक की प्रथम पुस्तक है। धम्मसङ्गणि शब्द दो शब्दों के मेल से बना है यथा- धम्म+सङ्गणि। यहाँ धम्म शब्द से अभिप्राय चार परमार्थ धर्म, यथा- चित्त, चैतसिक, रूप एवं निर्वाण से है तथा सङ्गणि का अर्थ संगणना है, संगणना उल्लेख पूर्वक् विस्तृत व्याख्या को कहते हैं। अतः धम्मसङ्गणि एक ऐसी पुस्तक का नाम है, जिसमें अभिधर्म के चार परमार्थ धर्मो का विश्लेषण तथा प्रश्नोत्तर द्वारा उनके स्वरूप का प्रकाशन किया गया है।

धम्मसङ्गणि मातिका स्थापनापूर्वक चार परिच्छेदों में विभक्त है यथा- मातिका, चित्तुप्पादकण्ड, रूपकण्ड, निक्खेपकण्ड तथा अत्थुद्धारकण्ड। ये सभी एक दूसरे के पूरक तथा सुनियोजित ढंग से जुड़े हुये है। जिस प्रकार कोई शृङ्खलाबद्ध रज्जू एक-एक शङ्खला से बंध कर अपने अस्तित्व को स्थापित करती है, उसी प्रकार चार परमार्थ धर्मों का विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाशन इन पाँच अध्यायों में हुआ है।

इस ग्रन्थ में सर्व प्रथम मातिका को रखा गया है। मातिका का अर्थ विचार बिन्दु, विचार शिला, दृष्टिकोण, बीज एवं समुचित मार्ग आदि कहा जा सकता है। यहाँ पर विशेषकर विचार बिन्दु या बीज अर्थ ही अभिप्रेत है। मातिका शब्द का अर्थ होता है- जो माता का हो। इसका अभिप्राय यह है कि माता के गर्भ में एक अत्यन्त छोटे आकार का शिशु जन्म ग्रहण करता है तथा कालक्रम से एक विशाल व्यक्तित्व के रूप अपने को प्रकट करता है। उसी प्रकार ये मातिकायें देखने में छोटे पद है, पर इनमें गम्भीर विचार निहित है।

मातिका का अर्थ बीज रूप में भी किया जा सकता है। जिस प्रकार एक बीज अत्यन्त छोटे आकार में विद्यमान रहता है, पर समय पाकर वह एक महान् वृक्ष के रूप में परिणत हो जाता है, उसी प्रकार ये विचार के बीज रूप में है। मातिका समुचित मार्ग के अर्थ में भी प्रयुक्त कही जा सकती है। इन मातिकाओं के माध्यम से कुशल-अकुशल धर्मों का कथन कर अकुशल का प्रहाण एवं कुशल के संधारण पर प्रकाश डाला गया है।

मातिकायें दो प्रकार की हैं- अभिधम्म-मातिका तथा सुत्तन्त-मातिका। अभिधम्म-मातिका पुनः दो प्रकार की हैं; तिक-मातिका तथा दुक-मातिका। तिक मातिकाओं की संख्या 22 है। इनमें प्रत्येक के साथ तीन- तीन विचार बिन्दु समाविष्ट है। दुक मातिकायें संख्या में एक सौ है। इनमें से प्रत्येक मातिका में दो-दो विचार बिन्दु समाविष्ट हैं। समस्त सुत्तन्त मातिकायें दुक-मातिका है, जिनकी संख्या 42 है।

धम्मसङ्गणि में तिक मातिकाओं के माध्यम से 66 बिन्दुओं की स्थापना कर चार परमार्थ धर्मों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न है। एक सौ (100) दुक मातिकाओं द्वारा पुनः दो सौ (200) दृष्टिकोण उपस्थित किये गये हैं। इस प्रकार अभिधर्म मातिकाओं के माध्यम से चार परमार्थ धर्मों पर प्रकाश डालने के लिए दो सौ छियासठ (266) तथा सुत्तन्त मातिकाओं में 84 विचार बिन्दुओं की स्थापना की गयी है।

(१) चित्तुप्पादकण्ड - धम्मसङ्गणि का प्रथम कण्ड चित्तुप्पादकण्ड है। इस कण्ड में चित्त और उसके सहगत धर्म चैतसिक की कुशल, अकुशल एवं अव्याकृत आदि रूपों में विभाजन कर विश्लेषण किया गया है। चित्त की चार भूमियाँ होती है, यथा- कामावचर-भूमि, रूपावचर-भूमि, अरूपावचर-भूमि एवं लोकोत्तर-भूमि। इनमें कामावचर-भूमि में कुशल चित्त 8, अकुशल 12, कुशल विपाक 16, अकुशल विपाक 7 एवं क्रिया चित्त 11 है। रूपावचर-भूमि में कुशल चित्त 5, विपाक 5 एवं क्रिया चित्त 5 है। अरूपावचर-भूमि में कुशल चित्त 4, विपाक 4 एवं क्रिया चित्त 4 है। लोकोत्तरभूमि में कुशल चित्त 4, कुशल विपाक 4 होते हैं। इस प्रकार चित्तुप्पादकण्ड में 89 चित्तों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्राप्त होता है।

(2) रूपकण्ड- इस काण्ड में 27 प्रकार के रूप धर्मों का विस्तृत उल्लेख प्राप्त होता है। रूपकण्ड मुख्यतः दो भगों मे विभक्त है यथा- मातिकाउद्देसो तथा मातिकानिद्देसो। दोनों प्रकार की मातिकाओं का संग्रह एकविध रूप संग्रह से लेकर एकादशविध रूप संग्रह में हुआ है। इसमें रूप धर्मों का विभिन्न प्रकार से विभाजन करके विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

(3) निक्खेपकण्ड - इस काण्ड में कुशल, अकुशल एवं अव्याकृत के साथ-साथ हेतु, आस्रव, सञ्ञोजन, ग्रन्थ, ओघ, योग, नीवरण, परामास, महन्तर, उपादान, क्लेशगुच्छको में धर्मों को रखकर विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

(4) अत्थुद्धारकण्ड - अत्थुद्धार शब्द का अर्थ है विषयवस्तु का सारांश। जिन विचार बिन्दुओं का विस्तृत वर्णन उपर्युक्त तीन कण्डो में हुआ है यहाँ उन्हीं विषयों का संक्षेप रूप में उल्लेख है।

पालि ग्रन्थमाला का सत्रहवाँ भाग एवं धम्मसङ्गणि के मातिका एवं चित्तुप्पादकण्ड के हिन्दी अनुवाद एवं संस्कृतच्छाया करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस ग्रन्थ के प्रकाशित होने के अवसर पर अपने गुरुजनों, मित्रों एवं स्नेहीजनों के प्रति आभार के शब्द हृदय से निःसृत हो उठते हैं। इस दिशा में मैं सर्वप्रथम कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ विपश्यना विशोधन विन्यास इगतपुरी के प्रति, क्योंकि वहाँ से प्रकाशित पालि संस्करण का मैंने उपयोग किया है। मैं नमन करता हूँ श्रद्धेय गुरुवर प्रो. प्रद्युम्न दुबे जी को जिन्होंने समय-समय पर महत्त्वपूर्ण सुझाव हमें

दिया। इस त्रिपिटक प्रकाशन की योजना के प्रेरणास्रोत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली के सम्माननीय पूर्व कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। वर्तमान कुलपति प्रो. पी. एन. शास्त्री जी का विषय प्रेम तथा कृपा दृष्टि का ही परिणाम है कि इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। मैं उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। लखनऊ परिसर के प्राचार्य प्रो. विजयकुमार जैन जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सत्प्रयत्नों एवं निर्देशन में यह कार्य सम्पन्न हो रहा है। बौद्धदर्शन के प्रो. रामनन्दन सिंह एवं सहायकाचार्य तथा प्रभारी पालि अध्ययन केन्द्र, लखनऊ परिसर, डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अभूतपूर्व सहयोग दे समस्याओं का निराकरण किया। इस ग्रन्थ को त्रुटि रहित कर प्रकाशन योग्य करने में जिन गुरुजनों का योगदान रहा है उनमें, प्रो. उमाशंकर व्यास, प्रो. धर्मचन्द्र जैन, प्रो. संघसेन सिंह, प्रो. रामसागर मिश्र, प्रो. आजाद मिश्र, एवं डॉ. श्रीमती राका जैन आदि प्रमुख हैं। मैं इन सभी गुरुजनों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैं अपने पिता श्री दूधनाथ पाण्डेय एवं माता श्रीमती गीता पाण्डेय के श्रीचरणों में नमन अर्पित करता हूँ, जिनका स्नेह हमें प्राप्त हुआ। हिन्दी प्रूफ संशोधन में सहायता के लिए मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती शैलेश पाण्डेय के प्रति हार्दिक स्नेह व्यक्त करता हूँ। पालि अध्ययन केन्द्र के डॉ. मोहन मिश्र, डॉ. राहुल अमृतराज, डॉ. प्रियंका, डॉ. सोनल सिंह एवं डॉ. जयवन्त खण्डारे आदि मित्रों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने समय-समय पर महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रदान किया। टंकण एवं प्रूफ संशोधन में सहायता के लिए मैं D.E.0. श्री विकास चन्द्र जैन के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

- डॉ. वेद व्यास पाण्डेय

धम्मसङ्गणिपालि

विसयक्कमो

	पिट्ठङ्का
मातिका	१
१. तिकमातिका	१
२. दुकमातिका	८
(क) अभिधम्मे	८
(१) हेतुगोच्छकं	८
(२) चूळन्तरदुकं	९
(३) आसवगोच्छकं	११
(४) सञ्ञोजनगोच्छकं	१२
(५) गन्थगोच्छकं	१३
(६) ओघगोच्छकं	१५
(७) योगगोच्छकं	१६
(८) नीवरणगोच्छकं	१७
(९) परामासगोच्छकं	१९
(१०) महन्तरदुकं	२०
(११) उपादानगोच्छकं	२३
(१२) किलेसगोच्छकं	२४
(१३) पिट्ठिदुकं	२६
(ख) सुत्तन्ते	२९
[पठमत्तिकवित्थारो]	
१. चित्तुप्पाकण्डं	३७
१. कुसला धम्मा	३७
१. कामावचरकुसलं	३७
पठमं चित्तं	३७
दुतियं चित्तं	८०
ततियं चित्तं	८२
चतुत्थं चित्तं	८४
पञ्चमं चित्तं	८५
छट्ठं चित्तं	८९
सत्तमं चित्तं	८९
अट्ठमं चित्तं	९२
(२) रूपावचरकुसलं	९३
१. पठमकसिणं	९३
(१) चतुक्कनयो	९३
(२) पञ्चकनयो	९८
(३) चतस्सो पटिपदा	१०५
(४) चत्तारि आरम्मणानि	१०७
(५) सोळसक्खत्तुकं	१०९
२. अट्ठकसिणं सोळसक्खत्तुकं	११८
३. अभिभायतनानि	११८
(१) परित्तानि	११८
(२) चतस्सो पटिपदा	११९
(३) द्वे आरम्मणानि	१२२
(४) अट्ठक्खत्तुकं	१२३
(५) इदं पि अट्ठक्खत्तुकं	१२८
(६) अप्पमाणानि	१२८
(७) चतस्सो पटिपदा	१२९
(८) द्वे आरम्मणानि	१३०
(९) अपरं पि अट्ठक्खत्तुकं	१३१
(१०) इदं पि अट्ठक्खत्तुकं	१३६
४. तीणि विमोक्खानि सोळसक्खत्तुकानि	१३८
५. चत्तारि ब्रह्मविहारझानानि सोळसक्खत्तुकानि	१३९
६. असुभझानं सोळसक्खत्तुकं	१४३
३. अरूपावचरकुसलं	१४५
चत्तारि अरूपझानानि सोळसक्खत्तुकानि	१४५

४. तेभूमककुसलं १४७
१. कामावचरकुसलं १४७
२. रूपावचरकुसलं १४९
३. अरूपावचरकुसलं १४९
५. लोकुत्तरकुसलं १५४
१. सुद्धिकपटिपदा १५४
२. सुञ्ञतं १७९
३. सुञ्ञतमूलकपटिपदा १८०
४. अप्पणिहितं १८३
५. अप्पणिहितमूलकपटिपदा १८४
६. वीसति महानया १८६
७. अधिपति १८७
२. अकुसला धम्मा १९२
१. लोभचित्तानि १९२
(१) पठमं चित्तं १९२
(२) दुतियं चित्तं २०३
(३) ततियं चित्तं २०३
(४) चतुत्थं चित्तं २०५
(५) पञ्चमं चित्तं २०५
(६) छट्ठं चित्तं २०८
(७) सत्तमं चित्तं २०९
(८) अट्ठमं चित्तं २११
२. दोसचित्तानि २११
(१) पठमं चित्तं २११
(२) दुतियं चित्तं २१५
३. मोहचित्तानि २१५
(१) पठमं चित्तं २१५
(२) दुतियं चित्तं २१८
३. अब्याकता धम्मा २२०
१. विपाका २२०
१. कुसलविपाका अहेतुका २२०
(१) चक्खुविञ्ञाणं २२०
(२-५) सोतविञ्ञाणं-कायविञ्ञाणं २२८
(६) कुसलविपाकमनोधातु २२४
(७) कुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातु २३४
(क. सोमनस्ससहगता)
(८) कुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातु २३७
(ख. उपेक्खासहगता)
२. कुसलविपाका सहेतुका २४२
(१) अट्ठमहाविपाका २४२
(२) रूपावचरविपाका २४३
(३) अरूपावचरविपाका २४४
(४) लोकुत्तरविपाका २४८
(क) सुद्धिकपटिपदा २४८
(ख) सुद्धिकसुञ्ञतं २५२
(ग) सुञ्ञतपटिपदा २५४
(घ) सुद्धिकअप्पणिहितं २५९
(ङ) अप्पणिहितपटिपदा २६१
(च) वीसति महानया २६६
(छ) छन्दाधिपतेय्यसुद्धिकपटिपदा २६७
(ज) छन्दाधिपतेय्यसुद्धिकसुञ्ञता २७२
३. अकुसलविपाका अहेतुका २९१
(१) पञ्चविञ्ञाणानि २९१
(२) अकुसलविपाकमनोधातु २९४
(३) अकुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातु २९६
२. किरिया २९७
१. अहेतुका २९७
(१) किरिया मनोधातु २९७
(२) किरिया मनोविञ्ञाणधातु
सोमनस्ससहगता २९९
(३) किरिया मनोविञ्ञाणधातु
उपेक्खासहगता ३०२
२. सहेतुका ३०४
(१) कामावचरा ३०४
(२) रूपावचरा ३०५
(३) अरूपावचरा ३०६

॥ नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

॥ नमस्तस्मै भगवते अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय॥

धम्मसङ्गणि

मातिका

१. तिकमातिका

१. (क) कुसला धम्मा।

(ख) अकुसला धम्मा।

(ग) अब्याकता धम्मा।

२. (क) सुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) दुक्खाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा।

(ग) अदुक्खमसुखाय वेदनाय सम्पयुत्ता धम्मा।

३. (क) विपाका धम्मा।

(ख) विपाकधम्मधम्मा।

(ग) नेवविपाकनविपाकधम्मधम्मा।

(संस्कृतच्छाया)

१. (क) कुशला: धर्मा:।

(ख) अकुशला: धर्मा:।

(ग) अव्याकृता: धर्मा:।

२. (क) सुखया वेदनया सम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) दु:खया वेदनया सम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ग) अदु:खासुखया वेदनया सम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

३. (क) विपाका: धर्मा:।

(ख) विपाकधर्मधर्मा:।

(ग) नैवविपाकनविपाकधर्मधर्मा:।

(हिन्दी)१.(क) कुशल धर्म।

(ख) अकुशल धर्म।

(ग) अव्याकृत=(जिसका कुशल एवं अकुशल रूप में व्याख्या न की गई) धर्म।

२.(क) वे धर्म, जो सुखात्मक वेदना से सम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो दु:खात्मक वेदना से सम्प्रयुक्त हैं।

(ग) वे धर्म, जो न दु:खात्मक तथा न सुखात्मक वेदना से सम्प्रयुक्त हैं।

३.(क) वे धर्म, जो अकुशल एवं कुशल कर्मों के विपाक के रूप में हैं।

(ख) वे धर्म, जो अकुशल एवं कुशल विपाक को उत्पन्न करने वाले हैं।

(ग) वे धर्म, जो न किसी के स्वयं परिणाम हैं और न परिणाम पैदा करने वाले हैं।

४.(क) उपादिण्णुपादानिया धम्मा।

(ख) अनुपादिण्णुपादानिया धम्मा।

(ग) अनुपादिण्णअनुपादानिया धम्मा।

५.(क) संकिलिट्ठसंकिलेसिका धम्मा।

(ख) असंकिलिट्ठसंकिलेसिका धम्मा।

(ग) असंकिलिट्ठअसंकिलेसिका धम्मा।

६.(क) सवितक्कसविचारा धम्मा।

(ख) अवितक्कविचारमत्ता धम्मा।

(ग) अवितक्कअविचारा धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) ४. (क) उपादत्तोपादानीया: धर्मा:।

(ख) अनुपादत्तोपादानीया: धर्मा:।

(ग) अनुपादत्तानुपादानीया: धर्मा:।

५. (क) संक्लिष्टसंक्लेशिका: धर्मा:।

(ख) असंक्लिष्टसंक्लेशिका: धर्मा:।

(ग) असंक्लिष्टासंक्लेशिका: धर्मा:।

६. (क) सवितर्कसविचारा: धर्मा:।

(ख) अवितर्कविचारमात्रा: धर्मा:।

(ग) अवितर्काविचारा: धर्मा:।

(हिन्दी)४.(क) वे धर्म, जो पूर्व कर्म के परिणामस्वरूप प्राप्त हैं और जो स्वयं भविष्य में ऐसे ही धर्मों को पैदा करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो पूर्व कर्म के परिणामस्वरूप प्राप्त नहीं हैं, किन्तु भविष्य में ऐसे धर्मों को पैदा करने वाले हैं।

(ग) वे धर्म, जो स्वयं न तो पूर्व कर्म के परिणाम-स्वरूप हैं और न तो भविष्य में ऐसे धर्मों को पैदा करने वाले हैं।

५.(क) वे धर्म, जो स्वयं अपवित्र है और अपवित्रता के आलम्बन भी बनते हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं अपवित्र नहीं हैं, किन्तु अपवित्रता के आलम्बन बनते हैं।

(ग) वे धर्म, जो न स्वयं अपवित्र हैं और न अपवित्रता के आलम्बन ही बनते हैं।

६.(क) वे धर्म, जो वितर्क और विचार से युक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो वितर्क से तो नहीं, किन्तु विचार से युक्त हैं।

(ग) वे धर्म, जो न वितर्क और न विचार से युक्त हैं।

७.(क) पीतिसहगता धम्मा।

(ख) सुखसहगता धम्मा।

(ग) उपेक्खासहगता धम्मा।

८.(क) दस्सनेन पहातब्बा धम्मा।

(ख) भावनाय पहातब्बा धम्मा।

(ग) नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बा धम्मा।

९.(क) दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा।

(ख) भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा।

(ग) नेव दस्सनेन न भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) ७. (क) प्रीतिसहगता: धर्मा:।

(ख) सुखसहगता: धर्मा:।

(ग) उपेक्षासहगता: धर्मा:।

८. (क) दर्शनेन प्रहातव्या: धर्मा:।

(ख) भावनया प्रहातव्या: धर्मा:।

(ग) नैव दर्शनेन न भावनया: प्रहातव्या: धर्मा:।

९. (क) दर्शनेन प्रहातव्यहेतुका: धर्मा:।

(ख) भावनया: प्रहातव्यहेतुका: धर्मा:।

(ग) नैव दर्शनेन न भावनया: प्रहातव्यहेतुका: धर्मा:।

(हिन्दी)७.(क) वे धर्म, जो प्रीति की भावना से युक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो सुख की भावना से युक्त हैं।

(ग) वे धर्म, जो उपेक्षा की भावना से युक्त हैं।

८.(क) वे धर्म, जो दर्शन के द्वारा प्रहातव्य धर्म हैं।

(ख) वे धर्म, जो भावना के द्वारा प्रहातव्य धर्म हैं।

(ग) वे धर्म, जो न दर्शन के द्वारा और न भावना के द्वारा प्रहातव्य धर्म हैं।

९.(क) वे धर्म, जिनके हेतु का विनाश दर्शन से किया जा सकता हैं।

(ख) वे धर्म, जिनके हेतु का विनाश भावना से किया जा सकता हैं।

(ग) वे धर्म, जिनके हेतु का विनाश न दर्शन से और न भावना से ही किया जा सकता हैं।

१०. (क) आचयगामिनो धम्मा।

(ख) अपचयगामिनो धम्मा।

(ग) नेवाचयगामिनापचयगामिनो धम्मा।

११.(क) सेक्खा धम्मा।

(ख) असेक्खा धम्मा।

(ग) नेवसेक्खनासेक्खा धम्मा।

१२.(क) परित्ता धम्मा।

(ख) महग्गता धम्मा।

(ग) अप्पमाणा धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) १०.(क) आचयगामिनो धर्मा:।

(ख) अपचयगामिनो धर्मा:।

(ग) नैव आचयगामिनो नापचयगामिनो धर्मा:।

११. (क) शैक्ष्या: धर्मा:।

(ख) अशैक्ष्या: धर्मा:।

(ग) नैवशैक्ष्यानाशैक्ष्या: धर्मा:।

१२. (क) परीत्ता: धर्मा:।

(ख) महद्गता: धर्मा:।

(ग) अप्रमाणा: धर्मा:।

(हिन्दी)१०.(क) वे धर्म, जो कर्म-संचय के कारण बनते हैं।

(ख) वे धर्म, जो कर्म-संचय के विनाश के कारण बनते हैं।

(ग) वे धर्म, जो न कर्म-संचय और न उसके विनाश के कारण बनते हैं।

११. (क) वे धर्म, जो शैक्ष्य सम्बन्धी हैं।

(ख) वे धर्म, जो अशैक्ष्य सम्बन्धी हैं।

(ग) वे धर्म, जो उपर्युक्त दोनों प्रकार से भिन्न हैं।

१२. (क) वे धर्म, जो अल्प महत्त्व वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो प्रचुर महत्त्व वाले हैं।

(ग) वे धर्म, जो अपरिमेय आकार वाले हैं।

१३. (क) परित्तारम्मणा धम्मा।

(ख) महग्गतारम्मणा धम्मा।

(ग) अप्पमाणारम्मणा धम्मा।

१४. (क) हीना धम्मा।

(ख) मज्झिमा धम्मा।

(ग) पणीता धम्मा।

१५. (क) मिच्छत्तनियता धम्मा।

(ख) सम्मत्तनियता धम्मा।

(ग) अनियता धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)१३. (क) परीत्तालम्बना: धर्मा:।

(ख) महद्वृतालम्बना: धर्मा:।

(ग) अप्रमाणालम्बना: धर्मा:।

१४.(क) हीना: धर्मा:।

(ख) मध्यमा: धर्मा:।

(ग) प्रणीता: धर्मा:।

१५.(क) मिथ्यात्वनियता: धर्मा:।

(ख) सम्यक्तनियता: धर्मा:।

(ग) अनियता: धर्मा:।

(हिन्दी)१३.(क) वे धर्म, जिनका आलम्बन अल्प महत्त्व वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जिनका आलम्बन महान महत्त्व वाले हैं।

(ग) वे धर्म, जिनका आलम्बन अपरिमेय वाले हैं।

१४.(क) वे धर्म, जिनकी श्रेणी हीन हैं।

(ख) वे धर्म, जिनकी श्रेणी मध्यम हैं।

(ग) वे धर्म, जिनकी श्रेणी उत्तम हैं।

१५.(क) वे धर्म, जो निश्चयपूर्वक मिथ्या हैं।

(ख) वे धर्म, जो निश्चयपूर्वक यथार्थ हैं ।

(ग) वे धर्म, जिनका स्वरूप अनिश्चित प्रकृति वाले हैं।

१६.(क) मग्गारम्मणा धम्मा।

(ख) मग्गहेतुका धम्मा।

(ग) मग्गाधिपतिनो धम्मा।

१७.(क) उप्पन्ना धम्मा।

(ख) अनुप्पन्ना धम्मा।

(ग) उप्पादिनो धम्मा।

१८.(क) अतीता धम्मा।

(ख) अनागता धम्मा।

(ग) पच्चुप्पन्ना धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)१६. (क) मार्गालम्बना: धर्मा:।

(ख) मार्गहेतुका: धर्मा:।

(ग) मार्गाधिपतिनो धर्मा:।

१७. (क) उत्पन्ना: धर्मा:।

(ख) अनुत्पन्ना: धर्मा:।

(ग) उत्पादिनो धर्मा:।

१८. (क) अतीता: धर्मा:।

(ख) अनागता: धर्मा:।

(ग) प्रत्युत्पन्ना: धर्मा:।

(हिन्दी)१६.(क) वे धर्म, जिनका आलम्बन मार्ग हैं।

(ख) वे धर्म, जिनका हेतु मार्ग हैं।

(ग) वे धर्म, जिनका अधिपति मार्ग हैं।

१७. (क) वे धर्म, जो उत्पन्न हो चुके हैं।

(ख) वे धर्म, जो अभी उत्पन्न नहीं हैं।

(ग) वे धर्म, जो भविष्य में उत्पन्न होने वाले हैं।

१८. (क) वे धर्म, जो बीत गईं हैं।

(ख) वे धर्म, जो भविष्य में पैदा होने वाले हैं।

(ग) वे धर्म, जो अभी हाल में उत्पन्न हुई हैं और अभी विद्यमान हैं।

१९. (क) अतीतारम्मणा धम्मा।

(ख) अनागतारम्मणा धम्मा।

(ग) पच्चुप्पन्नारम्मणा धम्मा।

२०. (क) अज्झत्ता धम्मा।

(ख) बहिद्धा धम्मा।

(ग) अज्झत्तबहिद्धा धम्मा।

२१. (क) अज्झत्तारम्मणा धम्मा।

(ख) बहिद्धारम्मणा धम्मा।

(ग) अज्झत्तबहिद्धारम्मणा धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)१९. (क) अतीतालम्बना: धर्मा:।

(ख) अनागतालम्बना: धर्मा:।

(ग) प्रत्युत्पन्नालम्बना: धर्मा:।

२०.(क) अध्यात्मा: धर्मा:।

(ख) बहिर्धा: धर्मा:।

(ग) अध्यात्मबहिर्धा: धर्मा:।

२१.(क) अध्यात्मालम्बना: धर्मा:।

(ख) बहिर्धालम्बना: धर्मा:।

(ग) अध्यात्मबहिर्द्धालम्बना: धर्मा:।

(हिन्दी१९. (क) वे धर्म, जिनका आलम्बन कोई अतीत की वस्तु हैं।

(ख) वे धर्म, जिनका आलम्बन कोई भविष्य की वस्तु हैं।

(ग) वे धर्म, जिनका आलम्बन कोई वर्तमान की वस्तु हैं।

२०. (क) वे धर्म, जो आन्तरिक रूप से स्थित हैं।

(ख) वे धर्म, जो बाह्य रूप से स्थित हैं।

(ग) वे धर्म, जो आन्तरिक एवं बाह्य दोनों जगह स्थित हैं।

२१. (क) वे धर्म, जिनका आलम्बन कोई आन्तरिक वस्तु हैं।

(ख) वे धर्म, जिनका आलम्बन कोई बाहरी वस्तु हैं।

(ग) वे धर्म, जिनका आलम्बन आन्तरिक एवं बाहरी वस्तु दोनों हैं।

२२. (क) सनिदस्सनसप्पटिघा धम्मा।

(ख) अनिदस्सनसप्पटिघा धम्मा।

(ग) अनिदस्सनअप्पटिघा धम्मा।

२. दुकमातिका

(१) हेतुगोच्छकं

१. (क) हेतू धम्मा। (ख) न हेतू धम्मा।

२. (क) सहेतुका धम्मा।

(ख) अहेतुका धम्मा।

३. (क) हेतुसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) हेतुविप्पयुत्ता धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)२२. (क) सनिदर्शनसप्रतिघा: धर्मा:।

(ख) अनिदर्शनसप्रतिघा: धर्मा:।

(ग) अनिदर्शनाप्रतिघा: धर्मा:।

१. (क) हेतवो धर्मा:।

(ख) न हेतवो धर्मा:।

२. (क) सहेतुका: धर्मा:।

(ख) अहेतुका: धर्मा:।

३. (क) हेतुसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) हेतुविप्रयुक्ता: धर्मा:।

(हिन्दी)२२. (क) वे धर्म, जो दृश्य है और इन्द्रिय एवं उसके विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न होने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो दृश्य तो नहीं, किन्तु इन्द्रिय एवं उसके विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न होने वाले हैं।

(ग) वे धर्म, जो न तो दृश्य हैं और न इन्द्रिय और उसके विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न होने वाले हैं।

१. (क) वे धर्म, जो हेतु=(मूल कारण) हैं। (ख) वे धर्म, जो हेतु नहीं हैं।

२. (क) वे धर्म, हेतुओं से युक्त हैं।

(ख) वे धर्म, हेतुओं से युक्त नहीं हैं।

३. (क) वे धर्म, जो हेतुसम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म जो हेतुविप्रयुक्त हैं।

४. (क) हेतू चेव धम्मा सहेतुका च।

(ख) सहेतुका चेव धम्मा न च हेतू।

५. (क) हेतू चेव धम्मा हेतुसम्पयुत्ता च।

(ख) हेतुसम्पयुत्ता चेव धम्मा न च हेतू।

६. (क) न हेतू खो पन धम्मा सहेतुकापि।

(ख) अहेतुकापि।

(२) चूळन्तरदुकं

७. (क) सप्पच्चया धम्मा।

(ख) अप्पच्चया धम्मा।

८.(क) सङ्खता धम्मा।

(ख) असङ्खता धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)४. (क) हेतवश्चैव धर्मा: सहेतुकाश्च।

(ख) सहेतुकाश्चैव धर्मा: न च हेतव:।

५. (क) हेतवश्चैव धर्मा: हेतुसम्प्रयुक्ताश्च।

(ख) हेतुसम्प्रयुक्ताश्च चैव धर्मा: न च हेतव:।

६. (क) न हेतव: खलु पुन: धर्मा: सहेतुका अपि।

(ख) अहेतुका अपि।

७. (क) सप्रत्यया: धर्मा:।

(ख) अप्रत्यया: धर्मा:।

८. (क) संस्कृता: धर्मा:।

(ख) असंस्कृता: धर्मा:।

(हिन्दी)४.(क) वे धर्म, जो स्वयं हेतु हैं और हेतुओं से युक्त भी हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं हेतु नहीं हैं, किन्तु हेतुओं से युक्त हैं।

५.(क) वे धर्म, जो स्वयं हेतु हैं और हेतुओं से संप्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं हेतु नहीं हैं, किन्तु हेतुओं से संप्रयुक्त हैं।

६.(क) वे धर्म, जो स्वयं हेतु नहीं हैं, किन्तु जो हेतुओं से युक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो न स्वयं हेतु हैं और न हेतुओं से युक्त हैं।

७.(क) वे धर्म, जो प्रत्यय से युक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो प्रत्यय से युक्त नहीं हैं।

८.(क) वे धर्म, जो संस्कृत हैं। (ख) वे धर्म, जो असंस्कृत हैं।

९. (क) सनिदस्सना धम्मा।
(ख) अनिदस्सना धम्मा।
१०. (क) सप्पटिघा धम्मा।
(ख) अप्पटिघा धम्मा।
११. (क) रूपिनो धम्मा।
(ख) अरूपिनो धम्मा।
१२. (क) लोकिया धम्मा ।
(ख) लोकुत्तरा धम्मा।
१३. (क) केनचि विञ्ञेय्या धम्मा।
(ख) केनचि न विञ्ञेय्या धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) ९. (क) सनिदर्शना: धर्मा:।
(ख) अनिदर्शना: धर्मा:।
१०. (क) सप्रतिघा: धर्मा:।
(ख) अप्रतिघा: धर्मा:।
११. (क) रूपिणो धर्मा:।
(ख) अरूपिणो धर्मा:।
१२. (क) लौकिका: धर्मा:।
(ख) लोकोत्तरा: धर्मा:।
१३. (क) केनचित् विज्ञेया: धर्मा:।
(ख) केनचिद् न विज्ञेया: धर्मा:।

(हिन्दी)९. (क) वे धर्म, जो दृश्य हैं।
(ख) वे धर्म, जो अदृश्य हैं।
१०. (क) वे धर्म, जो इन्द्रिय और विषय के संनिकर्ष से युक्त हैं।
(ख) वे धर्म, जो इन्द्रिय और विषय के संनिकर्ष से वियुक्त हैं।
११. (क) वे धर्म, जो रूप-युक्त हैं।
(ख) वे धर्म, जो रूप-युक्त नहीं हैं।
१२. (क) वे धर्म, जो लौकिक हैं।
(ख) वे धर्म, जो लोकोत्तर हैं।
१३. (क) वे धर्म, जो किसी के द्वारा विज्ञेय हैं।
(ख) वे धर्म, जो किसी के द्वारा विज्ञेय नहीं हैं।

(३) आसवगोच्छकं

१४. (क) आसवा धम्मा।

(ख) नो आसवा धम्मा।

१५. (क) सासवा धम्मा।

(ख) अनासवा धम्मा।

१६. (क) आसवसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) आसवविप्पयुत्ता धम्मा।

१७. (क) आसवा चेव धम्मा सासवा च।

(ख) सासवा चेव धम्मा नो च आसवा।

१८. (क) आसवा चेव धम्मा आसवसम्पयुत्ता च।

(ख) आसवसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च आसवा।

(संस्कृतच्छाया)१४. (क) आस्रवा: धर्मा:। (ख) नो आस्रवा: धर्मा:।

१५. (क) सास्रवा: धर्मा:।

(ख) अनास्रवा: धर्मा:।

१६. (क) आस्रवसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) आस्रवविप्रयुक्ता: धर्मा:।

१७. (क) आस्रवाश्चैव धर्मा: सास्रवाश्च।

(ख) सास्रवाश्चैव धर्मा: नो च आस्रवा:।

१८. (क) आस्रवाश्चैव धर्मा: आस्रवसम्प्रयुक्ताश्च।

(ख) आस्रवसम्प्रयुक्ताश्चैव धर्मा: नो च आस्रवा:।

(हिन्दी)१४. (क) वे धर्म, जो आस्रव हैं।

(ख) वे धर्म, जो आस्रव नहीं हैं।

१५. (क) वे धर्म, जो आस्रव से युक्त हैं।

(ख) जो धर्म, जो आस्रवों से रहित हैं।

१६. (क) वे धर्म, जो आस्रवों से सम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जिनसे चित्त-मल संलग्न नहीं हैं।

१७. (क) वे धर्म, जो स्वयं चित्त-मल हैं और चित्त-मलों से युक्त भी हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं चित्त-मल नहीं हैं किन्तु चित्त-मलों से युक्त हैं।

१८. (क) वे धर्म, जो स्वयं चित्त-मल हैं और चित्त-मलों से संप्रयुक्त भी हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं चित्त-मल नहीं हैं किन्तु चित्त-मलों से संप्रयुक्त हैं।

१९. (क) आसवविप्पयुत्ता खो पन धम्मा सासवापि।

(ख) अनासवापि।

(४) संयोजनगोच्छकं

२०. (क) संयोजना धम्मा। (ख) नो संयोजना धम्मा।

२१. (क) संयोजनिया धम्मा।

(ख) असंयोजनिया धम्मा।

२२. (क) संयोजनसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) संयोजनविप्पयुत्ता धम्मा।

२३. (क) संयोजना चेव धम्मा संयोजनिया च।

(ख) संयोजनिया चेव धम्मा नो च संयोजना।

(संस्कृतच्छाया) १९. (क) आस्रवविप्रयुक्ता: खलु पुन: धर्मा: सास्रवा अपि।

(ख) अनास्रवा अपि।

२०. (क) संयोजना: धर्मा:।

(ख) नो संयोजना: धर्मा:।

२१. (क) संयोजनीया: धर्मा:।

(ख) असंयोजनीया: धर्मा:।

२२. (क) संयोजनसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) संयोजनविप्रयुक्ता: धर्मा:।

२३. (क) संयोजनाश्चैव धर्मा: संयोजनीयाश्च।

(ख) संयोजनीयाश्चैव धर्मा: नो च संयोजना:।

(हिन्दी)१९. (क) वे धर्म, जो स्वयं चित्त-मल से संलग्न नहीं हैं किन्तु सास्रव हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं चित्त-मल से संलग्न हैं और उनके आधार भी नहीं हैं।

२०. (क) वे धर्म, जो चित्त के संयोजन हैं।

(ख) वे धर्म, जो चित्त के संयोजन नहीं हैं।

२१. (क) वे धर्म, जो संयोजन की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो संयोजन की ओर ले जाने वाले नहीं हैं।

२२. (क) वे धर्म, जिनसे संयोजन सम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जिनसे संयोजन विप्रयुक्त हैं।

२३. (क) वे धर्म, जो स्वयं संयोजन है और संयोजन की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं संयोजन नहीं है, किन्तु संयोजन की ओर ले जाने वाले हैं।

२४.(क) संयोजना चेव धम्मा संयोजनसम्पयुत्ता च।

(ख) संयोजनसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च संयोजना।

२५.(क) संयोजनविप्पयुत्ता खो पन धम्मा संयोजनियापि।

(ख) असंयोजनियापि।

(५) गन्थगोच्छकं

२६.(क) गन्था धम्मा।

(ख) नो गन्था धम्मा।

२७.(क) गन्थनिया धम्मा।

(ख) अगन्थनिया धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)२४.(क) संयोजनाश्चैव धर्मा: संयोजनसम्प्रयुक्ताश्च।

(ख) संयोजनसम्प्रयुक्ताश्चैव धर्मा: नो च संयोजना:।

२५.(क) संयोजनविप्रयुक्ता: खलु पुन: धर्मा: संयोजनीया अपि।

(ख) असंयोजनीया अपि।

२६.(क) ग्रन्था: धर्मा:।

(ख) नो ग्रन्था: धर्मा:।

२७.(क) ग्रन्थनीया: धर्मा:।

(ख) अग्रन्थनीया: धर्मा:।

(हिन्दी)२४. (क) वे धर्म, जो स्वयं संयोजन हैं और संयोजन से सम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं संयोजन नहीं हैं, किन्तु संयोजन से सम्प्रयुक्त हैं।

२५. (क) वे धर्म, जिनसे संयोजन संलग्न तो नहीं हैं, किन्तु संयोजन की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जिनसे न तो संयोजन संलग्न ही हैं और न संयोजन की ओर ले जाने वाले हैं।

२६. (क) वे धर्म, जो चित्त की गाँठें हैं।

(ख) वे धर्म, जो चित्त की गाँठें नहीं हैं।

२७. (क) वे धर्म, जो चित्त की गाँठ की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो चित्त की गाँठ की ओर नहीं ले जाने वाले हैं।

२८. (क) गन्थसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) गन्थविप्पयुत्ता धम्मा।

२९. (क) गन्था चेव धम्मा गन्थनिया च।

(ख) गन्थनिया चेव धम्मा नो च गन्था।

३०. (क) गन्था चेव धम्मा गन्थसम्पयुत्ता च।

(ख) गन्थसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च गन्था।

३१. (क) गन्थविप्पयुत्ता खो पन धम्मा गन्थनियापि।

(ख) अगन्थनियापि।

(संस्कृतच्छाया) २८. (क) ग्रन्थसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) ग्रन्थविप्रयुक्ता: धर्मा:।

२९. (क) ग्रन्थाश्चैव धर्मा: ग्रन्थनीयाश्च ।

(ख) ग्रन्थनीयाश्चैव धर्मा: नो च ग्रन्था:।

३०. (क) ग्रन्थाश्चैव धर्मा: ग्रन्थसम्प्रयुक्ताश्च।

(ख) ग्रन्थसम्प्रयुक्ताश्चैव धर्मा: नो च ग्रन्था:।

३१. (क) ग्रन्थविप्रयुक्ता: खलु पुन: धर्मा: ग्रन्थनीया अपि।

(ख) अग्रन्थनीया अपि।

(हिन्दी)२८. (क)) वे धर्म, जो चित्त की गाँठों से संप्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो चित्त की गाँठों से संप्रयुक्त नहीं हैं।

२९. (क) वे धर्म, जो स्वयं चित्त की गाँठें हैं और चित्त की गाँठ की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं चित्त की गाँठें नहीं हैं, किन्तु चित्त की गाँठ की ओर ले जाने वाले हैं।

३०. (क) वे धर्म, जो स्वयं चित्त की गाँठें हैं और चित्त की गाँठ के सहचर भी हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं चित्त की गाँठें नहीं हैं, किन्तु चित्त की गाँठ के सहचर हैं।

३१. (क) वे धर्म, जो स्वयं चित्त की गाँठों के सहचर नहीं हैं, किन्तु उनकी ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं चित्त की गाँठों के सहचर भी नहीं हैं और उन्हें उत्पन्न करने वाले भी नहीं हैं।

(६) ओघगोच्छकं

३२. (क) ओघा धम्मा।

(ख) नो ओघा धम्मा।

३३. (क) ओघनिया धम्मा।

(ख) अनोघनिया धम्मा।

३४. (क) ओघसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) ओघविप्पयुत्ता धम्मा।

३५. (क) ओघा चेव धम्मा ओघनिया च।

(ख) ओघनिया चेव धम्मा नो च ओघा।

३६. (क) ओघा चेव धम्मा ओघसम्पयुत्ता च।

(ख) ओघसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च ओघा।

(संस्कृतच्छाया) ३२.(क) ओघा: धर्मा: ।

(ख) नो ओघा: धर्मा: ।

३३.(क) ओघनीया: धर्मा: ।

(ख) अनोघनीया: धर्मा: ।

३४.(क) ओघसम्प्रयुक्ता: धर्मा: ।

(ख) ओघविप्रयुक्ता: धर्मा: ।

३५. (क) ओघाश्चैव धर्मा: ओघनियाश्च।

(ख) ओघनीयाश्चैव धर्मा: नो च ओघा:।

३६. (क) ओघाश्चैव धर्मा: ओघसम्प्रयुक्ताश्च।

(ख) ओघसम्प्रयुक्ताश्चैव धर्मा: नो च ओघा:।

(हिन्दी)३२. (क) वे धर्म, जो ओघ=(सांसारिक बाढ़) हैं।

(ख) वे धर्म, जो ओघ नहीं हैं।

३३. (क) वे धर्म, जो ओघ की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो ओघ की ओर नहीं ले जाने वाले हैं।

३४. (क) वे धर्म, जो ओघ के सहचर हैं।

(ख) वे धर्म, जो ओघ के सहचर नहीं है।

३५. (क) वे धर्म, जो स्वयं ओघ हैं और ओघ की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं ओघ नहीं हैं किन्तु ओघ की ओर ले जाने वाले हैं।

३६. (क) वे धर्म, जो स्वयं ओघ हैं और ओध के सहचर भी हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं ओघ नहीं है, किन्तु ओघ के सहचर हैं।

३७.(क) ओघविप्पयुत्ता खो पन धम्मा ओघनियापि।

(ख) अनोघनियापि।

(७) योगगोच्छकं

३८. (क) योगा धम्मा।

(ख) नो योगा धम्मा।

३९. (क) योगनिया धम्मा।

(ख) अयोगनिया धम्मा।

४०. (क) योगसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) योगविप्पयुत्ता धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)३७. (क) ओघविप्रयुक्ता: खलु पुन: धर्मा: ओघनीया अपि।

(ख) अनोघनीया अपि।

३८. (क) योगा: धर्मा:।

(ख) नो योगा: धर्मा:।

३९. (क) योगनीया: धर्मा:।

(ख) अयोगनीया: धर्मा:।

४०. (क) योगसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) योगविप्रयुक्ता: धर्मा:।

(हिन्दी)३७. (क) वे धर्म, जो स्वयं ओघ के सहचर नहीं हैं,किन्तु ओघ के विषयी भूत होने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं ओघ के सहचर भी नहीं है और उन्हें उत्पन्न करने वाले भी नहीं हैं।

३८. (क) वे धर्म, जो योग (सांसारिक आसक्ति) हैं।

(ख) वे धर्म, जो योग नहीं हैं।

३९. (क) वे धर्म, जो योग की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो योग की ओर नहीं ले जाने वाले हैं।

४०. (क) वे धर्म, जो योग के सहचर हैं।

(ख) वे धर्म, जो योग के सहचर नहीं हैं।

४१. (क) योगा चेव धम्मा योगनिया च।

(ख) योगनिया चेव धम्मा नो च योगा।

४२. (क) योगा चेव धम्मा योगसम्पयुत्ता च।

(ख) योगसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च योगा।

४३. (क) योगविप्पयुत्ता खो पन धम्मा योगनियापि।

(ख) अयोगनियापि।

(८)नीवरणगोच्छकं

४४. (क) नीवरणा धम्मा।

(ख) नो नीवरणा धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) ४१. (क) योगाश्चैव धर्मा: योगनीयाश्च।

(ख) योगनीयाश्चैव धर्मा: नो च योगा:।

४२. (क) योगाश्चैव धर्मा: योगसम्प्रयुक्ताश्च।

(ख) योगसम्प्रयुक्ताश्चैव धर्मा नो च योगा:।

४३. (क) योगविप्रयुक्ता: खलु पुन: धर्मा: योगनीया अपि।

(ख) अयोगनीया अपि।

४४. (क) नीवरणा: धर्मा:।

(ख) नो नीवरणा: धर्मा:।

(हिन्दी) ४१. (क) वे धर्म. जो स्वयं योग है और योग की ओर ले जाने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं योग नहीं है किन्तु योग की ओर ले जाने वाले हैं।

४२.(क) वे धर्म, जो स्वयं योग है और योग के सहचर भी हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं योग नहीं है किन्तु योग के सहचर हैं।

४३.(क) वे धर्म, जो स्वयं योग के सहचर नहीं है किन्तु उन्हें उत्पन्न करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं योग के सहचर भी नहीं है और उन्हें उत्पन्न करने वाले भी नहीं हैं।

४४. (क) वे धर्म, जो नीवण हैं।

(ख) वे धर्म, जो नीवरण नहीं हैं।

४५. (क) नीवरणिया धम्मा।

(ख) अनीवरणिया धम्मा।

४६. (क) नीवरणसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) नीवरणविप्पयुत्ता धम्मा।

४७. (क) नीवरणा चेव धम्मा नीवरणिया च।

(ख) नीवरणिया चेव धम्मा नो च नीवरणा।

४८. (क) नीवरणा चेव धम्मा नीवरणसम्पयुत्ता च।

(ख) नीवरणसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च नीवरणा।

४९. (क) नीवरणविप्पयुत्ता खो पन धम्मा नीवरणियापि।

(ख) अनीवरणियापि ।

(संस्कृतच्छाया) ४५. (क) नीवरणीया: धर्मा:।

(ख) अनीवरणीया: धर्मा:।

४६. (क) नीवरणसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) नीवरणविप्रयुक्ता: धर्मा:।

४७. (क) नीवरणाश्चैव धर्मा: नीवरणीयाश्च।

(ख) नीवरणीयाश्चैव धर्मा: नो च नीवरणा:।

४८. (क) नीवरणाश्चैव धर्मा: नीवरणसम्प्रयुक्ताश्च।

(ख) नीवरणसम्प्रयुक्ताश्चैव धर्मा: नो च नीवरणा:।

४९. (क) नीवरणविप्रयुक्ता: खलु पुन: धर्मा: नीवरणीया अपि।

(ख) अनीवरणीया अपि ।

(हिन्दी)४५. (क) वे धर्म, जो नीवरणों से प्रभावित होने योग्य हैं।

(ख) वे धर्म, जो नीवरणों से प्रभावित होने योग्य नहीं हैं।

४६. (क) वे धर्म, जो निवरणों से सम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो निवरणों से विप्रयुक्त हैं।

४७. (क) वे धर्म, जो स्वंय निवरण हैं और निवरणों से प्रभावित होने योग्य हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं निवरण नहीं हैं किन्तु निवरणों से प्रभावित होने योग्य हैं।

४८. (क) वे धर्म, जो स्वयं निवरण हैं और निवरण के सहचर भी हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं निवरण नहीं हैं किन्तु निवरण के सहचर हैं।

४९. (क) वे धर्म, जो स्वयं निवरण के सहचर नहीं हैं, किन्तु उन्हें उत्पन्न करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं निवरण के सहचर भी नहीं हैं और उनके विषय बनने योग्य भी नहीं हैं।

(९)परामासगोच्छकं

५०. (क) परामासा धम्मा।

(ख) नो परामासा धम्मा।

५१. (क) परामट्ठा धम्मा।

(ख) अपरामट्ठा धम्मा।

५२. (क) परामाससम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) परामासविप्पयुत्ता धम्मा।

५३. (क) परामासा चेव धम्मा परामट्ठा च।

(ख) परामट्ठा चेव धम्मा नो च परामासा।

५४. (क) परामासविप्पयुत्ता खो पन धम्मा परामट्ठापि।

(ख) अपरामट्ठापि।

(संस्कृतच्छाया) ५०. (क) परामर्शा: धर्मा:। (ख) नो परामर्शा: धर्मा: ।

५१. (क) परामृष्टा: धर्मा:।

(ख) अपरामृष्टा: धर्मा:।

५२. (क) परामर्शसम्प्रयुक्ता: धर्मा: ।

(ख) परामर्शविप्रयुक्ता: धर्मा: ।

५३. (क) परामर्शाश्चैव धर्मा: परामृष्टाश्च ।

(ख) परामृष्टाश्चैव धर्मा: नो च परामर्शा:।

५४.(क) परामर्शविप्रयुक्ता: खलु पुन: धर्मा: परामृष्टा अपि।

(ख) अपरामृष्टा अपि।

(हिन्दी)५०.(क) वे धर्म, जो मिथ्या धारणायें हैं।

(ख) वे धर्म, जो मिथ्या धारणायें नहीं हैं।

५१. (क) वे धर्म, जो मिथ्या धारणाओं से उत्पन्न होने वाली हैं।

(ख) वे धर्म, जो मिथ्या धारणाओं से उत्पन्न होने वाली नहीं हैं।

५२. (क) वे धर्म, जो मिथ्या धारणाओं से सम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो मिथ्या धारणाओं से विप्रयुक्त हैं।

५३. (क) वे धर्म, जो स्वयं मिथ्या धारणायें हैं और मिथ्या धारणाओं को पैदा करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं मिथ्या धारणायें हैं किन्तु मिथ्या धारणाओं को पैदा करने वाले नहीं हैं।

५४. (क) वे धर्म, जो स्वयं मिथ्या धारणाओं से विमुक्त हैं किन्तु उन्हें पैदा करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं मिथ्या धारणाओं से विमुक्त हैं और उन्हें पैदा करने वाले भी नहीं हैं।

(१०) महन्तरदुकं

५५. (क) सारम्मणा धम्मा।

(ख) अनारम्मणा धम्मा।

५६. (क) चित्ता धम्मा।

(ख) नो चित्ता धम्मा।

५७. (क) चेतसिका धम्मा।

(ख) अचेतसिका धम्मा।

५८. (क) चित्तसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) चित्तविप्पयुत्ता धम्मा।

५९. (क) चित्तसंसट्ठा धम्मा।

(ख) चित्तविसंसट्ठा धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) ५५.(क) सालम्बना: धर्मा:। (ख) अनालम्बना: धर्मा:।

५६.(क) चित्ता: धर्मा:।

(ख) नो चित्ता: धर्मा:।

५७.(क) चैतसिका: धर्मा:।

(ख) अचैतसिका: धर्मा:।

५८.(क) चित्तसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) चित्तविप्रयुक्ता: धर्मा:।

५९.(क) चित्तसंसृष्टा: धर्मा:।

(ख) चित्तविसंसृष्टा: धर्मा:।

(हिन्दी)५५. (क) वे धर्म, जो किसी आलम्बन का सहारा लेकर पैदा होते हैं।

(ख) वे धर्म, जो किसी आलम्बन का सहारा लेकर पैदा होते नहीं हैं।

५६. (क) वे धर्म, जो चित्त-स्वरूप हैं।

(ख) वे धर्म, जो चित्त-स्वरूप नहीं हैं।

५७. (क) वे धर्म, जो चित्त की सहगत अवस्थाएँ हैं।

(ख) वे धर्म, जो चित्त की सहगत अवस्थाएँ नहीं हैं।

५८. (क) वे धर्म, जो चित्त सम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो चित्त विप्रयुक्त हैं।

५९. (क) वे धर्म, जो चित्तसंसृष्ट(चित्त से संबद्ध) हैं।

(ख) वे धर्म, चित्तविसंसृष्ट (चित्त से संबद्ध नहीं) हैं।

६०. (क) चित्तसमुट्ठाना धम्मा।

(ख) नो चित्तसमुट्ठाना धम्मा।

६१. (क) चित्तसहभुनो धम्मा।

(ख) नो चित्तसहभुनो धम्मा।

६२. (क) चित्तानुपरिवत्तिनो धम्मा।

(ख) नो चित्तानुपरिवत्तिनो धम्मा।

६३. (क) चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना धम्मा।

(ख) नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठाना धम्मा।

६४. (क) चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो धम्मा।

(ख) नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानसहभुनो धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)६०.(क) चित्तसमुत्थाना: धर्मा:।

(ख) नो चित्तसमुत्थाना: धर्मा:।

६१.(क) चित्तसहभुव: धर्मा:।

(ख) नो चित्तसहभुव: धर्मा:।

६२.(क) चित्तानुपरिवर्तिनो धर्मा:।

(ख) नो चित्तानुपरिवर्तिनो धर्मा:।

६३.(क) चित्तसंसृष्ठसमुत्थाना: धर्मा:।

(ख) नो चित्तसंसृष्ठसमुत्थाना: धर्मा:।

६४.(क) चित्तसंसृष्ठसमुत्थानासहभुवो धर्मा:।

(ख) नो चित्तसंसृष्ठसमुत्थानासहभुवो धर्मा:।

(हिन्दी)६०. (क) वे धर्म, जो चेतना के द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं।

(ख) वे धर्म, जो चेतना के द्वारा उत्पन्न नहीं किये जाते हैं।

६१. (क) वे धर्म, जो चेतना के साथ उत्पन्न होते हैं।

(ख) वे धर्म, जो चेतना के साथ उत्पन्न नहीं होते हैं।

६२. (क) वे धर्म, जो चेतना के साथ परिवर्तित हो जाते हैं।

(ख) वे धर्म, जो चेतना के साथ परिवर्तित नहीं होते हैं।

६३. (क) वे धर्म, जो चेतना से संयुक्त हैं और उसी के द्वारा पैदा भी होने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो चेतना से न संयुक्त हैं और न उसी के द्वारा पैदा होने वाले हैं।

६४. (क) वे धर्म, जो चेतना से युक्त हैं, उससे पैदा होने वाले हैं और उसके साथ रहने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो चेतना से न युक्त हैं, न उससे पैदा होने वाले हैं और न उसके साथ रहने वाले हैं।

६५.(क) चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो धम्मा।

(ख) नो चित्तसंसट्ठसमुट्ठानानुपरिवत्तिनो धम्मा।

६६. (क) अज्झत्तिका धम्मा।

(ख) बाहिरा धम्मा।

६७. (क) उपादा धम्मा।

(ख) नो उपादा धम्मा।

६८. (क) उपादिण्णा [उपादिन्ना (सी॰ स्या॰)] धम्मा।

(ख) अनुपादिण्णा धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)६५. (क) चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिनो धर्माः।

(ख) नो चित्तसंसृष्टसमुत्थानानुपरिवर्तिनो धर्माः।

६६. (क) आध्यात्मिकाः धर्माः।

(ख) बाह्याः धर्माः।

६७. (क) उपादाः धर्माः।

(ख) नो उपादाः धर्माः।

६८. (क) उपादत्ताः धर्माः।

(ख) अनुपादत्ताः धर्माः।

(हिन्दी)६५.(क) वे धर्म, जो चेतना से युक्त हैं, उससे पैदा होने वाले हैं और उसके परिवर्तन के साथ परिवर्तित हो जाते हैं।

(ख) वे धर्म, जो चेतना से न युक्त हैं, न उससे पैदा होने वाले हैं और उसके परिवर्तन के साथ न परिवर्तित हो जाते हैं।

६६. (क) वे धर्म, जो आन्तरिक हैं।

(ख) वे धर्म, जो बाह्य हैं।

६७. (क) वे धर्म, जो पूर्व-कर्मों के परिणामस्वरूप उत्पन्न हैं।

(ख) वे धर्म, जो पूर्व-कर्मों के परिणामस्वरूप उत्पन्न नहीं हैं।

६८. (क) वे धर्म, जो पूर्व-कर्मों के परिणामस्वरूप उत्पन्न हैं।

(ख) वे धर्म, जो पूर्व-कर्मों के परिणामस्वरूप उत्पन्न नहीं हैं।

(११) उपादानगोच्छकं

६९. (क) उपादाना धम्मा।

(ख) नो उपादाना धम्मा।

७०. (क) उपादानिया धम्मा।

(ख) अनुपादानिया धम्मा।

७१. (क) उपादानसम्पयुत्ता धम्मा।

(ख) उपादानविप्पयुत्ता धम्मा।

७२. (क) उपादाना चेव धम्मा उपादानिया च।

(ख) उपादानिया चेव धम्मा नो च उपादाना।

७३. (क) उपादाना चेव धम्मा उपादानसम्पयुत्ता च।

(ख) उपादानसम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च उपादाना।

(संस्कृतच्छाया) ६९.(क) उपादाना: धर्मा:। (ख) नो उपादाना: धर्मा:।

७०.(क) उपादानीया: धर्मा:।

(ख) अनुपादानीया: धर्मा:।

७१.(क) उपादानसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) उपादानविप्रयुक्ता: धर्मा:।

७२.(क) उपादानाश्चैव धर्मा: उपादानीयाश्च ।

(ख) उपादानीयाश्चैव धर्मा: नो च उपादाना:।

७३.(क) उपादानाश्चैव धर्मा: उपादानसंप्रयुक्ताश्च।

(ख) उपादानसम्प्रयुक्ताश्चैव धर्मा: नो च उपादाना:।

(हिन्दी)६९.(क) वे धर्म, जो उपादान अर्थात् इन्द्रियो द्वारा ग्रहण-स्वरूप हैं।

(ख) वे धर्म, जो उपादान नहीं है अर्थात् इन्द्रियो द्वारा ग्रहण-स्वरूप नहीं हैं।

७०.(क) वे धर्म, जो उपादान को पैदा करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो उपादान को पैदा करने वाले नहीं हैं।

७१.(क) वे धर्म, जो उपादान से संलग्न हैं।

(ख) वे धर्म, जो उपादान से अलग हैं।

७२.(क) वे धर्म, जो उपादान हैं और उपादान को पैदा करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो उपादान हैं और उपादान को पैदा करने वाले नहीं हैं।

७३. (क) वे धर्म, जो स्वयं उपादान हैं और अन्य उपादानों से संलग्न भी हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं उपादान नहीं हैं किन्तु अन्य उपादानों से संलग्न हैं।

७४. (क) उपादानविप्पयुत्ता खो पन धम्मा उपादानियापि।

(ख) अनुपादानियापि।

(१२) किलेसगोच्छकं

७५. (क) किलेसा धम्मा।

(ख) नो किलेसा धम्मा।

७६. (क) संकिलेसिका धम्मा।

(ख) असंकिलेसिका धम्मा।

७७. (क) संकिलिट्ठा धर्मा।

(ख) असंकिलिट्ठा धर्मा।

(संस्कृतच्छाया)७४. (क) उपादानविप्रयुक्ता: खलु पुनर्धर्मा: उपादानीया अपि।

(ख) अनुपादानीया अपि।

७५. (क) क्लेशा: धर्मा:।

(ख) नो क्लेशा: धर्मा:।

७६. (क) संक्लेशिका: धर्मा:।

(ख) असंक्लेशिका: धर्मा:।

७७. (क) संक्लिष्टा: धर्मा:।

(ख) असंक्लिष्टा: धर्मा:।

(हिन्दी)७४. (क) वे धर्म, जो स्वयं उपादानों से अलग हैं किन्तु उन्हें पैदा करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं उपादानों से अलग हैं और उन्हें पैदा करने वाले भी नहीं हैं।

७५.(क) वे धर्म, जो स्वयं क्शेल स्वरूप हैं।

(ख) वे धर्म, जो स्वयं क्शेल स्वरूप नहीं हैं।

७६.(क) वे धर्म, जो क्शेल को उत्पन्न करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो क्शेल को उत्पन्न करने वाले नहीं हैं।

७७.(क) वे धर्म, जो क्शेलों से युक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो क्शेलों से युक्त नहीं हैं।

७८. (क) किलेससम्पयुत्ता धर्मा।

(ख) किलेसविप्पयुत्ता धर्मा।

७९. (क) किलेसा चेव धर्मा संकिलेसिका च।

(ख) संकिलेसिका चेव धर्मा नो च किलेसा।

८०. (क) किलेसा चेव धर्मा संकिलिट्ठा च।

(ख) संकिलिट्ठा चेव धर्मा नो च किलेसा।

८१. (क) किलेसा चेव धर्मा किलेससम्पयुत्ता च।

(ख) किलेससम्पयुत्ता चेव धम्मा नो च किलेसा।

८२. (क) किलेसविप्पयुत्ता खो पन धर्मा संकिलेसिकापि।

(ख) असंकिलेसिकापि।

(संस्कृतच्छाया) ७८.(क) क्लेशसम्प्रयुक्ता: धर्मा:।

(ख) क्लेशविप्रयुक्ता: धर्मा:।

७९.(क) क्लेशाश्चैव धर्मा: संक्लेशिकाश्च।

(ख) संक्लेशिकाश्चैव धर्मा: नो च क्लेशा:।

८०.(क) क्लेशाश्चैव धर्मा: संक्लिष्टाश्च।

(ख) संक्लिष्टाश्चैव धर्मा: नो च क्लेशा:।

८१.(क) क्लेशाश्चैव धर्मा: क्लेशसम्प्रयुक्ताश्च।

(ख) क्लेशसम्प्रयुक्ताश्चैव धर्मा: नो च क्लेशा:।

८२.(क) क्लेशविप्रयुक्ता: खलु पुन: धर्मा: संक्लेशिका अपि।

(ख) असंक्लेशिका अपि।

(हिन्दी) ७८.(क) वे धर्म, जो क्शेलों से संलग्न हैं।

(ख) वे धर्म, जो क्शेलों से संलग्न नहीं हैं।

७९.(क) वे धर्म, जो क्लेश-रूप हैं और क्लेशों को पैदा करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो क्लेश-रूप नहीं हैं, किन्तु क्लेशों को पैदा करने वाले हैं।

८०.(क) वे धर्म, जो क्लेश-रूप हैं और क्लेशों से युक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो क्लेश-रूप नहीं हैं, किन्तु क्लेशों से युक्त हैं।

८१.(क) वे धर्म, जो क्लेश-रूप हैं और अन्य क्लेशों से संलग्न हैं।

(ख) वे धर्म, जो क्लेश-रूप नहीं हैं, किन्तु अन्य क्लेशों से संलग्न हैं।

८२.(क) वे धर्म, जो क्लेश से अलग हैं, किन्तु क्लेशों को पैदा करने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो क्लेश से अलग हैं और क्लेशों को पैदा करने वाले भी नहीं हैं।

(१३)पिट्ठिदुकं

८३. (क) दस्सनेन पहातब्बा धम्मा।

(ख) न दस्सनेन पहातब्बा धम्मा।

८४. (क) भावनाय पहातब्बा धम्मा।

(ख) न भावनाय पहातब्बा धम्मा।

८५. (क) दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा।

(ख) न दस्सनेन पहातब्बहेतुका धम्मा।

८६. (क) भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा।

(ख) न भावनाय पहातब्बहेतुका धम्मा।

८७. (क) सवितक्का धम्मा।

(ख) अवितक्का धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) ८३.(क) दर्शनेन प्रहातव्या: धर्मा:।

(ख) न दर्शनेन प्रहातव्या: धर्मा:।

८४.(क) भावनया: प्रहातव्या: धर्मा:।

(ख) न भावनया: प्रहातव्या: धर्मा:।

८५.(क) दर्शनेन प्रहातव्यहेतुका: धर्मा:।

(ख) न दर्शनेन प्रहातव्यहेतुका: धर्मा:।

८६. (क) भावनया: प्रहातव्यहेतुका: धर्मा:।

(ख) न भावनया: प्रहातव्यहेतुका: धर्मा:।

८७. (क) सवितर्का: धर्मा:। (ख) अवितर्का: धर्मा:।

हिन्दी ८३.(क)) वे धर्म, जो दर्शन के द्वारा नष्ट किये जा सकते हैं।

(ख) वे धर्म, जो दर्शन के द्वारा नष्ट नहीं किये जा सकते हैं।

८४.(क) वे धर्म, जो भावना के द्वारा नष्ट किये जा सकते हैं।

(ख) वे धर्म, जो भावना के द्वारा नष्ट किये नहीं जा सकते हैं।

८५. (क)) वे धर्म, जिनके हेतुओं को दर्शन के द्वारा नष्ट किये जा सकते हैं।

(ख) वे धर्म, जिनके हेतुओं को दर्शन के द्वारा नष्ट नहीं किये जा सकते हैं।

८६.(क) वे धर्म, जिनके हेतुओं को भावना के द्वारा नष्ट किये जा सकते हैं।

(ख) वे धर्म, जिनके हेतुओं को भावना के द्वारा नष्ट नहीं किये जा सकते हैं।

८७.(क) वे धर्म, जो वितर्क सहित हैं।

(ख) वे धर्म, जो वितर्क सहित नहीं हैं।

८८. (क) सविचारा धम्मा।

(ख) अविचारा धम्मा।

८९. (क) सप्पीतिका धम्मा।

(ख) अप्पीतिका धम्मा।

९०. (क) पीतिसहगता धम्मा।

(ख) न पीतिसहगता धम्मा।

९१. (क) सुखसहगता धम्मा।

(ख) न सुखसहगता धम्मा।

९२. (क) उपेक्खासहगता धम्मा। (ख) न उपेक्खासहगता धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) ८८. (क) सविचारा: धर्मा:।

(ख) अविचारा: धर्मा:।

८९. (क) सप्रीतिका: धर्मा:।

(ख) अप्रीतिका: धर्मा:।

९०. (क) प्रीतिसहगता: धर्मा:।

(ख) न प्रीतिसहगता: धर्मा:।

९१. (क) सुखसहगता: धर्मा:।

(ख) न सुखसहगता: धर्मा:।

९२. (क) उपेक्षासहगता: धर्मा:। (ख) न उपेक्षासहगता: धर्मा:।

(हिन्दी) ८८. (क) वे धर्म, जो विचार सहित हैं।

(ख) वे धर्म, जो विचार रहित हैं।

८९. (क) वे धर्म, जो प्रीति सहित हैं।

(ख) वे धर्म, जो प्रीति रहित हैं।

९०. (क) वे धर्म, जो प्रीतिसहगत हैं।

(ख) वे धर्म, जो प्रीतिसहगत नहीं है।

९१. (क) वे धर्म, जो सुखसहगत हैं।

(ख) वे धर्म, जो सुखसहगत नहीं हैं।

९२. (क) वे धर्म, जो उपेक्षासहगत हैं। (ख) वे धर्म, जो उपेक्षासहगत नहीं हैं।

९३. (क) कामावचरा धम्मा।

(ख) न कामावचरा धम्मा।

९४. (क) रूपावचरा धम्मा।

(ख) न रूपावचरा धम्मा।

९५. (क) अरूपावचरा धम्मा।

(ख) न अरूपावचरा धम्मा।

९६. (क) परियापन्ना धम्मा।

(ख) अपरियापन्ना धम्मा।

९७. (क) निय्यानिका धम्मा। (ख) अनिय्यानिका धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) ९३. (क) कामावचरा: धर्मा:।

(ख) न कामावचरा: धर्मा:।

९४. (क) रूपावचरा: धर्मा:।

(ख) न रूपावचरा: धर्मा:।

९५. (क) अरूपावचरा: धर्मा:।

(ख) न अरूपावचरा: धर्मा:।

९६. (क) पर्यापन्ना: धर्मा:।

(ख) अपर्यापन्ना: धर्मा:।

९७. (क) नैर्याणिका: धर्मा:। (ख) अनैर्याणिका: धर्मा:।

(हिन्दी) ९३. (क) वे धर्म, जिनका संबन्ध कामनाओं के लोक से हैं।

(ख) वे धर्म, जिनका संबन्ध कामनाओं के लोक से नहीं हैं।

९४. (क) वे धर्म, जिनका संबन्ध रूपावचर लोक से हैं।

(ख) वे धर्म, जिनका संबन्ध रूपावचर लोक से नहीं हैं।

९५. (क) वे धर्म, जिनका सम्बन्ध अरूपावचर लोक से हैं।

(ख) वे धर्म, जिनका सम्बन्ध अरूपावचर लोक से नहीं हैं।

९६. (क) वे धर्म, जो आवागमन के चक्र में निहित हैं।

(ख) वे धर्म, जो आवागमन के चक्र में निहित नहीं हैं।

९७. (क) वे धर्म, जो निर्वाण की प्राप्ति कराने वाले हैं।

(ख) वे धर्म, जो निर्वाण की प्राप्ति कराने वाले नहीं हैं।

९८. (क) नियता धम्मा।

(ख) अनियता धम्मा।

९९. (क) सउत्तरा धम्मा।

(ख) अनुत्तरा धम्मा।

१००.(क) सरणा धम्मा।

(ख) अरणा धम्मा।

अभिधम्मदुकमातिका।

(ख) सुत्तन्ते

१०१. (क) विज्जाभागिनो धम्मा।

(ख) अविज्जाभागिनो धम्मा।

(संस्कृतच्छाया)९८. (क) नियता: धर्मा:।

(ख) अनियता: धर्मा:।

९९. (क) सोत्तरा: धर्मा:।

(ख) अनोत्तरा: धर्मा:।

१००. (क) सरणा: धर्मा:।

(ख) अरणा: धर्मा:।

१०१. (क) विद्याभागिनो धर्मा:।

(ख) अविद्याभागिनो धर्मा:।

(हिन्दी) ९८.(क) वे धर्म, जिनके परिणाम सुनिश्चित हैं।

(ख) वे धर्म, जिनके परिणाम सुनिश्चित नहीं हैं।

९९. (क) वे धर्म, जिनसे आगे बढ़कर भी कुछ हैं।

(ख) वे धर्म, जिनसे आगे बढ़कर कुछ नहीं हैं।

१००.(क) वे धर्म, जो दु:खदायी पाप-कर्मों से युक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो दु:खदायी पाप-कर्मों से युक्त नहीं हैं।

१०१. (क) वे धर्म, जो विद्या से सम्प्रयुक्त हैं।

(ख) वे धर्म, जो अविद्या से सम्प्रयुक्त हैं।

१०२. (क) विज्जूपमा धम्मा।

(ख) वजिरूपमा धम्मा।

१०३.(क) बाला धम्मा।

(ख) पण्डिता धम्मा।

१०४.(क) कण्हा धम्मा।

(ख) सुक्का धम्मा।

१०५. (क) तपनीया धम्मा।(ख) अतपनीया धम्मा।

१०६. (क) अधिवचना धम्मा। (ख) अधिवचनपथा धम्मा।

१०७. (क) निरुत्ति धम्मा। (ख) निरुत्तिपथा धम्मा।

(संस्कृतच्छाया) १०२. (क) विद्योपमा: धर्मा:। (ख) वज्रोपमा: धर्मा:।

१०३. (क) बाला: धर्मा:। (ख) पण्डिता: धर्मा:।

१०४. (क) कृष्णा: धर्मा:। (ख) शुक्ला: धर्मा:।

१०५. (क) तपनीया: धर्मा:। (ख) अतपनीया: धर्मा:।

१०६. (क) अधिवचना: धर्मा:। (ख) अधिवचनपथा: धर्मा:।

१०७. (क) निरुक्ति: धर्मा:। (ख) निरुक्तिपथा: धर्मा:।

(हिन्दी)१०२.(क) वे धर्म, जो क्लेश रूपी अन्धकार को नष्ट करने में सामर्थ्य नहीं हैं।

(ख) वे धर्म, जो क्लेश रूपी अन्धकार को नष्ट करने में सामर्थ्य हैं।

१०३.(क) वे धर्म, जो मुर्खों द्वारा सेवनीय हैं।

(ख) वे धर्म, जो पण्डितो द्वारा सेवनीय हैं।

१०४. (क) वे धर्म, जो चित्त के अप्रभाश्वर स्वभाव का हैं।

(ख) वे धर्म, जो चित्त के प्रभाश्वर स्वभाव का हैं।

१०५. (क) वे धर्म, जो पश्चात्ताप करने योग्य हैं।

(ख) वे धर्म, जो पश्चात्ताप करने योग्य नहीं हैं।

१०६. (क) वे धर्म, जो कहने योग्य हैं।

(ख) वे धर्म, जो अभिव्यक्ति की विधा हैं।

१०७. (क) वे धर्म, जो विश्लेषणात्मक हैं।

(ख) वे धर्म, जो विश्लेषणात्मक मार्ग हैं।

१०८. (क) पञ्ञत्ति धम्मा।

(ख) पञ्ञत्तिपथा धम्मा।

१०९. (क) नामञ्च। (ख) रूपञ्च।

११०. (क) अविज्जा च।

(ख) भवतण्हा च।

१११. (क) भवदिट्ठि च। (ख) विभवदिट्ठि च।

११२. (क) सस्सतदिट्ठि च। (ख) उच्छेददिट्ठि च।

११३. (क) अन्तवा दिट्ठि च। (ख) अनन्तवा दिट्ठि च।

(संस्कृतच्छाया) १०८. (क) प्रज्ञप्ति: धर्मा:।

(ख) प्रज्ञप्तिपथा: धर्मा:।

१०९. (क) नामञ्च। (ख) रूपञ्च।

११०. (क) अविद्या च। (ख) भवतृष्णा च।

१११. (क) भवदृष्टिश्च। (ख) विभवदृष्टिश्च।

११२. (क) शाश्वतदृष्टिश्च। (ख) उच्छेददृष्टिश्च।

११३. (क) अन्तवान् दृष्टिश्च। (ख) अन्तवती दृष्टिश्च।

(हिन्दी)१०८. (क) वे धर्म, जो प्रज्ञप्ति हैं।

(ख) वे धर्म, जो प्रज्ञप्ति पथ हैं।

१०९. (क) वे धर्म, जो नाम=(चित्त एवं चैतसिक) हैं।

(ख) वे धर्म, जो रूप=(चार महाभूत एवं चार महाभूत से उत्पन्न) हैं।

११०. (क) जो अविद्या (मोह से युक्त) है।

(ख) जो भवतृष्णा (शाश्वत वने रहने की ईच्छा) है।

१११. (क) जो भवदृष्टि (शाश्वत वने रहने का ज्ञान)है।

(ख) जो विभवदृष्टि (नष्ट हो जाने का जो ज्ञान) है।

११२. (क) जो शाश्वतदृष्टि (शाश्वत वने रहने का ज्ञान) है।

(ख) जो उच्छेददृष्टि (नष्ट हो जाने का जो ज्ञान) है।

११३. (क) सीमीत दृष्टि।

(ख) असीमीत दृष्टि।

११४. (क) पुब्बन्तानुदिट्ठि च।

(ख) अपरन्तानुदिट्ठि च।

११५. (क) अहिरिकञ्च।

(ख) अनोत्तप्पञ्च।

११६. (क) हिरी च।

(ख) ओत्तप्पञ्च।

११७. (क) दोवचस्सता च।

(ख) पापमित्तता च।

११८. (क) सोवचस्सता च। (ख) कल्याणमित्तता च।

(संस्कृतच्छाया)११४. (क) पूर्वान्तानुदृष्टिश्च।

(ख) अपरान्तानुदृष्टिश्च।

११५. (क) अह्रीकञ्च।

(ख) अनपत्राप्यञ्च।

११६. (क) ह्रीश्च।

(ख) अपत्राप्यञ्च।

११७. (क) दौर्वचस्यता च।

(ख) पापमित्रता च।

११८. (क) सुवचस्यता च। (ख) कल्याणमित्रता च।

(हिन्दी)११४.(क) अतीत काल से सम्बन्धित दृष्टि।

(ख) भविष्य जीवन से सम्बन्धित मिथ्या अवधारणा।

११५.(क) लज्जाभाव से रहित।

(ख) समाजिक उद्वेग का अभाव।

११६.(क) आत्म लज्जा का भाव।

(ख) समाजिक लज्जा का भाव।

११७. (क) दौर्वचता का भाव।

(ख) पापमित्र की संगति।

११८. (क) सुन्दर वचन का भाव।

(ख) कल्याणमित्र का भाव।

११९. (क) आपत्तिकुसलता च।

(ख) आपत्तिवुट्ठानकुसलता च।

१२०. (क) समापत्तिकुसलता च।

(ख) समापत्तिवुट्ठानकुसलता च।

१२१. (क) धातुकुसलता च।

(ख) मनसिकारकुसलता च।

१२२. (क) आयतनकुसलता च।

(ख) पटिच्चसमुप्पादकुसलता च।

१२३. (क) ठानकुसलता च। (ख) अट्ठानकुसलता च।

(संस्कृतच्छाया)११९. (क) आपत्तिकुशलता च।

(ख) आपत्त्युत्थानकुशलता च।

१२०.(क) समापत्तिकुशलता च।

(ख) समापत्त्युत्थानकुशलता च।

१२१. (क) धातुकुशलता च।

(ख) मनसिकारकुशलता च।

१२२. (क) आयतनकुशलता च।

(ख) प्रतीत्यसमुत्पादकुशलता च।

१२३. (क) स्थानकुशलता च। (ख) अस्थानकुशलता च।

(हिन्दी)११९. (क) आपत्तिय(विनय-अपराध) ज्ञान के विषय में कुशलता।

(ख) आपत्तियों से विमुक्त हो जाने की अवस्था के ज्ञान में कुशलता।

१२०.(क) समापत्ति(प्राप्ति) ज्ञान के विषय में कुशलता।

(ख) समापत्ति विमुक्त हो जाने की अवस्था के ज्ञान में कुशलता।

१२१.(क) 18 धातुओं के ज्ञान में कुशलता।

(ख)उन धातुओं को मन में रखने की कुशलता।

१२२.(क) 12 आयतनों के ज्ञान में कुशलता।

(ख) प्रतीत्यसमुत्पाद के ज्ञान में कुशलता।

१२३.(क) स्थानों के ज्ञान के विषय में कुशलता।

(ख) अस्थानों के ज्ञान के विषय में कुशलता।

१२४.(क) अज्जवो च।

(ख) मद्दवो च।

१२५.(क) खन्ति च।

(ख) सोरच्चञ्च।

१२६.(क) साखल्यञ्च।

(ख) पटिसन्थारो च।

१२७.(क) इन्द्रियेसु अगुत्तद्वारता च।

(ख) भोजने अमत्तञ्ञुता च।

१२८.(क) इन्द्रियेसु गुत्तद्वारता च।

(ख) भोजने मत्तञ्ञुता च।

(संस्कृतच्छाया) १२४. (क) आर्जवश्च।

(ख) मार्दवश्च।

१२५. (क) क्षान्तिश्च।

(ख) सौरत्यञ्च।

१२६. (क) साखल्यञ्च।

(ख) प्रतिसन्थारश्च ।

१२७. (क) इन्द्रियेषु अगुप्तद्वारता च।

(ख) भोजने अमात्रज्ञता च।

१२८. (क) इन्द्रियेषु गुप्तद्वारता च।

(ख) भोजने मात्रज्ञता च।

(हिन्दी)१२४. (क) साधापन।

(ख) मृदुता।

१२५. (क) सहन करने की मनोवृत्ति।

(ख) आसक्ती के भाव।

१२६. (क) मधुरभाषी का भाव।

(ख) मैत्रीपूर्ण स्वागत।

१२७. (क) मन आदि छ: इन्द्रियों द्वारों में असुरक्षिता का भाव।

(ख) भोजन में मात्रा का अज्ञान।

१२८. (क) मन आदि छ: इन्द्रिय द्वार में सुरक्षिता का भाव।

(ख) भोजन में मात्रा का ज्ञान।

१२९. (क) मुट्ठसच्चञ्च। (ख) असम्पजञ्ञञ्च।

१३०. (क) सति च। (ख) सम्पजञ्ञञ्च।

१३१. (क) पटिसङ्खानबलञ्च। (ख) भावनाबलञ्च।

१३२. (क) समथो च। (ख) विपस्सना च।

१३३. (क) समथनिमित्तञ्च । (ख) पग्गाहनिमित्तञ्च।

१३४. (क) पग्गाहो च। (ख) अविक्खेपो च।

१३५. (क) सीलविपत्ति च। (ख) दिट्ठिविपत्ति च।

१३६. (क) सीलसम्पदा च। (ख) दिट्ठिसम्पदा च।

१३७. (क) सीलविसुद्धि च।(ख) दिट्ठिविसुद्धि च।

(संस्कृतच्छाया) १२९. (क) मुषितसत्यम्। (ख) असम्प्रजन्यञ्च।

१३०. (क) स्मृतिश्च । (ख) सम्प्रजन्यञ्च।

१३१. (क) प्रतिसंख्यानबलञ्च। (ख) भावनाबलञ्च।

१३२. (क) शमथश्च। (ख) विपश्यना च।

१३३. (क) शमथनिमित्तञ्च। (ख) प्रग्राहनिमित्तञ्च।

१३४. (क) प्रग्राहश्च। (ख) अविक्षेपश्च।

१३५. (क) शीलविपत्तिश्च। (ख) दृष्टिविपत्तिश्च।

१३६. (क) शीलसम्पदाश्च। (ख) दृष्टिसम्पदाश्च।

१३७. (क) शीलविशुद्धिश्च । (ख) दृष्टिविशुद्धिश्च ।

(हिन्दी)१२९. (क) विस्मृति का भाव । (ख) चित्त की जागरूकता का अभाव।

१३०. (क) सतत् जागरूकता। (ख) काय का निरन्तर प्रत्यवेक्षण।

१३१. (क) विचार करने की शक्ति। (ख) भावना बल।

१३२. (क) चित्त की एकाग्रता रूपी समाधि। (ख) अनित्यादि के द्वारा विविध आकार से धर्मों को देखना।

१३३. (क) चित्त की शान्ति का कारण। (ख) उत्साह का कारण।

१३४. (क) संप्रयुक्तधर्मों में उत्साह। (ख) चित्त की अचंचलता।

१३५. (क) शील से विरत रहना। (ख) मृथ्यादृष्टियों से युक्त रहना।

१३६. (क) शील से युक्त होना। (ख) सम्यग्दृष्टियों से युक्त होना।

१३७. (क) शील के द्वारा विशुद्धि । (ख) दृष्टिविशुद्धि।

१३८. (क) दिट्ठिविसुद्धि खो पन। (ख) यथादिट्ठिस्स च पधानं।

१३९. (क) संवेगो च संवेजनियेसु ठानेसु। (ख) संविग्गस्स च योनिसो पधानं।

१४०. (क) असन्तुट्ठिता च कुसलेसु धम्मेसु।

(ख) अप्पटिवानिता च पधानस्मिं।

१४१. (क) विज्जा च।

(ख) विमुत्ति च।

१४२. (क) खये ञाणं।

(ख) अनुप्पादे ञाणं ति।

सुत्तन्तिकदुकमातिका।
मातिका निट्ठिता।

(संस्कृतच्छाया)१३८. (क) दृष्टिविशुद्धि: खलु पुन:। (ख) यथादृष्टेश्च प्रधानम्।

१३९. (क) संवेगश्च संवेजनियेषु स्थानेषु। (ख) संविग्नस्य च योनिश: प्रधानम्।

१४०. (क) असन्तुष्टिभावश्च च कुशलेषु धर्मेषु।

(ख) अप्रतिवारणत्वं च प्रधाने।

१४१. (क) विद्या च।

(ख) विमुक्तिश्च।

१४२. (क) क्षये ज्ञानम्।

(ख) अनुत्पादे ज्ञानमिति।

सूत्रान्तिकद्विकमातृका:।
मातृका: निष्ठिता:।

(हिन्दी)१३८. (क) अनेक दृष्टियों के द्वारा विशुद्धि । (ख) यथार्थ दृष्टि की प्रधानता।

१३९.(क) संवेग पैदा करने वाले स्थानों में वैराग्य। (ख) संविग्नचित्तता का यर्थाथ ढंग से अभ्यास।

१४०.(क) कुशल धर्मो में असन्तुष्टि का भाव ।

(ख) कर्मो में अविचलता का भाव।

१४१.(क) विद्या ।

(ख) विमुक्ति।

१४२.(क) क्लेशो के क्षय एवं आर्यमार्ग के ज्ञान को क्षय ज्ञान कहते हैं।

(ख) पुन: उत्पत्ति न होने का ज्ञान।

सौत्रान्तिकद्विकमातृका समाप्त ।

मातृका प्रकरण समाप्त।

****

१. चित्तुप्पादकण्डं

१. कुसला धम्मा

१. पदभाजनी, पठमं चित्तं

१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, पञ्ञाबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अमोहो होति, अनभिज्झा

(संस्कृतच्छाया) १. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं ज्ञानसम्प्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यक्सङ्कल्पो भवति, सम्यग्व्यायामो भवति, सम्यक्स्मृति: भवति, सम्यक्समाधि: भवति, श्रद्धाबलं भवति, वीर्यबलं भवति, स्मृतिबलं भवति, समाधिबलं भवति, प्रज्ञाबलं भवति, ह्रीबलं भवति, अपत्राप्यबलं भवति, अलोभो भवति, अद्वेषो भवति, अमोहो भवति, अनभिध्या

(हिन्दी) १. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय सौमनस्य सहगत ज्ञान से संप्रयुक्त रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है, सुख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, श्रद्धा-इन्द्रिय होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, स्मृति-इन्द्रिय होती है, समाधि-इन्द्रिय होती है, प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है, मन-इन्द्रिय होती है, सौमनस्य-इन्द्रिय होती है, जीवित-इन्द्रिय होती है, सम्यग्दृष्टि होती है, सम्यक् संकल्प होता है, सम्यक् व्यायाम होता है, सम्यक् स्मृति होती है, सम्यक् समाधि होती है, श्रद्धाबल होता है, वीर्यबल होता है, स्मृतिबल होता है, समाधि-बल होता है, प्रज्ञा-बल होता है, ह्री-बल होता है, अपत्राप्य-बल होता है, अलोभ होता है, अद्वेष होता है, अमोह होता है, अनभिध्या होती है,

होति, अब्यापादो होति, सम्मादिट्ठि होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, सम्पजञ्ञं होति, समथो होति, विपस्सना होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

२. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

३. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जा मनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा

(संस्कृतच्छाया) भवति, अव्यापादो भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, ह्री: भवति, अपत्राप्यं भवति, कायप्रश्रब्द्धि: भवति, चित्तप्रश्रब्द्धि: भवति, कायलघुता भवति, चित्तलघुता भवति, कायमृदुता भवति, चित्तमृदुता भवति, कायकर्मण्यता भवति, चित्तकर्मण्यता भवति, कायप्रागुण्यता भवति, चित्तप्रागुण्यता भवति, कायर्जुकता भवति, चित्तर्जुकता भवति, स्मृति: भवति, सम्प्रजन्यं भवति, शमथो भवति, विपश्यना भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

२. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

३. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा

(हिन्दी) अव्यापाद होता है, सम्यग्दृष्टि होती है, ह्री (आत्म लज्जा) होती है, अपत्राप्य (सामाजिक लज्जा) होती है, कायप्रश्रब्धि (चैतसिकों की उपशान्ति) होती है, चित्तप्रश्रब्धि (चित्त की उपशान्ति) होती है, कायलघुता(चैतसिकों का हल्कापन) होती है, चित्तलघुता(चित्त का हल्कापन) होती है, कायमृदुता (चैतसिकों की कोमलता) होती है, चित्तमृदुता (चित्त की कोमलता) होती है, कायप्रागुण्यता (चैतसिकों की गुणशीलता) होती है, चित्तप्रागुण्यता (चित्त की गुणशीलता) होती है, कायर्जुकता (चैतसिकों का सीधापन) होती है, चित्तर्जुकता (चित्त का सीधापन) होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य(धर्मों का यथार्थ ज्ञान) होता है, शमथ (मन को शान्त करने वाला रूप एवं अरूप ध्यान) होता है, विपश्यना(धर्मों का तटस्थ भाव से दर्शन) होती है, प्रग्राह(पकड़) होती है, अविक्षेप (चित्त की अचंचलता) होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

२. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श है।

३. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न चैतसिक आनन्द,

वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जा मनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

५.कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जा मनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं– अयं तस्मिं समये चेतना होति।

६. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

७. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

(संस्कृतच्छाया) वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

४. कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्वम्– इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

५. कतमा तस्मिन् समये चेतना भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम्– इयं तस्मिन् समये चेतना भवति ।

६. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति।

७. कतम: तस्मिन् समये वितर्को भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपणं सम्यक्सङ्कल्प:– अयं तस्मिन् समये वितर्को भवति।

(हिन्दी) चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द, सुख अनुभव और चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुख की वेदना है- यही उस समय की वेदना होती है।

४. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न संज्ञा है, जो भली प्रकार से जानना और भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय में संज्ञा होती है।

५. उस समय कौन सी चेतना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चेतना, भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय की चेतना होती है।

६. उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उस चित्त से उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय चित्त होता है।

७. उस समय कौन सा वितर्क होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), तर्क-वितर्क (किसी आलम्बन पर चित्त को रखना), किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना, चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना तथा सम्यक् संकल्प है- यही उस समय वितर्क होता है।

८. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

९. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये पीति होति।

१०. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

११. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

(संस्कृतच्छाया) ८. कतमः तस्मिन् समये विचारो भवति? यः तस्मिन् समये चारः विचारः अनुविचारः उपविचारः चित्तस्य अनुसन्धानत्वम् अनुप्रेक्षणत्वम्– अयं तस्मिन् समये विचारो भवति।

९. कतमा तस्मिन् समये प्रीतिः भवति? या तस्मिन् समये प्रीतिः प्रामोद्यम् आमोदनं प्रमोदनं हासः प्रहासः वित्तिः औदग्रयम् आप्तमनता चित्तस्य – इयं तस्मिन् समये प्रीतिः भवति।

१०. कतमं तस्मिन् समये सुखं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये सुखं भवति।

११. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थितिः संस्थितिः अवस्थितिः अविसंहारः अविक्षेपः अविसंहृतमानसता शमथः समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधिः – इयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति।

(हिन्दी) ८. उस समय कौन सा विचार होता है? जो उस समय गतिशील होना, विचार, अनुविचार(आलम्बन के पीछे-पीछे विचरण करना), उपविचार(आलम्बन के समीप विचरण करना), चित्त की आलम्बन की खोज परक प्रवृत्ति एवं आलम्बन के प्रति उपेक्षा रहित होने की प्रवृत्ति है- यही उस समय विचार होता है।

९. उस समय कौन सी प्रीति होती है? जो उस समय प्रीति, प्रसन्नता, आमोद्य, प्रमोदता, हँसी, प्रहास, वित्ति (प्रसन्नता), तेजस्वी(आनन्द से मन का उपर उठ जाने की स्थिति) एवं चित्त की आप्तमनता(प्रसन्नता) है- यही उस समय प्रीति होती है।

१०. उस समय कौन सा सुख होता है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्तसंस्पर्श के द्वारा उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न प्रिय एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय सुख होता है।

११. उस समय कौन सी चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति(सम्यक् रूप से स्थिति), सुदृढ़ स्थिति, अचञ्चलता, अविक्षेप, चित्त की शान्त अवस्था, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

१२. कतमं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति।

१३. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

१४. कतमं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया)१२. कतमं तस्मिन् समये श्रद्धेन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये श्रद्धा श्रद्दधानम् अवकल्पनम् अभिप्रसाद: श्रद्धा श्रद्धेन्द्रियं श्रद्धाबलम् – इदं तस्मिन् समये श्रद्धेन्द्रियं भवति ।

१३. कतमं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिक: वीर्यारम्भ: निष्क्रम: पराक्रम: उद्यम: व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राह: वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायाम: – इदं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति।

१४. कतमं तस्मिन् समये स्मृतीन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति:– इदं तस्मिन् समये स्मृतीन्द्रियं भवति।

(हिन्दी)१२. उस समय कौन सी श्रद्धा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय श्रद्धा, विश्वास करना, दृढ़ धारणा रखना, अत्यधिक श्रद्धा है, वही श्रद्धा, श्रद्धेन्द्रिय, श्रद्धाबल है- यही उस समय श्रद्धा-इन्द्रिय होती है।

१३. उस समय कौन सी वीर्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम की दशा), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है- यही उस समय वीर्य-इन्द्रिय होती है।

१४. उस समय कौन सी स्मृति-इन्द्रिय होती है? जो उस समय स्मृति, अतीत धर्मों का स्मरण, प्रतिस्मृति (विचारणा), स्मरण, स्मरण करना, मन में धारण करना, अविस्मरण की अवस्था, नहीं भूलने की स्थिति है, वही स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल एवं सम्यक्स्मृति है- यही उस समय स्मृति-इन्द्रिय होती है।

१५. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति।

१६. कतमं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति।

१७. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया)१५. कतमं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: – इदं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति।

१६. कतमं तस्मिन् समये प्रज्ञेन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– इदं तस्मिन् समये प्रज्ञेन्द्रियं भवति।

१७. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) १५. उस समय कौन सी समाधि-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ़ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय समाधि-इन्द्रिय होती है।

१६. उस समय कौन सी प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, उपलक्षण(विवेचनात्मक ज्ञान), प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (धर्मों को अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (धर्मों का सम्यक् प्रकार से अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है- यही उस समय प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है।

१७. उस समय कौन सी मन-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय मन-इन्द्रिय होती है।

१८. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

१९. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति।

२०. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

(संस्कृतच्छाया)१८. कतमं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति।

१९. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? य: तेषाम् अरूपिणां धर्माणाम् आयु: स्थिति: यपना यापना ईरणं वर्तनं पालनं जीवितं जीवितेन्द्रियम् – इदं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति।

२०. कतमा तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– इयं तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति।

(हिन्दी) १८. उस समय कौन सी सौमनस्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुख की अनुभूति, चैतसिक संस्पर्श से उत्पन्न आनन्दमयि एवं सुखमयि वेदना है- यही उस समय सौमनस्य-इन्द्रिय होती है।

१९. उस समय कौन सी जीवित-इन्द्रिय होती है? जो उन अरूपी धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत होना, गुजरना, क्रिया शीलता, विद्यमान रहना, पालन करना, जीवन और जीवित-इन्द्रिय है- यही उस समय जीवित-इन्द्रिय होती है।

२०. उस समय कौन सी सम्यग्दृष्टि होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि से विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय सम्यग्दृष्टि होती है।

२१. कतमो तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो– अयं तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति।

२२. कतमो तस्मिं समये सम्मावायामो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – अयं तस्मिं समये सम्मावायामो होति।

२३. कतमा तस्मिं समये सम्मासति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – अयं तस्मिं समये सम्मासति होति।

(संस्कृतच्छाया) २१. कतम: तस्मिन् समये सम्यक्सङ्कल्पो भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपणं सम्यक्सङ्कल्प:– अयं तस्मिन् समये सम्यक्सङ्कल्पो भवति।

२२. कतम: तस्मिन् समये सम्यग्व्यायामो भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिक: वीर्यारम्भ: निष्क्रम: पराक्रम: उद्यम: व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राह: वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायाम: – अयं तस्मिन् समये सम्यग्व्यायाम: भवति ।

२३. कतमा तस्मिन् समये सम्यक्स्मृति: भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति:– इयं तस्मिन् समये सम्यक्स्मृति: भवति।

(हिन्दी) २१. उस समय कौन सा सम्यक्संकल्प होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), अर्पण (किसी आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता), व्यार्पण(किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना), चित्त का अभिनिरोपण (चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना) तथा सम्यक् संकल्प है- यही उस समय सम्यक् संकल्प होता है।

२२. उस समय कौन सा सम्यग्व्यायाम होता है? जो उस समय चैतसिक वीर्य आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, अशिथिलपराक्रमत्वम् (सुदृढ़ पराक्रम की परिपूर्ण रहने का भाव), अनिक्षिप्तछन्द का भाव (सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा), अनिक्षिप्तधुर का भाव (सुदृढ़ वीर्य वाला होना), सुदृढ़ प्रयत्न करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है- यही उस समय सम्यग्व्यायाम होता है।

२३. उस समय कौन सी सम्यक्स्मृति होती है? जो उस समय स्मृति, अतीत धर्मों का स्मरण, प्रतिस्मृति (विचारणा), स्मरण, स्मरण करना, मन में धारण करना, अविस्मरण की अवस्था, नहीं भूलने की स्थिति है, वही स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल एवं सम्यक्स्मृति है- यही उस समय स्मृति-इन्द्रिय होती है।

२४. कतमो तस्मिं समये सम्मासमाधि होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये सम्मासमाधि होति।

२५. कतमं तस्मिं समये सद्धाबलं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धाबलं होति।

२६. कतमं तस्मिं समये वीरियबलं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियबलं होति।

२७. कतमं तस्मिं समये सतिबलं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं तस्मिं समये सतिबलं होति।

(संस्कृतच्छाया) २४. कतम: तस्मिन् समये सम्यक्समाधि: भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि:– अयं तस्मिन् समये सम्यक्समाधि: भवति।

२५. कतमं तस्मिन् समये श्रद्धाबलं भवति? या तस्मिन् समये श्रद्धा श्रद्दधानम् अवकल्पनम् अभिप्रसाद: श्रद्धा श्रद्धेन्द्रियं श्रद्धाबलम् – इदं तस्मिन् समये श्रद्धाबलं भवति।

२६. कतमं तस्मिन् समये वीर्यबलं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिक: वीर्यारम्भ: निष्क्रम: पराक्रम: उद्यम: व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राह: वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायाम: – इदं तस्मिन् समये वीर्यबलं भवति।

२७. कतमं तस्मिन् समये स्मृतिबलं भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति: – इदं तस्मिन् समये स्मृतिबलं भवति।

(हिन्दी) २४. उस समय कौन सी सम्यक्समाधि होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ़ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय सम्यक्समाधि होती है।

२५. उस समय कौन सा श्रद्धाबल होता है? जो उस समय श्रद्धा, विश्वास करना, दृढ़ धारणा रखना, अत्यधिक श्रद्धा है, वही श्रद्धा, श्रद्धेन्द्रिय, श्रद्धाबल है- यही उस समय श्रद्धाबल होता है।

२६. उस समय कौन सा वीर्यबल होता है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम की दशा), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है- यही उस समय वीर्यबल होता है।

२८. कतमं तस्मिं समये समाधिबलं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिबलं होति।

२९. कतमं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति।

३०. कतमं तस्मिं समये हिरिबलं होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये हिरिबलं होति।

(संस्कृतच्छाया)२८. कतमं तस्मिन् समये समाधिबलं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: – इदं तस्मिन् समये समाधिबलं भवति।

२९. कतमं तस्मिन् समये प्रज्ञाबलं भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– इदं तस्मिन् समये प्रज्ञाबलं भवति।

३०. कतमं तस्मिन् समये ह्रीबलं भवति? यत् तस्मिन् समये जिह्रेति ह्रीतव्येन जिह्रेति पापकानाम् अकुशलानां धर्मणां समापत्यै – इदं तस्मिन् समये ह्रीबलं भवति ।

(हिन्दी) २७. उस समय कौन सा स्मृतिबल होता है? जो उस समय स्मृति, अनुस्मृति(अतीत धर्मों का स्मरण), विचारणा, स्मरण करना, मन में धारण करना, बार-बार दोहराना, अविस्मरण की अवस्था, अविक्षिप्तता(स्मृति के विप्रलोप का अभाव), स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति है- यही उस समय स्मृति-बल होता है।

२८. उस समय कौन सा समाधि-बल होता है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ़ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय समाधि-बल होता है।

२९. उस समय कौन सा प्रज्ञा-बल होता है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही समय उस प्रज्ञा बल होता है।

३०. उस समय कौन सा ह्री बल होता है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में (आत्म) लज्जा करता है, (आत्म) लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है - यही उस समय ह्री(आत्मलज्जा) बल होता है।

३१. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति।

३२. कतमो तस्मिं समये अलोभो होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं– अयं तस्मिं समये अलोभो होति।

३३. कतमो तस्मिं समये अदोसो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अदोसो होति?

३४. कतमो तस्मिं समये अमोहो होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो

(संस्कृतच्छाया)३१. कतमं तस्मिन् समये अपत्राप्यबलं भवति? यत् तस्मिन् समये अपत्राप्यति अपत्रापितव्येन अपत्राप्यति पापकानाम् अकुशलानां धर्माणां समापत्त्यै– इदं तस्मिन् समये अपत्राप्यबलं भवति।

३२. कतम: तस्मिन् समये अलोभो भवति? य: तस्मिन् समये अलोभ: अलोभनम् अलुब्धत्वम् असंराग: असंरञ्जनम् असंरञ्जितत्वम् अनभिध्या अलोभ: कुशलमूलम्– अयं तस्मिन् समये अलोभो भवति।

३३. कतम: तस्मिन् समये अद्वेषो भवति? य: तस्मिन् समये अद्वेष: अदूषणम् अदूषितत्वम् अव्यापाद: अव्यापद्य: अद्वेष: कुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये अद्वेषो भवति।

३४. कतम: तस्मिन् समये अमोहो भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद:

(हिन्दी)३१. उस समय कौन सा अपत्राप्य-बल होता है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में सामाजिक लज्जा करता है, समाजिक लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है - यही उस समय अपत्राप्य-बल होता है।

३२. उस समय कौन सा अलोभ होता है? जो उस समय अलोभ, लोभ का न होना, लोभ से मुक्त होने की अवस्था, सराग से रहित होना, राग का अभाव, अनासक्तिभाव, तृष्णा का अभाव और जो कुशलमूल अलोभ है- यही उस समय अलोभ होता है।

३३. उस समय अद्वेष क्या होता है? जो उस समय द्वेष का अभाव, द्वेष का न होना, द्वेष से मुक्त होने की अवस्था, अव्यापाद (पर विनाश चिन्ता का अभाव), तुच्छता का अभाव और कुशलमूल के रूप में जो अद्वेष है- यही उस समय अद्वेष होता है।

३४. उस समय अमोह क्या होता है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना

पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि अमोहो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अमोहो होति।

३५. कतमा तस्मिं समये अनभिज्झा होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अनभिज्झा होति।

३६. कतमो तस्मिं समये अब्यापादो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अब्यापादो होति।

३७. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि– अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

(संस्कृतच्छाया) प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: अमोह: कुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये अमोहो भवति।

३५. कतमा तस्मिन् समये अनभिध्या भवति? य: तस्मिन् समये अलोभ: अलोभनम् अलुब्धत्वम् असंराग: असंरञ्जनम् असंरञ्जितत्वम् अनभिध्या अलोभ: कुशलमूलम् – इयं तस्मिन् समये अनभिध्या भवति।

३६. कतम: तस्मिन् समये अव्यापादो भवति? य: तस्मिन् समये अद्वेष: अदूषणम् अदूषत्वम् अव्यापाद: अव्यापद्य: अद्वेष: कुशलमूलम्– अयं तस्मिन् समये अव्यापादो भवति।

३७. कतमा तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या-चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– इयं तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति।

(हिन्दी) करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय अमोह होता है।

३५. उस समय कौन सी अनभिध्या (अनासक्ति) होती है? जो उस समय अलोभ, अलोभ का होना, लोभ से मुक्त होना, राग रहित, राग का अभाव, अनासक्ति-भाव, तृष्णा का अभाव, कुशल मूल अलोभ है- यही उस समय अनभिध्या होती है।

३६. उस समय कौन सा अव्यापाद होता है? जो उस समय अद्वेष, अद्वेष का होना, द्वेष से मुक्त होना, अव्यापाद, तुच्छता का अभाव, कुशल-मूल अद्वेष है - यही उस समय अव्यापद होता है।

३७. उस समय कौन सी सम्यग्दृष्टि होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय ...पूर्ववत्... प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय सम्यग्दृष्टि होती है।

३८. कतमा तस्मिं समये हिरी होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – अयं तस्मिं समये हिरी होति।

३९. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पं होति।

४०. कतमा तस्मिं समये कायपस्सद्धि होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स पस्सद्धि पटिपस्सद्धि पस्सम्भना पटिपस्सम्भना पटिपस्सम्भितत्तं – अयं तस्मिं समये कायपस्सद्धि होति।

४१. कतमा तस्मिं समये चित्तपस्सद्धि होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स पस्सद्धि पटिपस्सद्धि पस्सम्भना पटिपस्सम्भना पटिपस्सम्भितत्तं– अयं तस्मिं समये चित्तपस्सद्धि होति।

(संस्कृतच्छाया)३८. कतमा तस्मिन् समये ह्रीः भवति? यत् तस्मिन् समये जिह्रेति ह्रीतव्येन जिह्रेति पापकानाम् अकुशलानां धर्माणां समापत्यै – इयं तस्मिन् समये ह्रीः भवति ।

३९. कतमं तस्मिन् समये अपत्राप्यं भवति? यत् तस्मिन् समये अपत्राप्यति अपत्रापितव्येन अपत्राप्यति पापकानाम् अकुशलानां धर्माणां समापत्यै – इदं तस्मिन् समये अपत्राप्यं भवति।

४०. कतमा तस्मिन् समये कायप्रश्रब्धिर्भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य प्रश्रब्धिः प्रतिप्रश्रब्धिः प्रश्रम्भणं प्रतिप्रश्रम्भणं प्रतिप्रश्रब्धत्वम् – इयं तस्मिन् समये कायप्रश्रब्धिर्भवति।

४१. कतमा तस्मिन् समये चित्तप्रश्रब्धिर्भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य प्रश्रब्धिः प्रतिप्रश्रब्धिः प्रश्रम्भणं प्रतिप्रश्रम्भणं प्रतिप्रश्रब्धत्वम् – इयं तस्मिन् समये चित्तप्रश्रब्धिर्भवति।

(हिन्दी) ३८. उस समय कौन सी आत्म लज्जा होती है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में (आत्म) लज्जा करता है, (आत्म) लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है- यही उस समय आत्म लज्जा होती है ।

३९. उस समय कौन सा अपत्राप्य होता है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में सामाजिक लज्जा करता है, समाजिक लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है - यही उस समय अपत्राप्य होता है।

४०. उस समय कौन सी कायप्रश्रब्धि होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं संस्कारस्कन्ध के क्लेशों की उपशमन की अवस्था, प्रतिप्रश्रब्धि(चैतसिकों में क्लेशों की पूर्ण उपशमन की अवस्था), चैतसिकों में क्लेशों के उपशमन की क्रिया, चैतसिकों में क्लेशों के पूर्ण उपशमन की क्रिया, तीनों स्कन्धों में क्लेशों की पूर्ण उपशमन की अवस्था है- यही उस समय कायप्रश्रब्धि होती है।

४१. उस समय कौन सी चित्तप्रश्रब्धि होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध के क्लेशों की उपशमन की अवस्था, चित्त में क्लेशों की पूर्ण उपशमन की अवस्था, चित्त में क्लेशों के उपशमन की क्रिया, चित्त में क्लेशों के पूर्ण उपशमन की क्रिया, क्लेशों की पूर्ण उपशमन की अवस्था है- यही उस समय चित्तप्रश्रब्धि होती है।

४२. कतमा तस्मिं समये कायलहुता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – अयं तस्मिं समये कायलहुता होति।

४३. कतमा तस्मिं समये चित्तलहुता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – अयं तस्मिं समये चित्तलहुता होति।

४४. कतमा तस्मिं समये कायमुदुता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – अयं तस्मिं समये कायमुदुता होति।

४५. कतमा तस्मिं समये चित्तमुदुता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – अयं तस्मिं समये चित्तमुदुता होति।

(संस्कृतच्छाया)४२. कतमा तस्मिन् समये कायलघुता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य लघुता लघुपरिणामता अतन्द्रता अविस्त्थानत्वम्– इयं तस्मिन् समये कायलघुता भवति।

४३. कतमा तस्मिन् समये चित्तलघुता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य लघुता लघुपरिणामता अतन्द्रता अविस्त्थानत्वम् – इयं तस्मिन् समये चित्तलघुता भवति।

४४. कतमा तस्मिन् समये कायमृदुता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य मृदुता मार्द्रवम् अकक्खटता अकठिनता – इयं तस्मिन् समये कायमृदुता भवति।

४५. कतमा तस्मिन् समये चित्तमृदुता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य मृदुता मार्द्रवम् अकक्खटता अकठिनता – इयं तस्मिन् समये चित्तमृदुता भवति।

(हिन्दी)४२. उस समय कौन सी कायलघुता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं संस्कारस्कन्ध का हल्कापन होना, लघु परिणाम से युक्त होना, भारीपन एवं शिथिलता का अभाव है- यही उस समय कायलघुता होती है।

४३. उस समय कौन सी चित्तलघुता होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध का हल्कापन होना, लघु परिणाम से युक्त होना, भारीपन एवं शिथिलता का अभाव है- यही उस समय चित्तलघुता होती है।

४४. उस समय कौन सी कायमृदुता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध की मृदुभाव, लचीलापन, अकठोरता एवं अकठीनता है- यही उस समय काममृदुता होती है।

४५. उस समय कौन सी चित्तमृदुता होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध की मृदुता, लचीलापन, अकठोरता एवं अकठीनता है- यही उस समय चित्तमृदुता होती है।

४६. कतमा तस्मिं समये कायकम्मञ्ञता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो– अयं तस्मिं समये कायकम्मञ्ञता होति।

४७. कतमा तस्मिं समये चित्तकम्मञ्ञता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – अयं तस्मिं समये चित्तकम्मञ्ञता होति।

४८. कतमा तस्मिं समये कायपागुञ्ञता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स पगुणता पगुणत्तं पगुणभावो – अयं तस्मिं समये कायपागुञ्ञता होति।

४९. कतमा तस्मिं समये चित्तपागुञ्ञता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स पगुणता पगुणत्तं पगुणभावो – अयं तस्मिं समये चित्तपागुञ्ञता होति।

(संस्कृतच्छाया) ४६. कतमा तस्मिन् समये कायकर्मण्यता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य कर्मण्यता कर्मण्यत्त्वं कर्मण्यभाव: – इयं तस्मिन् समये कायकर्मण्यता भवति।

४७. कतमा तस्मिन् समये चित्तकर्मण्यता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य कर्मण्यता कर्मण्यत्त्वं कर्मण्यभाव: – इयं तस्मिन् समये चित्तकर्मण्यता भवति।

४८. कतमा तस्मिन् समये कायप्रागुण्यता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य प्रगुणता प्रगुणत्वं प्रगुणभाव:– इयं तस्मिन् समये कायप्रागुण्यता भवति ।

४९. कतमा तस्मिन् समये चित्तप्रागुण्यता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य प्रगुणता प्रगुणत्वं प्रगुणभाव: – इयं तस्मिन् समये चित्तप्रागुण्यता भवति।

(हिन्दी) ४६. उस समय कौन सी कायकर्मण्यता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध की कर्मण्यता(कुशल क्रियाओं को ठीक से करने की क्षमता), कर्मण्यत्व(कुशल क्रियाओं को ठीक से करने की प्रकृति) एवं कर्मण्य का भाव है- यही उस समय कायकर्मण्यता होती है।

४७. उस समय कौन सी चित्तकर्मण्यता होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध की कर्मण्यता (कुशल क्रियाओं को ठीक से करने की क्षमता), कर्मण्यतत्व (कुशल क्रियाओं को ठीक से करने की प्रकृति) एवं कर्मण्य का भाव है - यही उस समय चित्तकर्मण्यता होती है।

४८. उस समय कौन सी कायप्रागुण्यता होती है? जो उस समय वेदना-स्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध की प्रगुणता (आतुरता का उपशम करना), प्रगुणत्व, प्रगुण(आतुरता के न होने) का भाव है- यही उस समय कायप्रागुण्यता होती है।

४९. उस समय कौन सी चित्त-प्रागुण्यता होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध की आतुरता का उपशम, प्रगुणत्व, आतुरता के न होने का भाव है - यही उस समय चित्तप्रागुण्यता होती है।

५०. कतमा तस्मिं समये कायुजुकता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता – अयं तस्मिं समये कायुजुकता होति।

५१. कतमा तस्मिं समये चित्तुजुकता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता – अयं तस्मिं समये चित्तुजुकता होति।

५२. कतमा तस्मिं समये सति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति– अयं तस्मिं समये सति होति।

५३. कतमं तस्मिं समये सम्पजञ्ञं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा

(संस्कृतच्छाया)५०. कतमा तस्मिन् समये कायर्जुकता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य ऋजुता ऋजुकत्वम् अजिह्मता अवक्रता अकुटिलता – इयं तस्मिन् समये कायर्जुकता भवति।

५१. कतमा तस्मिन् समये चित्तर्जुकता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य ऋजुता ऋजुकत्त्वम् अजिह्मता अवक्रता अकुटिलता – इयं तस्मिन् समये चित्तर्जुकता भवति।

५२. कतमा तस्मिन् समये स्मृतिर्भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति:– इयं तस्मिन् समये स्मृतिर्भवति।

५३. कतमं तस्मिन् समये सम्प्रजन्यं भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा

(हिन्दी)५०.उस समय कौन सी चैतसिकों की सरलता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध की सरल आकार में प्रवर्तित होना, सरल आकार में प्रवर्तित होने का भाव, गोमुत्र की तरह तिरछा पन का अभाव, अवक्रता(वक्र चन्द्र का अभाव), अकुटिलता है- यही उस समय काय-ऋजुकता होती है।

५१. उस समय कौन सी चित्त-ऋजुकता होती है? जो उस समय विज्ञान-स्कन्ध की सरल आकार में प्रवर्तित होना, सरल आकार में प्रवर्तित होने का भाव, गोमुत्र की तरह तिरछापन का अभाव, अवक्रता(वक्र चन्द्र का अभाव), अकुटिलता है- यही उस समय चित्त-ऋजुकता होती है।

५२. उस समय कौन सी स्मृति होती है? जो उस समय स्मृति, अनुस्मृति(अतीत धर्मों का स्मरण), विचारणा, स्मरण करना, मन में धारण करना, बार-बार दोहराना, अविस्मरण की अवस्था, अविक्षिप्तता, स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति है- वही उस समय स्मृति होती है।

५३. उस समय कौन सा सम्प्रजन्य होता है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि

पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये सम्पजञ्ञं होति।

५४. कतमो तस्मिं समये समथो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये समथो होति।

५५. कतमा तस्मिं समये विपस्सना होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं तस्मिं समये विपस्सना होति।

(संस्कृतच्छाया) प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– इदं तस्मिन् समये सम्प्रजन्यं भवति।

५४. कतम: तस्मिन् समये शमथो भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: – अयं तस्मिन् समये शमथो भवति।

५५. कतमा तस्मिन् समये विपश्यना भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– इयं तस्मिन् समये विपश्यना भवति।

(हिन्दी) धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय सम्प्रजन्य होता है।

५४. उस समय कौन सा शमथ(चित्त की शान्ति) होता है? जो उस समय चित्त की (आलम्बन पर) स्थिति, संस्थिति(सुदृढ़स्थिति), अवस्थिति, अचञ्चलता, अविक्षेप, शान्त चित्त वाला, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल, सम्यक्समाधि है - यही उस समय शमथ होता है।

५५. उस समय कौन सी विपश्यना होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान),अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय विपश्यना होती है।

५६. कतमो तस्मिं समये पग्गाहो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – अयं तस्मिं समये पग्गाहो होति।

५७. कतमो तस्मिं समये अविक्खेपो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये अविक्खेपो होति।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

पदभाजनीयं निट्ठितं।

पठमभाणवारो।

(संस्कृतच्छाया) ५६. कतम: तस्मिन् समये प्रग्राहो भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिक: वीर्यारम्भ: निष्क्रम: पराक्रम: उद्यम: व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राह: वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायाम: – अयं तस्मिन् समये प्रग्राहो भवति।

५७. कतम: तस्मिन् समये अविक्षेपो भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: – अयं तस्मिन् समये अविक्षेपो भवति।

ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

पदभाजनीयम् निष्ठितम्।

प्रथमभाणवार:।

(हिन्दी) ५६. उस समय कौन सा प्रग्राह(पकड़) होता है? जो उस समय वीर्य रूपी चैतसिक का आरम्भ, प्रयत्न, पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रत्यन करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल सम्यग्व्यायाम है - यही उस समय प्रग्राह होता है।

५७. उस समय कौन सा अविक्षेप होता है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति, अवस्थिति, अचंचलता, अविक्षेप, शान्त चित्त वाला, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल, सम्यक्समाधि है - यही उस समय अविक्षेप होता है।

अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

पदभाजनीय समाप्त।

प्रथमभाणवार।

कोट्ठासवारो

५८. तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, पञ्चङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

५९. कतमे तस्मिं समये चत्तारो खन्धा होन्ति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो।

६०. कतमो तस्मिं समये वेदनाक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं

(संस्कृतच्छाया) कोष्ठांसवार: ५८. तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, अष्टेन्द्रियाणि भवन्ति, पञ्चाङ्गिकं ध्यानं भवति, पञ्चाङ्गिको मार्गो भवति, सप्त बलानि भवन्ति, त्रयो हेतव: भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति, एका वेदना भवति, एका संज्ञा भवति, एका चेतना भवति, एकं चित्तं भवति, एको वेदनास्कन्धो भवति, एक: संज्ञास्कन्धो भवति, एक: संस्कारस्कन्धो भवति, एको विज्ञानस्कन्धो भवति, एकं मनआयतनं भवति, एकं मनइन्द्रियं भवति, एको मनोविज्ञानधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला:।

५९. कतमे तस्मिन् समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति? वेदनास्कन्ध:, संज्ञास्कन्ध:, संस्कारस्कन्ध:, विज्ञानस्कन्ध:।

६०. कतम: तस्मिन् समये वेदनास्कन्धो भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं

(हिन्दी) ५८. उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, आठ-इन्द्रियाँ होती हैं, पाँच अंगों वाला ध्यान होता है, पाँच अंगों वाला मार्ग होता है, सात बल होते हैं, तीन हेतुएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है, एक वेदना होती है, एक संज्ञा होती है, एक चेतना होती है, एक चित्त होता है, एक वेदनास्कन्ध होता है, एक संज्ञास्कन्ध होता है, एक संस्कारस्कन्ध होता है, एक विज्ञानस्कन्ध होता है, एक मनआयतन होता है, एक मन-इन्द्रिय होती है, एक मनोविज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म होते हैं- ये धर्म कुशल हैं।

५९. उस समय कौन से चार स्कन्ध होते हैं? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध।

६०. उस समय कौन सा वेदनास्कन्ध होता है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख एवं चित्त के

सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदनाक्खन्धो होति।

६१. कतमो तस्मिं समये सञ्ञाक्खन्धो होति? या तस्मिं समये सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञाक्खन्धो होति।

६२. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो;

(संस्कृतच्छाया) सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – अयं तस्मिन् समये वेदनास्कन्धो भवति।

६१. कतम: तस्मिन् समये संज्ञास्कन्धो भवति? या तस्मिन् समये संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्त्वम् – अयं तस्मिन् समये संज्ञास्कन्धो भवति।

६२. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचार: प्रीति: चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टि: सम्यक्सङ्कल्प: सम्यग्व्यायाम: सम्यक्स्मृति: सम्यक्समाधि: श्रद्धाबलं वीर्यबलं स्मृतिबलं समाधिबलं प्रज्ञाबलं ह्रीबलम् अपत्राप्यबलम् अलोभ: अद्वेष: अमोह: अनभिध्या अब्यापाद: सम्यग्दृष्टि: ह्री: अपत्राप्यं कायप्रश्रब्धि: चित्तप्रश्रब्धि: कायलघुता चित्तलघुता कायमृदुता चित्तमृदुता कायकर्मण्यता चित्तकर्मण्यता कायप्रागुण्यता चित्तप्रागुण्यता कायर्जुकता चित्तर्जुकता स्मृति: सम्प्रजन्यं शमथ: विपश्यना प्रग्राह: अविक्षेप:;

(हिन्दी) संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक, सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्दमयी एवं सुखमयी वेदना है- यही उस समय वेदनास्कन्ध होता है।

६१. उस समय कौन स संज्ञा-स्कन्ध होता है? जो उस समय संज्ञा (अनुभव), भली-भाँती से जानना, भली-भाँति से जानने की स्थिति है- यही उस समय संज्ञा-स्कन्ध होता है।

६२. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्येन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, प्रज्ञेन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यक्संकल्प, सम्यक्व्यायाम, सम्यक्स्मृति:, सम्यक्समाधि, श्रद्धाबल, वीर्यबल, स्मृतिबल, समाधिबल, प्रज्ञाबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल, अलोभ, अद्वेष, अमोह, अनभिध्या, अव्यापाद, सम्यग्दृष्टि, ह्री, अपत्राप्य, कायप्रश्रब्धि, चित्तप्रश्रब्धि, कायलघुता, चित्तलघुता, कायमृदुता, चित्तमृदुता, कायकर्मण्यता, चित्तकर्मण्यता, कायप्रागुण्यता, चित्तप्रागुण्यता, काय-ऋजुकता, चित्त-ऋजुकता, स्मृति, सम्प्रज्ञान, शमथ, विपश्यना, प्रग्राह, अविक्षेप है;

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति।

६३. कतमो तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धो होति ? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धो होति।

इमे तस्मिं समये चत्तारो खन्धा होन्ति।

६४. कतमानि तस्मिं समये द्वायतनानि होन्ति? मनायतनं धम्मायतनं।

६५. कतमं तस्मिं समये मनायतनं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनायतनं होति।

(संस्कृतच्छाया) ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति।

६३. कतमः तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धो भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातुः – अयं तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धो भवति।

इमे तस्मिन् समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति।

६४. कतमे तस्मिन् समये द्वे आयतने भवतः? मनआयतनं धर्मायतनम्।

६५. कतमं तस्मिन् समये मनआयतनं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातुः– इदं तस्मिन् समये मनआयतनं भवति।

(हिन्दी) अथवा उस समय में वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध और विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है।

६३. उस समय कौन सा विज्ञानस्कन्ध होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, स्वच्छ, मन, मन-आयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय विज्ञानस्कन्ध होता है। उस समय ये चार स्कन्ध होते हैं।

६४. उस समय कौन से दो आयतन होते हैं? मनआयतन, धर्मायतन।

६५. उस समय कौन सा मन-आयतन होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, स्वच्छ, मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय मन-आयतन होता है।

६६. कतमं तस्मिं समये धम्मायतनं होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो– इदं तस्मिं समये धम्मायतनं होति।
इमानि तस्मिं समये द्वायतनानि होन्ति।

६७. कतमा तस्मिं समये द्वे धातुयो होन्ति? मनोविञ्ञाणधातु, धम्मधातु।

६८. कतमा तस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु– अयं तस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु होति।

६९. कतमा तस्मिं समये धम्मधातु होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – अयं तस्मिं समये धम्मधातु होति।
इमा तस्मिं समये द्वे धातुयो होन्ति।

७०. कतमे तस्मिं समये तयो आहारा होन्ति? फस्साहारो, मनोसञ्चेतनाहारो , विञ्ञाणाहारो।

(संस्कृतच्छाया) ६६. कतमं तस्मिन् समये धर्मायतनं भवति? वेदनास्कन्धः, संज्ञास्कन्धः, संस्कारस्कन्धः – इदं तस्मिन् समये धर्मायतनं भवति।
इमे तस्मिन् समये द्वे आयतने भवतः।

६७. कतमे तस्मिन् समये द्वे धातू भवतः? मनोविज्ञानधातुः, धर्मधातुः।

६८. कतमः तस्मिन् समये मनोविज्ञानधातुः भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातुः – अयं तस्मिन् समये मनोविज्ञानधातुः भवति।

६९. कतमः तस्मिन् समये धर्मधातुः भवति? वेदनास्कन्धः, संज्ञास्कन्धः, संस्कारस्कन्धः– अयं तस्मिन् समये धर्मधातुः भवति।
इमौ तस्मिन् समये द्वौ धातू भवतः।

७०. कतमे तस्मिन् समये त्रयः आहारा भवन्ति? स्पर्शाहारः, मनोसञ्चेतनाहारः, विज्ञानाहारः।

(हिन्दी)६६. उस समय कौन सा धर्मायतन होता है? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध है- यही उस समय धर्मायतन होता है।
यही उस समय दो आयतन होते हैं।
६७. उस समय कौन से दो धातुएँ होते है? मनोविज्ञानधातु, धर्मधातु।
६८. उस समय कौन सी मनोविज्ञानधातु होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, स्वच्छ, मन, मन-आयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय मनोविज्ञानधातु होती है।
६९. उस समय कौन सी धर्मधातु होती है? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध है- यही उस समय धर्मधातु होती है।
यही उस समय दो धातुएँ होती हैं।
७०. उस समय कौन से तीन आहार होते हैं? स्पर्श-आहार, मनोसञ्चेतना-आहार, विज्ञान-आहार।

७१. कतमो तस्मिं समये फस्साहारो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्साहारो होति।

७२. कतमो तस्मिं समये मनोसञ्चेतनाहारो होति? या तस्मिं समये चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये मनोसञ्चेतनाहारो होति।

७३. कतमो तस्मिं समये विञ्ञाणाहारो होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये विञ्ञाणाहारो होति।
इमे तस्मिं समये तयो आहारा होन्ति।

७४. कतमानि तस्मिं समये अट्ठिन्द्रियानि होन्ति? सद्धिन्द्रियं, वीरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं, मनिन्द्रियं, सोमनस्सिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं।

(संस्कृतच्छाया) ७१. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शाहारो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शाहारो भवति।

७२.कतम: तस्मिन् समये मनोसञ्चेतनाहारो भवति? या तस्मिन् समये चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम्– अयं तस्मिन् समये मनोसञ्चेतनाहारो भवति।

७३. कतम: तस्मिन् समये विज्ञानाहारो भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– अयं तस्मिन् समये विज्ञानाहारो भवति।
इमे तस्मिन् समये त्रय: आहारा भवन्ति।

७४. कतमानि तस्मिन् समये अष्टेन्द्रियानि भवन्ति? श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं मनइन्द्रियं सौमनस्येन्द्रियं जीवितेन्द्रियम्।

(हिन्दी) ७१. उस समय कौन सा स्पर्श आहार होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श कराना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय स्पर्श-आहार होता है।

७२. उस समय कौन सा मनोसञ्चेतना आहार होता है? जो उस समय चेतना, जो भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है-- यही उस समय मनोसञ्चेतना आहार होता है।

७३. उस समय कौन सा विज्ञान आहार होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, स्वच्छ, मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध तथा उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय विज्ञान आहार होता है।

यही उस समय तीन आहार होते हैं।

७४. उस समय कौन सी आठ-इन्द्रियाँ होती है? श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, सौमनस्य-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय है।

७५. कतमं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति।

७६. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

७७. कतमं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया)७५. कतमं तस्मिन् समये श्रद्धेन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये श्रद्धा श्रद्दहनम् अवकल्पनम् अभिप्रसाद: श्रद्धा श्रद्धेन्द्रियं श्रद्धाबलम् – इदं तस्मिन् समये श्रद्धेन्द्रियं भवति ।

७६. कतमं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वम् धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायाम: – इदं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति।

७७. कतमं तस्मिन् समये स्मृतीन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति:– इदं तस्मिन् समये स्मृतीन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) ७५. उस समय कौन सी श्रद्धा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय श्रद्धा, विश्वास करना, दृढ धारण रखना, अत्यधिक श्रद्धा, निर्मलता, श्रद्धा, श्रद्धा-इन्द्रिय, श्रद्धा-बल है- यही उस समय श्रद्धा-इन्द्रिय होती है।

७६. उस समय कौन सी वीर्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम से परिपूर्ण रहना), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है - यही उस समय वीर्य-इन्द्रिय होती है।

७७. उस समय कौन सी स्मृति-इन्द्रिय होती है? जो उस समय स्मृति, अनुस्मृति(अतीत धर्मों का स्मरण), विचारणा, स्मरण करना, मन में धारण करना, बार-बार दोहराना, अविस्मरण की अवस्था, अविक्षिप्तता, स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति है- यही उस समय स्मृति-इन्द्रिय होती है।

७८. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति।

७९. कतमं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि– इदं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति।

८०. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया) ७८. कतमं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: – इदं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति।

७९. कतमं तस्मिन् समये प्रज्ञेन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– इदं तस्मिन् समये प्रज्ञेन्द्रियं भवति।

८०. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) ७८. उस समय कौन सी समाधि-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), सुदृढ़ स्थिति, अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त (चित्त की शान्त अवस्था), चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्ति, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल, सम्यक्समाधि है- यही उस समय समाधि-इन्द्रिय है।

७९. उस समय कौन सी प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है।

८०. उस समय कौन सी मनइन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय मनइन्द्रिय होती है।

८१. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

८२. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति ।

इमानि तस्मिं समये अट्ठिन्द्रियानि होन्ति।

८३. कतमं तस्मिं समये पञ्चङ्गिकं झानं होति? वितक्को, विचारो, पीति, सुखं, चित्तस्सेकग्गता।

८४. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

(संस्कृतच्छाया)८१. कतमं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इदं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति।

८२. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? य: तेषाम् अरूपिणां धर्माणाम् आयु: स्थिति: यपना यापना ईरणं वर्तना पालना जीवितं जीवितेन्द्रियम् – इदं तस्मिन् समये जीवितीन्द्रियं भवति।

इमानि तस्मिन् समये अष्टेन्द्रियानि भवन्ति।

८३. कतमं तस्मिन् समये पञ्चाङ्गिकं ध्यानं भवति? वितर्क:, विचार:, प्रीति:, सुखम्, चित्तस्यैकाग्रता।

८४. कतम: तस्मिन् समये वितर्को भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पण: व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपनं सम्यक्सङ्कल्प:– अयं तस्मिन् समये वितर्को भवति।

(हिन्दी)८१. उस समय कौन सी सौमनस्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुख की अनुभूति, चैतसिक संस्पर्श से उत्पन्न आनन्दमयि एवं सुखमयि वेदना है- यही उस समय सौमनस्य-इन्द्रिय होती है।

८२. उस समय कौन सी जीवित-इन्द्रिय होती है? जो उन अरूपी धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत होना, गुजरना, जीवन-स्थिति, बढ़ना, विद्यमानता, पालना, जीवन, जीवित-इन्द्रिय है- यही उस समय जीवित-इन्द्रिय होती है।

यही उस समय आठ-इन्द्रियाँ होती है।

८३. उस समय कौन सा पाँच-अंगों वाला ध्यान होता है? वितर्क, विचार, प्रीति, सुख, चित्त की एकाग्रता है।

८४. उस समय कौन सा वितर्क होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), तर्क-वितर्क(किसी आलम्बन पर चित्त को लगाना), किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना, चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना और सम्यक् संकल्प है- यही उस समय वितर्क होता है।

८५. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

८६. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये पीति होति।

८७. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

८८. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

इदं तस्मिं समये पञ्चङ्गिकं झानं होति।

(संस्कृतच्छाया)८५. कतम: तस्मिन् समये विचारो भवति? य: तस्मिन् समये चारो विचार: अनुविचार: उपविचार: चित्तस्य अनुसन्धानत्वम् अनुप्रेक्षनत्वम् – अयं तस्मिन् समये विचारो भवति।

८६. कतमा तस्मिन् समये प्रीति: भवति? या तस्मिन् समये प्रीति: प्रामोद्याम् आमोदनं प्रमोदनं हास: प्रहासो वित्ति: औदग्र्यम् आत्तमनता चित्तस्य– इयं तस्मिन् समये प्रीति: भवति।

८७. कतमं तस्मिन् समये सुखं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये सुखं भवति।

८८. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: – इयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकग्रता भवति।

इदं तस्मिन् समये पञ्चाङ्गिकं ध्यानं भवति।

(हिन्दी) ८५. उस समय कौन सा विचार होता है? जो उस समय गतिशील होना, विचार, आलम्बन के पीछे-पीछे विचरण करना, आलम्बन के समीप विचरण करना, चित्त की खोजपरक प्रवृत्ति एवं चित्त की गम्भीर चिन्तन की अवस्था है- यही उस समय विचार होता है।

८६. उस समय कौन सी प्रीति होती है? जो उस समय प्रीति, प्रसन्नता, आमोद्य, प्रमोदता, हँसी, प्रहास, वित्ति (प्रसन्नता), आनन्द से मन का ऊपर उठ जाने की स्थिति एवं चित्त की आत्तमनता है- यही उस समय प्रीति होती है।

८७. उस समय कौन सा सुख होता है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्तसंस्पर्श के द्वारा उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय सुख होता है।

८८. उस समय कौन सा चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति(सम्यक् रूप से स्थिति), सुदृढ़ स्थिति, अचञ्चलता, अविक्षेप, चित्त की शान्त अवस्था, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

यही उस समय पाँच अंगों वाला ध्यान होता है।

८९. कतमो तस्मिं समये पञ्चङ्गिको मग्गो होति? सम्मादिट्ठि, सम्मासङ्कप्पो, सम्मावायामो, सम्मासति, सम्मासमाधि।

९०. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

९१. कतमो तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो– अयं तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति।

(संस्कृतच्छाया)८९. कतम: तस्मिन् समये पञ्चाङ्गिको मार्गो भवति? सम्यग्दृष्टि:, सम्यक्सङ्कल्प:, सम्यग्व्यायाम:, सम्यक्स्मृति:, सम्यक्समाधि:।

९०. कतमा तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या-चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– अयं तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति ।

९१. कतम: तस्मिन् समये सम्यक्संकल्पो भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: संकल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपणं सम्यक्संकल्प: – अयं तस्मिन् समये सम्यक्संकल्प: भवति ।

(हिन्दी) ८९. उस समय कौन सा पाँच अंगों वाला मार्ग होता है? सम्यग्दृष्टि, सम्यक्संकल्प, सम्यग्व्यायाम, सम्यक्-स्मृति, सम्यक्समाधि।

९०. उस समय कौन सी सम्यग्दृष्टि होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान),अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय सम्यग्दृष्टि होती है।

९१. उस समय कौन सा सम्यक्संकल्प होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), अर्पण (किसी आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता), व्यार्पण(किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना), चित्त का अभिनिरोपण (चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना) तथा सम्यक् संकल्प है- यही उस समय सम्यक् संकल्प होता है।

९२. कतमो तस्मिं समये सम्मावायामो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – अयं तस्मिं समये सम्मावायामो होति।

९३. कतमा तस्मिं समये सम्मासति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति– अयं तस्मिं समये सम्मासति होति।

९४. कतमो तस्मिं समये सम्मासमाधि होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये सम्मासमाधि होति।अयं तस्मिं समये पञ्चङ्गिको मग्गो होति।

(संस्कृतच्छाया)९२. कतम: तस्मिन् समये सम्यग्व्यायामो भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिक: वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यम: व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायाम:– अयं तस्मिन् समये सम्यग्व्यायाम: भवति।

९३. कतमा तस्मिन् समये सम्यक्स्मृति: भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: सरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति: – अयं तस्मिन् समये सम्यक्स्मृति: भवति ।

९४. कतम: तस्मिन् समये सम्यक्समाधि: भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: – अयं तस्मिन् समये सम्यक्समाधि: भवति । अयं तस्मिन् समये पञ्चाङ्गिको मार्गो भवति।

(हिन्दी)९२. उस समय कौन सा सम्यग्व्यायाम होता है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न, पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामथ्य, धैर्य, अशिथिलपराक्रमत्वम् (सुदृढ़ पराक्रम की परिपूर्ण रहने का भाव), अनिक्षिप्तछन्द का भाव (सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा), अनिक्षिप्तधुर का भाव (सुदृढ़ वीर्य वाला होना), सुदृढ़ प्रयत्न, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है - यही उस समय सम्यग्व्यायाम होता है।

९३. उस समय कौन सी सम्यक्स्मृति होती है? जो उस समय स्मृति, अतीत धर्मों का स्मरण, विचारना, स्मरण करना, मन में धारण करना, बार-बार दोहराना, अविस्मरण की अवस्था, अविक्षिप्तता, स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति है- यही उस समय सम्यक्स्मृति है।

९४. उस समय कौन सी सम्यक्समाधि होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), सुदृढ़ स्थिति, अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त (चित्त की शान्त अवस्था), चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्ति, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल, सम्यक्समाधि है- यही उस समय सम्यक्समाधि है।

यही उस समय पाँच अंगों वाला मार्ग होता है।

९५. कतमानि तस्मिं समये सत्त बलानि होन्ति? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं, हिरिबलं, ओत्तप्पबलं।

९६. कतमं तस्मिं समये सद्धाबलं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धाबलं होति।

९७. कतमं तस्मिं समये वीरियबलं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियबलं होति।

९८. कतमं तस्मिं समये सतिबलं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति – इदं तस्मिं समये सतिबलं होति।

(संस्कृतच्छाया)९५. कतमानि तस्मिन् समये सप्त बलानि भवन्ति? श्रद्धाबलम्, वीर्यबलम्, स्मृतिबलम्, समाधिबलम्, प्रज्ञाबलम्, ह्रीबलम्, अपत्राप्यबलम् ।

९६. कतमं तस्मिन् समये श्रद्धाबलं भवति? या तस्मिन् समये श्रद्धा श्रद्दहनम् अवकल्पनम् अभिप्रसाद: श्रद्धा श्रद्धेन्द्रियं श्रद्धाबलम् – इदं तस्मिन् समये श्रद्धाबलं भवति।

९७. कतमं तस्मिन् समये वीर्यबलं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यम: व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वम् धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्वायाम:– इदं तस्मिन् समये वीर्यबलं भवति।

९८. कतमं तस्मिन् समये स्मृतिबलं भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति:– इदं तस्मिन् समये स्मृतिबलं भवति।

(हिन्दी) ९५. उस समय कौन से सात बल होते हैं? श्रद्धाबल, वीर्यबल, स्मृतिबल, समाधिबल, प्रज्ञाबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल।

९६. उस समय कौन सा श्रद्धाबल होता है? जो उस समय श्रद्धा, विश्वास करना, दृढ़ धारणा रखना, अत्यधिक श्रद्धा, श्रद्धा, श्रद्धेन्द्रिय, श्रद्धाबल है- यही उस समय श्रद्धाबल है।

९७. उस समय कौन सा वीर्यबल होता है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न, पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामथ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम की दशा), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है- यही उस समय वीर्यबल होता है।

९८. उस समय कौन सा स्मृतिबल होता है? जो उस समय स्मृति, अनुस्मृति, विचारणा, स्मरण करना, मन में धारण करना, बार-बार दोहराना, अविस्मरण की अवस्था, स्मृति के विप्रलोप का अभाव, स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति है- यही उस समय स्मृति-बल होता है।

९९. कतमं तस्मिं समये समाधिबलं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिबलं होति।

१००. कतमं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि – इदं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति।

१०१. कतमं तस्मिं समये हिरिबलं होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये हिरिबलं होति।

(संस्कृतच्छाया)९९. कतमं तस्मिन् समये समाधिबलं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: – इदं तस्मिन् समये समाधिबलं भवति।

१००. कतमं तस्मिन् समये प्रज्ञाबलं भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि:– इदं तस्मिन् समये प्रज्ञाबलं भवति ।

१०१. कतमं तस्मिन् समये ह्रीबलं भवति? यत् तस्मिन् समये जिह्रेति ह्रीतव्येन जिह्रेति पापकानाम् अकुशलानां धर्माणां समापत्यै– इदं तस्मिन् समये ह्रीबलं भवति।

(हिन्दी)९९.उस समय कौन सा समाधि-बल होता है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति, सुदृढ़ स्थिति, अचंचलता, अविक्षेप, चित्त की शान्त अवस्था, चित्त की शान्ति, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल, सम्यक्समाधि है- यही उस समय समाधि-बल होता है।

१००. उस समय कौन सा प्रज्ञाबल होता है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), अनुशीलन, धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान),अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय प्रज्ञाबल होता है।

१०१. उस समय कौन सा ह्री बल होता है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में (आत्म) लज्जा करता है, (आत्म) लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है- यही उस समय ह्रीबल होता है।

१०२. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति।

इमानि तस्मिं समये सत्त बलानि होन्ति।

१०३. कतमे तस्मिं समये तयो हेतू होन्ति? अलोभो, अदोसो, अमोहो।

१०४. कतमो तस्मिं समये अलोभो होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अलोभो होति।

१०५. कतमो तस्मिं समये अदोसो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अदोसो होति।

१०६. कतमो तस्मिं समये अमोहो होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो

(संस्कृतच्छाया)१०२. कतमं तस्मिन् समये अपत्राप्यबलं भवति? यत् तस्मिन् समये अपत्राप्यति अपत्राप्यव्येन अपत्राप्यति पापकानाम् अकुशलानां धर्मणां समापत्त्यै – इदं तस्मिन् समये अपत्राप्यबलं भवति।

इमानि तस्मिन् समये सप्त बलानि भवन्ति।

१०३. कतमे तस्मिन् समये त्रयो हेतवो भवन्ति? अलोभः, अद्वेषः, अमोहः।

१०४. कतमः तस्मिन् समये अलोभो भवति? यः तस्मिन् समये अलोभः अलोभनम् अलुब्धितत्वम् असरागः असंरञ्जना असंरञ्जनत्वम् अनभिध्या अलोभः कुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये अलोभो भवति।

१०५. कतमः तस्मिन् समये अद्वेषो भवति? यः तस्मिन् समये अद्वेषः अदूषणा अदूषितत्वम् अव्यापादः अव्यापाद्यम् अद्वेषः कुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये अद्वेषो भवति।

१०६. कतमः तस्मिन् समये अमोहो भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचयः

(हिन्दी)१०२. उस समय कौन सा अपत्राप्य-बल होता है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में सामाजिक लज्जा करता है, समाजिक लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है- यही उस समय अपत्राप्य-बल होता है।यही उस समय सात बल होते हैं।

१०३. उस समय कौन सी तीन हेतुएँ होती है? अलोभ, अद्वेष, अमोह।

१०४. उस समय कौन सा अलोभ होता है? जो उस समय अलोभ, लोभ का न होना, लोभ से मुक्त होने की अवस्था, संराग से रहित, राग का अभाव, अनासक्तिभाव, तृष्णा का अभाव और जो कुशलमूल अलोभ है- यही उस समय अलोभ होता है।

१०५. उस समय कौन सा अद्वेष होता है? जो उस समय अद्वेष, द्वेष का न होना, द्वेष से मुक्त होने की अवस्था, अव्यापाद (पर विनाश चिन्ता का अभाव), तुच्छता का अभाव और कुशलमूल के रूप में जो अद्वेष है- यही उस समय अद्वेष होता है।

१०६. उस समय कौन सा अमोह होता है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य

पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि– अयं तस्मिं समये अमोहो होति।

इमे तस्मिं समये तयो हेतू होन्ति।

१०७. कतमो तस्मिं समये एको फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये एको फस्सो होति।

१०८. कतमा तस्मिं समये एका वेदना होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना– अयं तस्मिं समये एका वेदना होति।

(संस्कृतच्छाया) प्रविचय: धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोह: धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: – अयं तस्मिन् समये अमोहो भवति ।

इमे तस्मिन् समये त्रय: हेतव: भवन्ति।

१०७. कतम: तस्मिन् समये एक: स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये एक: स्पर्शो भवति।

१०८. कतमा तस्मिन् समये एका वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये एका वेदना भवति।

(हिन्दी) आदि का चयन), अनुशीलन, धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि का धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय और सम्यग्दृष्टि है– यही उस समय अमोह होता है।

यही उस समय तीन हेतुएँ होती हैं।

१०७. उस समय कौन सा एक स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श कराना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय एक स्पर्श होता है।

१०८. उस समय कौन सी एक वेदना होती है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख एवं चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक, सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय एक वेदना होती है।

१०९. कतमा तस्मिं समये एका सञ्ञा होति? या तस्मिं समये सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये एका सञ्ञा होति।

११०. कतमा तस्मिं समये एका चेतना होति? या तस्मिं समये चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये एका चेतना होति।

१११. कतमं तस्मिं समये एकं चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये एकं चित्तं होति।

११२. कतमो तस्मिं समये एको वेदनाक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये एको वेदनाक्खन्धो होति।

(संस्कृतच्छाया) १०९. कतमा तस्मिन् समये एका संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्त्वम्– इयं तस्मिन् समये एका संज्ञा भवति।

११०. कतमा तस्मिन् समये एका चेतना भवति? या तस्मिन् समये चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम् – अयं तस्मिन् समये एका चेतना भवति।

१११. कतमं तस्मिन् समये एकं चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – इदं तस्मिन् समये एकं चित्तं भवति।

११२.कतम: तस्मिन् समये एक: वेदनास्कन्ध: भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये एक: वेदनास्कन्ध: भवति।

(हिन्दी) १०९. उस समय कौन सी एक संज्ञा होती है? जो उस समय संज्ञा, भली प्रकार से जानना, भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय एक संज्ञा होती है।

११०. उस समय कौन सी एक चेतना होती है? जो उस समय चेतना, भली प्रकार से चित्त का सजग होना, भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय एक चेतना होती है।

१११. उस समय कौन सा एक चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय एक चित्त होता है।

११२. उस समय कौन सा एक वेदनास्कन्ध होता है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख एवं चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय वेदनास्कन्ध होता है।

११३. कतमो तस्मिं समये एको सञ्ञाक्खन्धो होति? या तस्मिं समये सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये एको सञ्ञाक्खन्धो होति।

११४. कतमो तस्मिं समये एको सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये एको सङ्खारक्खन्धो होति।

(संस्कृतच्छाया) ११३. कतम: तस्मिन् समये एक: संज्ञास्कन्धो भवति? या तस्मिन् समये संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्वम् – अयं तस्मिन् समये एक: संज्ञास्कन्धो भवति।

११४. कतम: तस्मिन् समये एक: संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्क: विचार: प्रीति: चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टि: सम्यक्सङ्कल्प: सम्यग्व्यायाम: सम्यक्स्मृति: सम्यक्समाधि: श्रद्धाबलं वीर्यबलं स्मृतिबलं समाधिबलं प्रज्ञाबलं ह्रीबलं अपत्राप्यबलं अलोभ: अद्वेष: अमोह: अनभिध्या अब्यापाद: सम्यग्दृष्टि: ह्री अपत्राप्यं कायप्रश्रद्धि चित्तप्रश्रद्धि कायलघुता चित्तलघुता कायमृदुता चित्तमृदुता कायकर्मण्यता चित्तकर्मण्यता कायप्रागुण्यता चित्तप्रागुण्यता कायर्जुकता चित्तर्जुकता स्मृति: सम्प्रजन्यं शमथ: विपश्यना प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये एक: संस्कारस्कन्धो भवति।

(हिन्दी) ११३. उस समय कौन सा एक संज्ञास्कन्ध होता है? जो उस समय जानना, भली प्रकार से जानना, भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय एक संज्ञास्कन्ध होता है।

११४. उस समय कौन सा एक संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्येन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, प्रज्ञेन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यक्संकल्प, सम्यग्व्यायाम, सम्यक्स्मृतिः, सम्यक्समाधि, श्रद्धाबल, वीर्यबल, स्मृतिबल, समाधिबल, प्रज्ञाबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल, अलोभ, अद्वेष, अमोह, अनभिध्या, अव्यापाद, सम्यग्दृष्टि, ह्री, अपत्राप्य, कायप्रश्रब्धि, चित्तप्रश्रब्धि, कायलघुता, चित्तलघुता, कायमृदुता, चित्तमृदुता, कायकर्मण्यता, चित्तकर्मण्यता, कायप्रागुण्यता, चित्तप्रागुण्यता, काय-ऋजुकता, चित्त-ऋजुकता, स्मृति, सम्प्रज्ञान, शमथ, विपश्यना, प्रग्राह, अविक्षेप है; ये अथवा वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय एक संस्कारस्कन्ध होता है।

११५. कतमो तस्मिं समये एको विञ्ञाणक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये एको विञ्ञाणक्खन्धो होति।

११६. कतमं तस्मिं समये एकं मनायतनं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु– इदं तस्मिं समये एकं मनायतनं होति।

११७. कतमं तस्मिं समये एकं मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये एकं मनिन्द्रियं होति।

११८. कतमा तस्मिं समये एका मनोविञ्ञाणधातु होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो

(संस्कृतच्छाया) ११५. कतम: तस्मिन् समये एको विज्ञानस्कन्धो भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – अयं तस्मिन् समये एको विज्ञानस्कन्धो भवति।

११६. कतमं तस्मिन् समये एकं मनआयतनं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये एकं मनआयतनं भवति।

११७. कतमं तस्मिन् समये एकं मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – इदं तस्मिन् समये एकं मनइन्द्रियं भवति।

११८. कतम: तस्मिन् समये एको मनोविज्ञानधातु: भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो

(हिन्दी) ११५. उस समय कौन सा एक विज्ञानस्कन्ध होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, स्वच्छ, मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय एक विज्ञानस्कन्ध होता है।

११६. उस समय कौन सा एक मन-आयतन होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मन-आयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय एक मन-आयतन होता है।

११७. उस समय कौन सी एक मन-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मन-आयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय एक मन-इन्द्रिय होती है।

११८. उस समय कौन सी एक मन-विज्ञानधातु होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत,

मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये एका मनोविञ्ञाणधातु होति।

११९. कतमं तस्मिं समये एकं धम्मायतनं होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो , सङ्खारक्खन्धो – इदं तस्मिं समये एकं धम्मायतनं होति।

१२०. कतमा तस्मिं समये एका धम्मधातु होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – अयं तस्मिं समये एका धम्मधातु होति। ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

सुञ्ञतवारो

१२१. तस्मिं खो पन समये धम्मा होन्ति, खन्धा होन्ति, आयतनानि होन्ति, धातुयो होन्ति, आहारा होन्ति, इन्द्रियानि होन्ति, झानं होति, मग्गो होति, बलानि होन्ति, हेतू होन्ति,

(संस्कृतच्छाया) मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– अयं तस्मिन् समये एको मनोविज्ञानधातु: भवति।

११९. कतमं तस्मिन् समये एकं धर्मायतनं भवति? वेदनास्कन्ध:, संज्ञास्कन्ध:, संस्कारस्कन्ध: – इदं तस्मिन् समये एकं धर्मायतनं भवति।

१२०. कतम: तस्मिन् समये एको धर्मधातु: भवति? वेदनास्कन्ध:, संज्ञास्कन्ध:, संस्कारस्कन्ध: – अयं तस्मिन् समये एको धर्मधातु: भवति। ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

१२१. तस्मिन् खलु पुन: समये धर्मा: भवन्ति, स्कन्धा: भवन्ति, आयतनानि भवन्ति, धातवो भवन्ति, आहारा: भवन्ति, इन्द्रियाणि भवन्ति, ध्यानं भवति, मार्गो भवति, बलानि भवन्ति, हेतवो

(हिन्दी)मन, मन-आयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय एक मनोविज्ञानधातु होती है।

११९. उस समय कौन सा एक धर्मायतन होता है? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध है- यही उस समय एक धर्मायतन होता है।

१२०. उस समय कौन सी एक धर्मधातु होती है? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध है- यही उस समय एक धर्मधातु होती है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

१२१. उस समय धर्म होते हैं, स्कन्ध होते हैं, आयतन होती हैं, धातुएँ होती हैं, आहार होते हैं, इन्द्रियाँ होती हैं, ध्यान होता है, मार्ग होता है, बल होते हैं, हेतुएँ होती हैं, स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है,

फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वेदनाक्खन्धो होति, सञ्ञाक्खन्धो होति, सङ्खारक्खन्धो होति, विञ्ञाणक्खन्धो होति, मनायतनं होति, मनिन्द्रियं होति, मनोविञ्ञाणधातु होति, धम्मायतनं होति, धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

१२२. कतमे तस्मिं समये धम्मा होन्ति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे तस्मिं समये धम्मा होन्ति।

१२३. कतमे तस्मिं समये खन्धा होन्ति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो , सङ्खारक्खन्धो, विञ्ञाणक्खन्धो – इमे तस्मिं समये खन्धा होन्ति।

१२४. कतमानि तस्मिं समये आयतनानि होन्ति? मनायतनं, धम्मायतनं – इमानि तस्मिं समये आयतनानि होन्ति।

(संस्कृतच्छाया) भवन्ति, स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वेदनास्कन्धो भवति, संज्ञास्कन्धो भवति, संस्कारस्कन्धो भवति, विज्ञानस्कन्धो भवति, मनआयतनं भवति, मनइन्द्रियं भवति, मनोविज्ञानधातु: भवति, धर्मायतनं भवति, धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

१२२. कतमे तस्मिन् समये धर्मा: भवन्ति? वेदनास्कन्ध:, संज्ञास्कन्ध:, संस्कारस्कन्ध:, विज्ञानस्कन्ध:– इमे तस्मिन् समये धर्मा: भवन्ति ।

१२३. कतमे तस्मिन् समये स्कन्धा: भवन्ति? वेदनास्कन्ध:, संज्ञास्कन्ध:, संस्कारस्कन्ध:, विज्ञानस्कन्ध:– इमे तस्मिन् समये स्कन्धा: भवन्ति ।

१२४. कतमानि तस्मिन् समये आयतनानि भवन्ति? मनआयतनम्, धर्मायतनम्– इमे तस्मिन् समये आयतने भवत: ।

(हिन्दी) चेतना होती है, चित्त होता है, वेदनास्कन्ध होता है, संज्ञास्कन्ध होता है, संस्कारस्कन्ध होता है, विज्ञानस्कन्ध होता है, मनआयतन होता है, मनइन्द्रिय होती है, मनोविज्ञानधातु होती है, धर्मायतन होता है, धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल होते हैं।

१२२. उस समय कौन से धर्म होते हैं? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध है- यही उस समय धर्म होते हैं।

१२३ उस समय कौन से स्कन्ध होते हैं? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध है- यही उस समय स्कन्ध होते हैं।

१२४. उस समय कौन से आयतन होते हैं? मन-आयमन, धर्म-आयतन है - यही उस समय आयतन होते हैं।

१२५. कतमा तस्मिं समये धातुयो होन्ति? मनोविञ्ञाणधातु, धम्मधातु – इमा तस्मिं समये धातुयो होन्ति।

१२६. कतमे तस्मिं समये आहारा होन्ति? फस्साहारो, मनोसञ्चेतनाहारो, विञ्ञाणाहारो – इमे तस्मिं समये आहारा होन्ति।

१२७. कतमानि तस्मिं समये इन्द्रियानि होन्ति? सद्धिन्द्रियं, वीरियिन्द्रियं, सतिन्द्रियं, समाधिन्द्रियं, पञ्ञिन्द्रियं, मनिन्द्रियं, सोमनस्सिन्द्रियं, जीवितिन्द्रियं – इमानि तस्मिं समये इन्द्रियानि होन्ति।

१२८. कतमं तस्मिं समये झानं होति? वितक्को, विचारो, पीति, सुखं, चित्तस्सेकग्गता – इदं तस्मिं समये झानं होति।

१२९. कतमो तस्मिं समये मग्गो होति? सम्मादिट्ठि, सम्मासङ्कप्पो, सम्मावायामो, सम्मासति, सम्मासमाधि – अयं तस्मिं समये मग्गो होति।

(संस्कृतच्छाया) १२५. कतमे तस्मिन् समये धातवो भवन्ति? मनोविज्ञानधातुः, धर्मधातुः – इमौ तस्मिन् समये धातू भवतः।

१२६. कतमे तस्मिन् समये आहाराः भवन्ति? स्पर्श-आहारः, मनोसंचेतनाहारः, विज्ञानाहारः – इमे तस्मिन् समये आहाराः भवन्ति।

१२७. कतमानि तस्मिन् समये इन्द्रियाणि भवन्ति? श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं मनइन्द्रियं सौमनस्येन्द्रियं जीवितेन्द्रियं – इमानि तस्मिन् समये इन्द्रियाणि भवन्ति।

१२८. कतमं तस्मिन् समये ध्यानं भवति? वितर्कः, विचारः, प्रीतिः, सुखम्, चित्तस्यैकाग्रताः – इदं तस्मिन् समये ध्यानं भवति।

१२९. कतमः तस्मिन् समये मार्गो भवति? सम्यग्दृष्टिः, सम्यक्सङ्कल्पः, सम्यग्व्यायामः, सम्यक्स्मृतिः, सम्यक्समाधिः – अयं तस्मिन् समये मार्गो भवति।

(हिन्दी) १२५. उस समय कौन सी धातुएँ होती है? मनोविज्ञानधातु, धर्मधातु है - यही उस समय धातुएँ होती हैं।

१२६. उस समय कौन से आहार होते हैं? स्पर्श-आहार, मनोसंचेतना-आहार, विज्ञान-आहार है- यही उस समय आहार होते हैं।

१२७. उस समय कौन सी इन्द्रियाँ होती हैं? श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, सौमनस्य-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय है- यही उस समय इन्द्रियाँ होती हैं।

१२८. उस समय कौन सा ध्यान होता है? वितर्क, विचार, प्रीति, सुख, चित्त की एकाग्रता है- यही उस समय ध्यान होता है।

१२९. उस समय कौन सा मार्ग होता है? सम्यग्दृष्टि, सम्यक्-संकल्प, सम्यग्व्यायाम, सम्यक्स्मृति, सम्यक्समाधि है- यही उस समय मार्ग होता है।

१३०. कतमानि तस्मिं समये बलानि होन्ति? सद्धाबलं, वीरियबलं, सतिबलं, समाधिबलं, पञ्ञाबलं, हिरिबलं, ओत्तप्पबलं – इमानि तस्मिं समये बलानि होन्ति।

१३१. कतमे तस्मिं समये हेतू होन्ति? अलोभो, अदोसो, अमोहो – इमे तस्मिं समये हेतू होन्ति।

१३२. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

१३३. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जा मनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

१३४. कतमा कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जा मनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

(संस्कृतच्छाया)१३०. कतमानि तस्मिन् समये बलानि भवन्ति? श्रद्धाबलम्, वीर्यबलम्, स्मृतिबलम्, समाधिबलम्, प्रज्ञाबलम्, ह्रीबलम्, अपत्राप्यबलम् – इमानि तस्मिन् समये बलानि भवन्ति।

१३१. कतमे तस्मिन् समये हेतवो भवन्ति? अलोभः, अद्वेषः, अमोहः– इमे तस्मिन् समये हेतवो भवन्ति।

१३२ कतमः तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? यः तस्मिन् समये स्पर्शः स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

१३३. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

१३४. कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्त्वम्– इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

(हिन्दी)१३०. उस समय कौन से बल होते हैं? श्रद्धाबल, वीर्यबल, स्मृतिबल, समाधिबल, प्रज्ञाबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल है- यही उस समय बल होते हैं।

१३१. उस समय कौन सी हेतुएँ होती हैं? अलोभ, अद्वेष, अमोह है - यही उस समय हेतुये होती है।

१३२ उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श है।

१३३. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द, सुख अनुभव और चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुख की वेदना है- यही उस समय की वेदना होती है।

१३४. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न संज्ञा है, जो भली प्रकार से जानना और भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय में संज्ञा होती है।

१३५. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जा मनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

१३६. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

१३७. कतमो तस्मिं समये वेदनाक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदनाक्खन्धो होति।

१३८. कतमो तस्मिं समये सञ्ञाक्खन्धो होति? या तस्मिं समये सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञाक्खन्धो होति।

(संस्कृतच्छाया)१३५. कतमा तस्मिन् समये चेतना भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम्– इयं तस्मिन् समये चेतना भवति ।

१३६. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति।

१३७. कतम: तस्मिन् समये एको वेदनास्कन्धो भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये एक: वेदनास्कन्ध: भवति।

१३८. कतम: तस्मिन् समये एक: संज्ञास्कन्धो भवति? या तस्मिन् समये संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्वम् – अयं तस्मिन् समये एक: संज्ञास्कन्धो भवति।

(हिन्दी)१३५. उस समय कौन सी चेतना होती है जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न जो चेतना, जो भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय चेतना होती है।

१३६. उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन,मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय चित्त होता है।

१३७. उस समय कौन सा वेदनास्कन्ध होता है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद् अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय वेदनास्कन्ध होता है।

१३८. उस समय कौन सा संज्ञास्कन्ध होता है? जो उस समय जानना, भली प्रकार से जानना, भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय संज्ञास्कन्ध होता है।

१३९. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं– अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति।

१४०. कतमो तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धो होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु – अयं तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धो होति।

(संस्कृतच्छाया)१३९. कतम: तस्मिन् समये एक: संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचार: प्रीति: चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टि: सम्यक्सङ्कल्प: सम्यग्व्यायाम: सम्यक्स्मृति: सम्यक्समाधि: श्रद्धाबलं वीर्यबलं स्मृतिबलं समाधिबलं प्रज्ञाबलं ह्रीबलं अपत्राप्यबलं अलोभ: अद्वेष: अमोह: अनभिध्या अब्यापाद: सम्यग्दृष्टि: ह्री: अपत्राप्यं कायप्रश्रद्धि: चित्तप्रश्रद्धि: कायलघुता चित्तलघुता कायमृदुता चित्तमृदुता कायकर्मण्यता चित्तकर्मण्यता कायप्रागुण्यता चित्तप्रागुण्यता कायर्जुकता चित्तर्जुकता स्मृति: सम्प्रजन्यं शमथ: विपश्यना प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये एक: संस्कारस्कन्धो भवति।

१४०. कतम: तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धो भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – अयं तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धो भवति।

(हिन्दी)१३९. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति, चित्तस्यैकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्येन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, प्रज्ञेन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यक्संकल्प, सम्यग्व्यायाम, सम्यक्स्मृति, सम्यक्समाधि, श्रद्धाबल, वीर्यबल, स्मृतिबल, समाधिबल, प्रज्ञाबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल, अलोभ, अद्वेष, अमोह, अनभिध्या, अव्यापाद, सम्यग्दृष्टि, ह्री, अपत्राप्य, कायप्रश्रब्धि, चित्तप्रश्रब्धि, कायलघुता, चित्तलघुता, कायमृदुता, चित्तमृदुता, कायकर्मण्यता, चित्तकर्मण्यता, कायप्रागुण्यता, चित्तप्रागुण्यता, काय-ऋजुकता, चित्त-ऋजुकता, स्मृति, सम्प्रज्ञान, शमथ, विपश्यना, प्रग्राह, अविक्षेप है; ये अथवा वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है।

१४०. उस समय कौन सा विज्ञानस्कन्ध होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, स्वच्छ, मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय विज्ञानस्कन्ध होता है।

१४१ कतमं तस्मिं समये मनायतनं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु– इदं तस्मिं समये मनायतनं होति।

१४२. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु– इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

१४३. कतमा तस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु– अयं तस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु होति।

१४४. कतमं तस्मिं समये धम्मायतनं होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – इदं तस्मिं समये धम्मायतनं होति।

(संस्कृतच्छाया) १४१. कतमं तस्मिन् समये मनआयतनं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: –इदं तस्मिन् समये मनआयतनं भवति।

१४२. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

१४३. कतम: तस्मिन् समये मनोविज्ञानधातु: भवति ? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– अयं तस्मिन् समये मनोविज्ञानधातु: भवति।

१४४. कतमं तस्मिन् समये धर्मआयतनं भवति? वेदनास्कन्ध:, संज्ञास्कन्ध:, संस्कारस्कन्ध: – इदं तस्मिन् समये धर्मआयतनं भवति ।

(हिन्दी)१४१. उस समय कौन सा मन-आयमन होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मन-आयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय मन-आयतन होता है।

१४२. उस समय कौन सी मन-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मन-आयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है - यही उस समय मन-इन्द्रिय होती है।

१४३. उस समय कौन सी मनोविज्ञानधातु होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मन-आयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय मनोविज्ञानधातु होती है।

१४४. उस समय कौन सा धर्म-आयतन होता है? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध है - यही उस समय धर्म-आयतन होता है।

१४५. कतमा तस्मिं समये धम्मधातु होति? वेदनाक्खन्धो, सञ्ञाक्खन्धो, सङ्खारक्खन्धो – अयं तस्मिं समये धम्मधातु होति।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

दुतियं चित्तं

१४६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं

(संस्कृतच्छाया)१४५.कतम: तस्मिन् समये धर्मधातु: भवति? वेदनास्कन्ध:, संज्ञास्कन्ध:, संस्कारस्कन्ध:– अयं तस्मिन् समये धर्मधातु: भवति।

ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

१४६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं ज्ञानसम्प्रयुक्तं ससंस्कारेन रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं

(हिन्दी) १४५. उस समय कौन सी धर्मधातु होती है? वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध है - यही उस समय धर्मधातु होती है।

ये अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म कुशल हैं।

१४६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय सौमनस्य सहगत ज्ञान से सम्प्रयुक्त ससंस्कारिक रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है, सुख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, श्रद्धा-इन्द्रिय होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, स्मृति-इन्द्रिय होती है, समाधि-इन्द्रिय होती है, प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है,

होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, पञ्ञाबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अमोहो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, सम्मादिट्ठि होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, सम्पजञ्ञं होति, समथो होति, विपस्सना होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यक्सङ्कल्पो भवति, सम्यग्व्यायामो भवति, सम्यक्स्मृति: भवति, सम्यक्समाधि: भवति, श्रद्धाबलं भवति, वीर्यबलं भवति, स्मृतिबलं भवति, समाधिबलं भवति, प्रज्ञाबलं भवति, ह्रीबलं भवति, अपत्राप्यबलं भवति, अलोभो भवति, अद्वेषो भवति, अमोहो भवति, अनभिध्या भवति, अव्यापादो भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, ह्री: भवति, अपत्राप्यं भवति, कायप्रश्रब्धि: भवति, चित्तप्रश्रब्धि: भवति, कायलघुता भवति, चित्तलघुता भवति, कायमृदुता भवति, चित्तमृदुता भवति, कायकर्मण्यता भवति, चित्तकर्मण्यता भवति, कायप्रागुण्यता भवति, चित्तप्रागुण्यता भवति, कायर्जुकता भवति, चित्तर्जुकता भवति, स्मृति: भवति, सम्प्रजन्यं भवति, शमथो भवति, विपश्यना भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी)मन-इन्द्रिय होती है, सौमनस्य-इन्द्रिय होती है, जीवित-इन्द्रिय होती है, सम्यग्दृष्टि होती है, सम्यक् संकल्प होता है, सम्यक् व्यायाम होता है, सम्यक् स्मृति होती है, सम्यक् समाधि होती है, श्रद्धाबल होता है, वीर्यबल होता है, स्मृतिबल होता है, समाधि-बल होता है, प्रज्ञा-बल होता है, ह्री-बल होता है, अपत्राप्य-बल होता है, अलोभ होता है, अद्वेष होता है, अमोह होता है, अनभिध्या(अनासक्ति) होती है, अव्यापाद(अहिंसा) होता है, सम्यग्दृष्टि होती है, ह्री (आत्म लज्जा) होती है, अपत्राप्य (सामाजिक लज्जा) होती है, कायप्रश्रब्धि (चैतसिकों की उपशान्ति) होती है, चित्तप्रश्रब्धि (चित्त की उपशान्ति) होती है, कायलघुता(चैतसिकों का हल्कापन) होती है, चित्तलघुता(चित्त का हल्कापन) होती है, कायमृदुता (चैतसिकों की कोमलता) होती है, चित्तमृदुता (चित्त की कोमलता) होती है, कायप्रागुण्यता (चैतसिकों की गुणशीलता) होती है, चित्तप्रागुण्यता (चित्त की गुणशीलता) होती है, कायर्जुकता (चैतसिकों की सीधापन) होती है, चित्तर्जुकता (चित्त का सीधापन) होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य(धर्मों का यथार्थ ज्ञान) होता है, शमथ (मन को शान्त करने वाला रूप एवं अरूप ध्यान) होता है, विपश्यना(धर्मों का तटस्थ भाव से दर्शन) होती है, प्रग्राह(पकड़) होती है, अविक्षेप (चित्त की अचंचलता) होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

ततियं चित्तं

१४७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति,

(संस्कृतच्छाया) १४७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं ज्ञानविप्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यक्सङ्कल्पो भवति, सम्यग्व्यायामो भवति, सम्यक्स्मृति: भवति, सम्यक्समाधि: भवति, श्रद्धाबलं भवति, वीर्यबलं भवति, स्मृतिबलं भवति, समाधिबलं भवति, ह्रीबलं भवति, अपत्राप्यबलं भवति, अलोभो भवति, अद्वेषो भवति, अमोहो भवति, अनभिध्या भवति, अव्यापादो भवति, ह्री: भवति, अपत्राप्यं भवति, कायप्रश्रब्धि: भवति, चित्तप्रश्रब्धि: भवति, कायलघुता भवति, चित्तलघुता भवति, कायमृदुता भवति, चित्तमृदुता भवति,

(हिन्दी) १४७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय सौमनस्य सहगत ज्ञानविप्रयुक्त रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है, सुख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, श्रद्धा-इन्द्रिय होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, स्मृति-इन्द्रिय होती है, समाधि-इन्द्रिय होती है, प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है, मन-इन्द्रिय होती है, सौमनस्य-इन्द्रिय होती है, जीवित-इन्द्रिय होती है, सम्यक्-संकल्प होता है, सम्यग्व्यायाम होता है, सम्यक्-स्मृति होती है, सम्यक्समाधि होती है, श्रद्धाबल होता है, वीर्यबल होता है, स्मृतिबल होता है, समाधिबल होता है, ह्रीबल होता है, अपत्राप्यबल होता है, अलोभ होता है, अद्वेष होता है, अनभिध्या होती है, अव्यापाद होता है, ह्री होती है, अपत्राप्य होता है, कायप्रश्रब्धि होती है, चित्तप्रश्रब्धि होती है, कायलघुला होती है, चित्तलघुता होती है, कायमृदुता होती है,

कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, सत्तिन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, छ बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति,एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला...पे०...।

(संस्कृतच्छाया) कायकर्मण्यता भवति, चित्तकर्मण्यता भवति, कायप्रागुण्यता भवति, चित्तप्रागुण्यता भवति, कायर्जुकता भवति, चित्तर्जुकता भवति, स्मृति: भवति, शमथो भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, पञ्चाङ्गिकं ध्यानं भवति, पञ्चाङ्गिको मार्गो भवति, षड् बलानि भवन्ति, त्रयो हेतवो भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति, एका वेदना भवति, एका संज्ञा भवति, एका चेतना भवति, एकं चित्तं भवति, एको वेदनास्कन्धो भवति, एक: संज्ञास्कन्धो भवति, एक: संस्कारस्कन्धो भवति, एको विज्ञानस्कन्धो भवति, एकं मनआयतनं भवति, एकं मनइन्द्रियं भवति, एको मनोविज्ञानधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) चित्तमृदुता होती है, कायकर्मण्यता होती है, चित्तकर्मण्यता होती है, कायप्रागुण्यता होती है, चित्तप्रागुण्यता होती है, कायर्जुकता होती है, चित्तर्जुकता होती है, स्मृति होती है, शमथ होता है, प्रग्राह होता है, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल होते हैं।

उस समय में चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, सात-इन्द्रियाँ होती है, पाँच ध्यानांग होते हैं, चार मार्गांग होते हैं, छः बल होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है, एक वेदना होती है, एक संज्ञा होती है, एक चेतना होती है, एक चित्त होता है, एक वेदनास्कन्ध होता है, एक संज्ञास्कन्ध होता है, एक संस्कारस्कन्ध होता है, एक विज्ञानस्कन्ध होता है, एक मनायतन होता है, एक मान-इन्द्रिय होती है, एक मनोविज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल होते हैं। ...पूर्ववत्...।

१४८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अनभिज्झा अब्यापादो हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं– अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

चतुत्थं चित्तं

१४९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति

(संस्कृतच्छाया)१४८. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारः प्रीतिः चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यक्सङ्कल्पः सम्यग्व्यायामः सम्यक्स्मृतिः सम्यक्समाधिः श्रद्धाबलं वीर्यबलं स्मृतिबलं समाधिबलं ह्रीबलं अपत्राप्यबलं अलोभः अद्वेषः अनभिध्या अव्यापादः ह्रीः अपत्राप्यं कायप्रश्रद्धि चित्तप्रश्रद्धि कायलघुता चित्तलघुता कायमृदुता चित्तमृदुता कायकर्मण्यता चित्तकर्मण्यता कायप्रागुण्यता चित्तप्रागुण्यता कायर्जुकता चित्तर्जुकता स्मृतिः शमथः प्रग्राहः अविक्षेपः; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्नाः अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति। ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः।

१४९. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति

(हिन्दी)१४८. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यक् संकल्प, सम्यग्व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक्समाधि, श्रद्धाबल, वीर्यबल, स्मृतिबल, समाधिबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल, अलोभ, अद्वेष, अनभिध्या, अव्यापाद, ह्री, अपत्राप्य, कायप्रश्रद्धि, चित्तप्रश्रद्धि, कायलघुता, चित्तलघुता, कायमृदुता, चित्तमृदुता, कायकर्मण्यता, चित्तकर्मण्यता, कायप्रागुण्यता, चित्तप्रागुण्यता, कायर्जुकता, चित्तर्जुकता, स्मृति, शमथ, प्रग्राह, अविक्षेप; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१४९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय सौमनस्य सहगत ज्ञान से विप्रयुक्त संस्कारीक रूप

सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा ...पे०... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

पञ्चमं चित्तं

१५०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, पञ्ञाबलं होति, हिरिबलं

(संस्कृतच्छाया) सौमनस्यसहगतं ज्ञानविप्रयुक्तं ससंस्कारेण रूपालम्बनं वा ...पे०... धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१५०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं ज्ञानसम्प्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यक्सङ्कल्पो भवति, सम्यग्व्यायामो भवति, सम्यक्स्मृति: भवति, सम्यक्समाधि: भवति, श्रद्धाबलं भवति, वीर्यबलं भवति, स्मृतिबलं भवति, समाधिबलं भवति, प्रज्ञाबलं भवति, ह्रीबलं

(हिन्दी) ...पूर्ववत्...या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१५०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय उपेक्षासहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, वितर्क, विचार, उपेक्षा, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, उपेक्षा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यक्-संकल्प, सम्यग्व्यायाम, सम्यक्-स्मृति, सम्यक्समाधि, श्रद्धा-बल, वीर्य-बल, स्मृति-बल, समाधिबल, प्रज्ञाबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल,

होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अमोहो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, सम्मादिट्ठि होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, सम्पजञ्ञं होति, समथो होति, विपस्सना होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

१५१. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

१५२. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये

(संस्कृतच्छाया) भवति, अपत्राप्यबलं भवति, अलोभो भवति, अद्वेषो भवति, अमोहो भवति, अनभिध्या भवति, अव्यापादो भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, ह्री: भवति, अपत्राप्यं भवति, कायप्रश्रब्धि: भवति, चित्तप्रश्रब्धि: भवति, कायलघुता भवति, चित्तलघुता भवति, कायमृदुता भवति, चित्तमृदुता भवति, कायकर्मण्यता भवति, चित्तकर्मण्यता भवति, कायप्रागुण्यता भवति, चित्तप्रागुण्यता भवति, कायर्जुकता भवति, चित्तर्जुकता भवति, स्मृति: भवति, सम्प्रजन्यं भवति, शमथो भवति, विपश्यना भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

१५१. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

१५२. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये

(हिन्दी) अलोभ, अद्वेष, अमोह, अनभिध्या, अव्यापाद, सम्यग्दृष्टि, ह्री, अपत्राप्य, कायप्रश्रब्धि, चित्तप्रश्रब्धि, कायलघुता, चित्तलघुता, कायमृदुता, चित्तमृदुता, कायकर्मण्यता, चित्तकर्मण्यता, कायप्रागुण्यता, चित्तप्रागुण्यता, कायर्जुकता, चित्तर्जुकता, स्मृति, सम्प्रजन्य, शमथ, विपश्यना, पग्राह, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म कुशल हैं।

१५१. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय स्पर्श होता है।

१५२. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधतु के संस्पर्श से उत्पन्न

तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना– अयं तस्मिं समये वेदना होति...पे॰...।

१५३. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति...पे॰...।

१५४. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति...पे॰... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे॰...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, पञ्चङ्गिको मग्गो होति, सत्त

(संस्कृतच्छाया) तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजम् अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खमसुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति ...पे॰...।

१५३. कतमा तस्मिन् समये उपेक्षा भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजं अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खमसुखा वेदना– अयं तस्मिन् समये उपेक्षा भवति...पे॰...।

१५४. कतमं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजम् अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खमसुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति ...पे॰... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला: ...पे॰...।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, चतुरङ्गिकं ध्यानं भवति, पञ्चाङ्गिको मार्गो भवति, सप्त

(हिन्दी) मानसिक न सुख न दु:ख, चित्त के स्पर्श द्वारा उत्पन्न असुखादु:ख अनुभुति, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न असुखादु:ख वेदना है- यही उस समय वेदना होती है।...पूर्ववत्..

१५३. उस समय कौन सी उपेक्षा होती है? जो उस समय मानसिक न सुख न दु:ख, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदु:खासुख अनुभुति, चित के स्पर्श द्वारा उत्पन्न अदु:खासुख वेदना है - यही उस समय वेदना होती है। ...पूर्ववत्..

१५४. उस समय कौन सी उपेक्षा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय मानसिक न सुख न दु:ख, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदु:खासुख अनुभुति, चित्त के स्पर्श द्वारा उत्पन्न अदु:खासुख वेदना है- यही उस समय उपेक्षा-इन्द्रिय होती है। ...पूर्ववत्.. अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं -ये धर्म कुशल हैं।

बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

१५५. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो;

(संस्कृतच्छाया) बलानि भवन्ति, त्रयो हेतवो भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति ...पे०... एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

१५५. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्ध: भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचार: चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टि: सम्यक्सङ्कल्प: सम्यग्व्यायाम: सम्यक्स्मृति: सम्यक्समाधि: श्रद्धाबलं वीर्यबलं स्मृतिबलं समाधिबलं प्रज्ञाबलं ह्रीबलं अपत्राप्यबलं अलोभ: अद्वेष: अमोह: अनभिध्या अव्यापाद: सम्यग्दृष्टि: ह्री: अपत्राप्यं कायप्रश्रद्धि: चित्तप्रश्रद्धि: कायलघुता चित्तलघुता कायमृदुता चित्तमृदुता कायकर्मण्यता चित्तकर्मण्यता कायप्रागुण्यता चित्तप्रागुण्यता कायर्जुकता चित्तर्जुकता स्मृति: सम्प्रजन्यं शमथो विपश्यना प्रग्राह:

(हिन्दी) उस समय में चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, आठ-इन्द्रिय होती हैं, चार अंगों वाला ध्यान होता है, पाँच अंगों वाला मार्ग होता है, सात बल होते हैं, तीन हेतएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है...पूर्ववत्... एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म कुशल हैं।

१५५. उस समय संस्कारस्कन्ध क्या होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, जीवित- इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यक्संकल्प, सम्यग्व्यायाम्, सम्यक्स्मृति, सम्यक्समाधि, श्रद्धाबल वीर्यबल, स्मृतिबल, समाधिबल, प्रज्ञाबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल, अलोभ, अद्वेष, अमोह, अनभिध्या, अव्यापाद, सम्यक्दृष्टि, ह्री, अपत्राप्य, कायप्रश्रब्धि, चित्तप्रश्रब्धि, कायलघुता, चित्तलघुता, कायमृदुता, चित्तमृदुता, कायकर्मण्यता, चित्तकर्मण्यता, कायप्रागुण्यता, चित्तप्रागुण्यता, कायर्जुकता, चित्तर्जुकता, स्मृति, सम्प्रजन्यं, शमथ, विपश्यना प्रग्राह अविक्षेप है;

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

छट्ठं चित्तं

१५६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा...पे०... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

सत्तमं चित्तं

१५७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति,

(संस्कृतच्छाया) अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति। ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१५६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं ज्ञानसम्प्रयुक्तं ससंस्कारेण रूपालम्बनं वा ...पे०... धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१५७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं ज्ञानविप्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति,

(हिन्दी) अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१५६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय उपेक्षा सहगत ज्ञान से सम्प्रयुक्त ससंस्कारिक रूप ... पूर्ववत्... या धर्म आलम्बन या अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता.... पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१५७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय उपेक्षासहगत ज्ञानविप्रयुक्त रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है; उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, श्रद्धा-इन्द्रिय होती है,

चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो होति, अदोसो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला ...पे०...।

(संस्कृतच्छाया) चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यक्सङ्कल्पो भवति, सम्यग्व्यायामो भवति, सम्यक्स्मृति: भवति, सम्यक्समाधि: भवति, श्रद्धाबलं भवति, वीर्यबलं भवति, स्मृतिबलं भवति, समाधिबलं भवति, ह्रीबलं भवति, अपत्राप्यबलं भवति, अलोभो भवति, अद्वेषो भवति, अनभिध्या भवति, अव्यापाद: भवति, ह्रीर्भवति, अपत्राप्यं भवति, कायप्रश्रब्द्धि: भवति, चित्तप्रश्रब्द्धि: भवति, कायलघुता भवति, चित्तलघुता भवति, कायमृदुता भवति, चित्तमृदुता भवति, कायकर्मण्यता भवति, चित्तकर्मण्यता भवति, कायप्रागुण्यता भवति, चित्तप्रागुण्यता भवति, कायर्जुकता भवति, चित्तर्जुकता भवति, स्मृति: भवति, शमथो भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

(हिन्दी) वीर्य-इन्द्रिय होती है, स्मृति-इन्द्रिय होती है, समाधि-इन्द्रिय होती है, मन-इन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवित-इन्द्रिय होती है, सम्यक्-संकल्प होता है, सम्यग्व्यायाम होता है, सम्यक्स्मृति होती है, सम्यक्समाधि होती है, श्रद्धा-बल होता है, वीर्य-बल होता है, स्मृति-बल होता है, समाधि-बल होता है, ह्री-बल होता है, अपत्राप्य-बल होता है, अलोभ होता है, अद्वेष होता है, अनभिध्या होता है, अव्यापाद होता है, ह्री होती है, अपत्राप्य होती है, कायप्रश्रब्धि होती है, चित्तप्रश्रब्धि होती है, कायलघुता होती है, चित्तलघुता होती है, कायमृदुता होती है, चित्तमृदुता होती है, कायकर्मण्यता होती है, चित्तकर्मण्यता होती है, कायप्रागुण्यता होती है, चित्तप्रागुण्यता होती है, कायर्जुकता होती है, चित्तर्जुकता होती है, स्मृति होती है, शमथ होता है, प्रग्राह होता है, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं...पूर्ववत्...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, सत्तिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, छ बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति ...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला ...पे०...।

१५८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मासङ्कप्पो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अनभिज्झा अब्यापादो हिरी ओत्तप्पं कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति समथो पग्गाहो अविक्खेपो;

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, सप्तेन्द्रियानि भवन्ति, चतुरङ्गिकं ध्यानं भवति, चतुरङ्गिको मार्गो भवति, षड् बलानि भवन्ति, द्वौ हेतू भवतः, एकः स्पर्शो भवति, ...पे०... एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातुः भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः कुशलाः ...पे०...।

१५८. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारः चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यक्सङ्कल्पः सम्यग्व्यायामः सम्यक्स्मृतिः सम्यक्समाधिः श्रद्धाबलं वीर्यबलं स्मृतिबलं समाधिबलं ह्रीबलम् अपत्राप्यबलं अलोभः अद्वेषः अनभिध्या अव्यापादः ह्रीः अपत्राप्यं कायप्रश्रब्धिः चित्तप्रश्रब्धिः कायलघुता चित्तलघुता कायमृदुता चित्तमृदुता कायकर्मण्यता चित्तकर्मण्यता कायप्रागुण्यता चित्तप्रागुण्यता कायर्जुकता चित्तर्जुकता स्मृतिः शमथः प्रग्राह अविक्षेपः;

(हिन्दी) उस समय चार स्कन्ध, दो आयतन, दो धातुये, तीन आहार, सात इन्द्रिया, चार ध्यानांग, चार मार्गांग, छः बल, दो धातु, एक स्पर्श ...पूर्ववत्... एक धर्म-आयतन, एक धर्म-धातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म कुशल हैं...पूर्ववत्...।

१५८. उस समय संस्कारस्कन्ध क्या होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इनिद्रय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यक्-संकल्प, सम्यग्व्यायाम, सम्यक्स्मृति, सम्यक्समाधि, श्रद्धाबल, वीर्यबल, स्मृतिबल, समाधिबल, ह्रीबल, अपत्राप्यबल, अलोभ, अद्वेष, अनभिध्या, अव्यापाद, ह्री, अपत्राप्य, कायप्रश्रब्धि, चित्तप्रश्रब्धि, कायलघुता, चित्तलघुता, कायमृदुता, चित्तमृदुता, कायकर्मण्यता, चित्तकर्मण्यता, कायप्रागुण्यता, चित्तप्रागुण्यता, कायर्जुकता, चित्तर्जुकता, स्मृति, शमथ, प्रग्राह, अविक्षेप है।

ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

अट्ठमं चित्तं

१५९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला

अट्ठ कामावचरमहाकुसलचित्तानि। दुतियभाणवारो।

(संस्कृतच्छाया) ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणः धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति। ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः।

१५९. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं ज्ञानविप्रयुक्तं ससंस्कारेण रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुनः आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः कुशलाः।

अष्टकामावचरमहाकुशलचित्तानि।द्वितीयभाणवारः।

(हिन्दी) अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१५९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय उपेक्षासहगत ज्ञानविप्रयुक्त ससंस्कारिक रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुनः भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है; उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, श्रद्धा-इन्द्रिय होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

आठ कामावचरमहाकुशलचित्त । द्वितीयभाणवार।

२. रूपावचरकुसलं

१. चतुक्कनयो

१६०.कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१६१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति ...पे०... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला ...पे०...।

(संस्कृतच्छाया) १६०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१६१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यग्व्यायामो भवति ...पे०... प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

(हिन्दी) १६०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न की ध्यान भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१६१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न की ध्यान भावना करता है - उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, प्रीति, सुख, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धेन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, सौमनस्य-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं ...पूर्ववत्...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, तिवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

१६२. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो...पे०... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, त्र्यङ्गिकं ध्यानं भवति, चातुरङ्गिकः मार्गो भवति, सप्त बलानि भवन्ति, त्रयः हेतवः भवन्ति, एकः स्पर्शो भवति ...पे०... एकं धर्मायतनं भवति, एकः धर्मधातुः भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः ...पे०...।

१६२. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना प्रीतिः चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टिः सम्यग्व्यायामः ...पे०... प्रग्राहः अविक्षेपः; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः।

(हिन्दी) उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, आठ-इन्द्रिया होती हैं, तीन अंगो वाला ध्यान होता है, चार अंगो वाला मार्ग होता है, सप्त बल होते हैं, तीन हेतुएँ होती हैं, एक स्पर्श...पूर्ववत्... एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं...पूर्ववत्...।

१६२. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, प्रीति, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम...पूर्ववत्... प्रग्राह अविक्षेप है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१६३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरति सतो च सम्पजानो सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेति, यं तं अरिया आचिक्खन्ति– ''उपेक्खको सतिमा सुखविहारी''ति ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति...पे०... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, दुवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति,

(संस्कृतच्छाया) १६३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति प्रीत्याश्च विरागादुपेक्षकश्च विहरति स्मृतिमान् च सम्प्रज्ञान: सुखञ्च कायेन प्रतिसंवेदयति यत् तदार्या आचक्षन्ते 'उपेक्षक: स्मृतिमान् सुखविहारि' इति तृतीयं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्श: भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यग्व्यायामो भवति ...पे०... प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, द्वयङ्गिकं ध्यानं भवति, चतुराङ्गिको मार्गो भवति,

(हिन्दी) १६३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है प्रीति से विराग हो जाने पर उपेक्षा युक्त होकर विहार करता है एवं स्मृति से युक्त हो कर कायिक सुख का अनुभव करता है जिसके विषय में आर्य जन "उपेक्षा युक्त स्मृतिमान सुखपूर्वक् विहार करने वाला" कहते हैं। इस तरह के तृतीय ध्यान को प्राप्त कर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहरता है; उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, सुख, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, सौमनस्य-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं...पूर्ववत्...।

उस समय चार स्कन्ध, दो आयतन, दो धातु, तीन आहार, आठ-इन्द्रियाँ, दो अंगों वाला ध्यान, चार अंगों

सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

१६४. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो...पे०... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१६५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति , वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति,

(संस्कृतच्छाया) सप्त बलानि भवन्ति, त्रयो हेतवो भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति...पे०... एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

१६४. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टि: सम्यग्व्यायाम: ...पे०... प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१६५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति,

(हिन्दी) वाला मार्ग, सात-बल, तीन हेतुएँ, एक स्पर्श होता है ....पूर्ववत्... एक धर्मायतन, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं ...पूर्ववत्...।

१६४. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१६५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्त कर पृथ्वीकृत्स्न पर ध्यान भावना करता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना

वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति...पे॰... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे॰...। तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, दुवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति ...पे॰... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला...पे॰...।

१६६. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि

(संस्कृतच्छाया) वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यग्व्यायामो भवति, ...पे॰... प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे॰...। तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, द्वयङ्गिकं ध्यानं भवति, चतुराङ्गिको मार्गो भवति, सप्त बलानि भवन्ति, त्रयो हेतवो भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति ...पे॰... एकं धर्मायतनं भवति, एक: धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला: ...पे॰...।

१६६. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टि:

(हिन्दी) होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, श्रद्धा-इन्द्रिय होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, स्मृति-इन्द्रिय होती है, समाधि-इन्द्रिय होती है, प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है, मन-इन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवित-इन्द्रिय होती है, सम्यग्दृष्टि होती है, सम्यग्व्यायाम होता है ...पूर्ववत्... प्रग्राह होता है, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं ...पूर्ववत्...। उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, आठ-इन्द्रियाँ होती हैं, दो अंगों वाला ध्यान होता है, चार अंगों वाला मार्ग होता है, सात-बल होते हैं, तीन हेतुएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं ...पूर्ववत्...।

१६६. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम ...पूर्ववत्... प्रग्राह

सम्मावायामो...पे०... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थ पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२. पञ्चकनयो

१६७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१६८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अवितक्कं विचारमत्तं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति,

(संस्कृतच्छाया) सम्यग्व्यायाम: ...पे०... प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१६७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्त्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१६८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्त्यै मार्गं भावयति अवितर्कम् विचारमात्रं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति,

(हिन्दी) (पकड़ना), अविक्षेप होता हैं; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१६७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न की ध्यान भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्...ये धर्म कुशल हैं।

१६८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है वितर्क से रहित विशुद्ध विचार वाला समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख से युक्त द्वितीय ध्यान को प्राप्त कर

समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति...पे॰... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे॰...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे॰... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे॰...।

१६९. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं

(संस्कृतच्छाया)समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रिय भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यग्व्यायाम: भवति, ...पे॰... प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला: ...पे॰...।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, चतुरङ्गिकं ध्यानं भवति, चतुरङ्गिक: मार्ग: भवति, सप्त बलानि भवन्ति, त्रय: हेतव: भवन्ति, एक: स्पर्श: भवति...पे॰...एकं धर्मायतनं भवति, एक: धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला: ...पे॰...।

१६९. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना विचार: प्रीति: चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं

(हिन्दी) पृथ्वीकृत्स्न का ध्यान भवना करता है, उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, प्रीति, सुख, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, सौमनस्य-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम ...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं ...पूर्ववत्...।

उस समय चार-स्कन्ध, दो-आयतन, दो धातुएँ, तीन आहार, आठ-इन्द्रिय, चार अंगों वाला ध्यान, चार अंगों वाला मार्ग, सात बल, तीन हेतुएँ, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं ...पूर्ववत्...।

१६९. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता,

सम्मादिट्ठि सम्मावायामो ...पे०... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१७०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति , सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति ...पे०... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

(संस्कृतच्छाया) सम्यग्दृष्टि: सम्यग्व्यायाम: ...पे०... प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१७०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं तृतीयं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यग्व्यायाम: भवति, ...पे०... प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

(हिन्दी) श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम ...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप है; अथवा उस उमय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१७०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले तृतीय ध्यान को प्राप्त कर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहरता है, उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, प्रीति, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधिन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, सौमनस्य-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम होता है ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं...पूर्ववत्...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, तिवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे॰... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे॰...।

१७१. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो...पे॰... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, त्र्यङ्गिकं ध्यानं भवति, चतुराङ्गिकः मार्गः भवति, सप्त बलानि भवन्ति, त्रयः हेतवो भवन्ति, एकः स्पर्शो भवति ...पे॰... एकं धर्मायतनं भवति, एकः धर्मधातुः भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः कुशलाः ...पे॰...।

१७१. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना प्रीतिः चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टिः सम्यग्व्यायामः ...पे॰... प्रग्राहः अविक्षेपः; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे॰... इमे धर्माः कुशलाः।

(हिन्दी) उस समय चार स्कन्ध, दो आयतन, दो धातुएँ, तीन आहार, आठ-इन्द्रियाँ, तीन अंगों वाला ध्यान, चार अंगों वाला मार्ग, सात-बल, तीन हेतुएँ, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं...पूर्ववत्....।

१७१. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१७२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति पीतिया च विरागा ...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति...पे०... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, दुवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

(संस्कृतच्छाया)१७२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति प्रीत्या: च विरागात् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यग्व्यायाम: भवति ...पे०... प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे०... ।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, द्वयङ्गिकं ध्यानं भवति, चतुरङ्गिक: मार्ग: भवति, सप्त बलानि भवन्ति, त्रय: हेतव: भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति...पे०... एकं धर्मायतनं भवति, एक: धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

(हिन्दी)१७२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है प्रीति के विराग हो जाने से ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहरता है, उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, सुख, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, सौमनस्य-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम होता है...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं ...पूर्ववत्...।

उस समय चार स्कन्ध, दो आयतन, दो धातुये, तीन आहार, आठ-इन्द्रियाँ, दो अंगों वाला ध्यान, चार अंगों वाला मार्ग, सप्त बल, तीन हेतु, एक स्पर्श होता है...पूर्ववत्... एक धर्मायतन, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल है ...पूर्ववत्...

१७३. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो...पे०... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१७४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सुखस्स च पहाना...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मावायामो होति...पे०... पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

(संस्कृतच्छाया)१७३. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टि: सम्यग्व्यायाम: ...पे०... प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१७४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति सुखस्य च प्रहाणात् ...पे०... पञ्चमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यग्व्यायामो भवति ...पे०... प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

(हिन्दी) १७३. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१७४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है सुख के प्रहाण होने से ...पूर्ववत्... पंचम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहरता है, उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, उपेक्षा, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, उपेक्षा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम होता है ...पूर्ववत्... प्रग्राह होता है,

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, अट्ठिन्द्रियानि होन्ति, दुवङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

१७५. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मावायामो...पे०... पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

पञ्चकनयो।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, अष्टेन्द्रियानि भवन्ति, द्वयङ्गिकं ध्यानं भवति, चतुराङ्गिको मार्गो भवति, सप्त बलानि भवन्ति, त्रयो हेतवो भवन्ति, एकः स्पर्शो भवति ...पे०... एकं धर्मायतनं भवति, एकः धर्मधातुः भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः ...पे०...।

१७५. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं सम्यग्दृष्टिः सम्यग्व्यायामः ...पे०... प्रग्राहः अविक्षेपः; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः।

(हिन्दी) अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म है- ये धर्म कुशल है ...पूर्ववत्... ।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन-आहार होते हैं, आठ-इन्द्रियाँ होती हैं, दो अंगों वाला ध्यान होता है, चार अंगों वाला मार्ग होता है, सात-बल होते हैं, तीन-हेतुएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं...पूर्ववत्...।

१७५. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यग्व्यायाम ...पूर्ववत्... प्रग्राह, अविक्षेप है; अथवा वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३. चतस्सो पटिपदा

१७६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१७७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१७८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज

(संस्कृतच्छाया) १७६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१७७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१७८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य

(हिन्दी) १७६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद, तन्द्र-अभिज्ञा(मन्द अन्तर्दृष्टि वाला) पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१७७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञ(शीघ्रता से प्रवर्तित होने वाला अपरोक्ष ज्ञान) पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१७८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक

विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१७९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला...पे०...।

१८०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं ...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं

(संस्कृतच्छाया) विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१७९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ...पे०...।

१८०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं

(हिन्दी) से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१७९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है - उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१८०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न की ध्यान भावना करता है ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्...पञ्चम ध्यान को प्राप्त कर दु:खप्रतिपद तन्द्र-अभिज्ञा

पथवीकसिणं ...पे°... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं पथवीकसिणं– तस्मिं समये फस्सो होति ...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा कुसला।

४. चत्तारि आरम्मणानि

१८१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°...अविक्खेपो होति...पे°...इमे धम्मा कुसला।

१८२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं– तस्मिं समये फस्सो ...पे°... अविक्खेपो ...पे°... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... दुःखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं पृथिवीकृत्स्नम्– तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्माः कुशलाः।

चत्वारि आलम्बनानि।

१८१. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यः विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्माः कुशलाः।

१८२. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यः विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम्– तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्माः कुशलाः।

(हिन्दी) पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहरता है ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद क्षिप्र-अभिज्ञा पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्...सुखप्रतिपद क्षिप्र-अभिज्ञा पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहरता- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१८१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त अल्प गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है ...पूर्ववत्... उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१८२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त, अल्प गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है ...पूर्ववत्... उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१८३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१८४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१८५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं

(संस्कृतच्छाया) १८३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्य: विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम्– तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१८४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१८५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं

(हिन्दी) १८३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त असीम गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है...पूर्ववत्... उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१८४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त असीम गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है ...पूर्ववत्... उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१८५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है,

झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं ...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं...पे०... परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं ...पे०... अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं ...पे०... अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

५. सोळसक्खत्तुकं

१८६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति

(संस्कृतच्छाया) ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

१८६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम्– तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०...

(हिन्दी) वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न की ध्यान भावना करता है ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान...पूर्ववत्... अल्प गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है ...पूर्ववत्... अल्प गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्... असीम गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्... असीम गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न - उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप (चित्त की अचंचलता) होती है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

१८६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा(मन्द अन्तर्दृष्टि वाला) अल्प गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है - उस

...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

१८७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१८८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

१८७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१८८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ।

(हिन्दी) समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप (चित्त की अचंचलता) होती है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

१८७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा(मन्द अन्तर्दृष्टि वाला) अल्प गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्त कर भावना करता है - उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१८८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञ(मन्द अन्तर्दृष्टि वाला) असीम गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१८९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१९०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१९१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति

(संस्कृतच्छाया)१८९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ।

१९०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ।

१९१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति

(हिन्दी) १८९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा असीम गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा

दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१९२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१९३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ।

१९२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ।

१९३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम्– तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ।

(हिन्दी) पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा असीम गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा असीम गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है - उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१९५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१९६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति

(संस्कृतच्छाया) १९४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम्– तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१९५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ।

१९६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति

(हिन्दी) १९४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा असीम गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न

सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१९७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

१९८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

१९७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: ।

१९८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा असीम गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१९९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२००. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२०१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति

(संस्कृतच्छाया)१९९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२००. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२०१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य

(हिन्दी)१९९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२००. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा असीम गुणों एवं अवृद्धि प्राप्त आलम्बन वाली पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२०१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा असीम गुणों एवं उच्चस्तरीय ध्यान के प्रत्यय वाली तथा

विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२०२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं ...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं...पे०...

(संस्कृतच्छाया) सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२०२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानं...पे०... प्रथमं ध्यानं ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे०...

(हिन्दी) पृथ्वीकृत्स्न को कर्मस्थान बनाने वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२०२. कौन से धर्मकुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तक...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान उपसम्पद्य दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अल्पालम्बन पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणाम्बन पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प अल्पालम्बन पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्...

दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं पथवीकसिणं...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं पथवीकसिणं – तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) दुःखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... दुःखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनं पृथिवीकृत्स्नम् – तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः।

(हिन्दी) दुःखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अल्पालम्बन पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन पृथ्वीकृत्स्न ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प अल्पालम्बन पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन पृथ्वीकृत्स्न...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन पृथ्वीकृत्स्न है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप (चित्त की अचंचलता) होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

२.अट्ठकसिणं सोळसक्खत्तुकं

२०३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति आपोकसिणं ...पे०... तेजोकसिणं ...पे०... वायोकसिणं ...पे०... नीलकसिणं ...पे०... पीतकसिणं ...पे०... लोहितकसिणं ...पे०... ओदातकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३. अभिभायतनानि

१.परित्तानि

२०४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २०३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति आपकृत्स्नम् ...पे०... तेजकृत्स्नम् ...पे०... वायुकृत्स्नम् ...पे०... नीलकृत्स्नम् ...पे०... पीतकृत्स्नम् ...पे०... लोहितकृत्स्नम् ...पे०... अवदातकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२०४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २०३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पद्य आपकृत्स्न की भावना करता है ...पूर्ववत्... तेजकृत्स्न...पूर्ववत्... वायुकृत्स्न ...पूर्ववत्... नीलकृत्स्न ...पूर्ववत्... पीलाकृत्स्न ...पूर्ववत्... लालकृत्स्न ...पूर्ववत्... अवदातकृत्स्न है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२०४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपोत्पत्ति मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, उन्हें भली-भांति जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२०५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे°... दुतियं झानं ...पे°... ततियं झानं...पे°... चतुत्थं झानं...पे°... पठमं झानं...पे°... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा कुसला।

२.चतस्सो पटिपदा

२०६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया)२०५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे°... द्वितीयं ध्यानम् ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानम् ...पे°... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: कुशला:।

२०६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परिक्तानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २०५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ ऐसा वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२०६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२०७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२०८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२०९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव

(संस्कृतच्छाया)२०७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२०८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२०९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्य:

(हिन्दी)२०७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दु:खप्रतिपद(दु:ख मार्ग) को शीघ्र जान कर विहरता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२०८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर सुखप्रतिपद(सुख मार्ग) को तन्द्राभिज्ञ के साथ विहरता है - उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं ...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२१०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २०९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद शीघ्र ज्ञान वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर ध्यान भावना करता है ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान...पूर्ववत्.... पञ्चम ध्यान उपसम्पद्य दु:खप्रतपद तन्द्राभिज्ञा के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३.द्वे आरम्मणानि

२११. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २११. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्य: विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति परीत्तं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२१२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्य: विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रमाणं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी)२११. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा वाला होकर बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, उन्हें भली-भांति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त परीत्त(सीमित) परीत्तालम्बन (अल्प विषय को आलम्बन बनाने वाला) प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा वाला होकर बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, उन्हें भली-भांति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त अप्रमाण अल्पालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं परित्तारम्मणं...पे०... अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

४.अट्ठक्खत्तुकं

२१४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २१३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति परीत्तं परीत्तालम्बनम् ...पे०... अप्रमाणं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२१४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २१३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, उन्हें भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, वितर्क एवं विचारों को शान्त-कर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान...तृतीय ध्यान...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान... सीमित तथा अल्प विषय को आलम्बन बनाने वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर ...पूर्ववत्... अप्रमाण- अल्पालम्बन है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, उन्हें भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अल्पालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २१५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२१६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २१५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा वाला होकर बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, उन्हें भली-भांति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, उन्हें भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प-अल्पालम्बन के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२१८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २१७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२१८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २१७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भांति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दुःखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद(सुख मार्ग को) तन्द्राभिज्ञा(मन्द अन्तर्दृष्टि से जान कर) परीत्त(सीमित) अल्पालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२१९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२२०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२२१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया)२१९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२२०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२२१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २१९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद(सुख मार्ग को) तन्द्राभिज्ञा (मन्द अन्तर्दृष्टि से जान कर) अप्रमाण अल्पालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है- उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२२०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प अल्पालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२२१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक ...पे०... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२२२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा ...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं ...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं ...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं ...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं ...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं परित्तारम्मणं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं परित्तारम्मणं तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया)२२२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम्...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तं परीत्तालम्बनम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणं परीत्तालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २२२. कौन से धर्म कुशल है? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ बाह्य रूपों को सीमित अवस्था में देखता है, वह जानता है कि मैं भली-भांति जानता एवं देखता हूँ, वितर्क एवं विचारों को शान्त-कर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अल्पालम्बन वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञ अल्प अल्पालम्बन ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अल्पालम्बन ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञ अल्प अल्पालम्बन ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अल्पालम्बन, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

५. इदं पि अट्ठक्खत्तुकं

२२३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि सुवण्णदुब्बण्णानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२२४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति परित्तानि सुवण्णदुब्बण्णानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा ...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

६. अप्पमाणानि

२२३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा

(संस्कृतच्छाया) २२३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि सुवर्णदुर्वर्णानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२२४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति परीत्तानि सुवर्णदुर्वर्णानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम्...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२२३.कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी

(हिन्दी) २२३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अल्प सुवर्ण एवं दुर्वण रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२२४. कौन से धर्म कुशल है? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अल्प सुवर्ण एवं दुर्वण रूपों को देखता है, वितर्क-विचार को शान्त कर उन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करके जानता एवं देखता हूँ ....पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामी ति विविच्चेव ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२२४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामी ति वितक्कविचारानं वूपसमा ...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...अविक्खेपो होति...पे०...इमे धम्मा कुसला।

७. चतस्सो पटिपटा

२२५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामी ति विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामी ति विविच्यैव ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२२४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम्...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम्...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२२५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामी ति विविच्यैव ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २२३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी असीमीत रूपों को देखता है ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२२४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी असीमीत रूपों को देखता है, वितर्क-विचार को शान्त कर....पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२२५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी असीमीत रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

८. द्वे आरम्मणानि

२३२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२३३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२३४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति परित्तं अप्पमाणारम्मणं ...पे०... अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २३२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२३३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२३४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम् ...पे०... अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २३२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२३३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक अरूपसंज्ञी ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२३४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, वितर्क-विचार को शान्त कर उन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करके जानता एवं देखता हूँ ....पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... अल्प अपरिमित आलम्बन वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है

९. अपरं पि अट्ठक्खत्तुकं

२३५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२३६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २३५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२३६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) ...पूर्ववत्... अप्रमाण अप्रमाणालम्बन, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२३५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२३६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२३७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२३८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

---

२३७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२३८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

---

२३७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२३८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक (आन्तरिक) अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२३९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२४०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया)२३९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२४०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी)२३९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक (आन्तरिक) अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है...पूर्ववत्... उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२४०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक (आन्तरिक) अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है...पूर्ववत्... उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२४१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२४२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २४१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्य: विविच्यैव कामेभ्य: विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२४२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्य: विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २४१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्मिक (आन्तरिक) अरूपसंज्ञी होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प एवं अपरिमित आलम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है...पूर्ववत्... उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२४२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञा को जानता हुआ होकर बाहरी अपरिमित रूपों को देखता है, उनको जीतकर मैं जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा(तीक्ष्ण-बुद्धि वाला) अप्रमाण अप्रमाणालम्बन वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्.. अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्.. ये धर्म कुशल हैं।

२४३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा ...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं ...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं ...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं ...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं ...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं परित्तं अप्पमाणारम्मणं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पमाणं अप्पमाणारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २४३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं परीत्तम् अप्रमाणालम्बनम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रमाणम् अप्रमाणालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २४३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, आन्तरिक अरूपसंज्ञी को जानता हुआ बाह्य रूपों को अपरिमित अवस्था में देखता है, उन्हें भली-भाँति जानता एवं देखता हूँ, ... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अल्प अप्रमाणालम्बन...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रमाण अप्रमाणालम्बन, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

१०. इदं पि अट्ठक्खत्तुकं

२४४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि सुवण्णदुब्बण्णानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२४५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति अप्पमाणानि सुवण्णदुब्बण्णानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति वितक्कविचारानं वूपसमा ...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया)२४४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि सुवर्णदुर्वर्णानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२४५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति अप्रमाणानि सुवर्णदुर्बर्णानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २४४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूप भव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिये मार्ग की भावना करता है, भीतर अरूपसंज्ञी होकर बाहर अपरिमित सुवर्ण-दुर्वर्ण रूपों को देखता है, उनको जितकर जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्.... ये धर्म कुशल हैं।

२४५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, भीतर अरूपसंज्ञी होकर बाहर अपरिमित सुवर्ण-दुर्वर्ण रूपों को देखता है उन्हें जितकर जानता एवं देखता हूँ, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२४६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति नीलानि नीलवण्णानि नीलनिदस्सनानि नीलनिभासानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२४७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति पीतानि पीतवण्णानि पीतनिदस्सनानि पीतनिभासानि...पे०... लोहितकानि लोहितकवण्णानि लोहितकनिदस्सनानि लोहितकनिभासानि...पे०... ओदातानि ओदातवण्णानि ओदातनिदस्सनानि ओदातनिभासानि, तानि अभिभुय्य जानामि पस्सामीति विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।इमानिपि अभिभायतनानि सोळसक्खत्तुकानि।

(संस्कृतच्छाया) २४६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति नीलानि नीलवर्णानि नीलनिदर्शनानि नीलनिभासानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२४७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति पीतानि पीतवर्णानि पीतनिदर्शनानि पीतनिभासानि ...पे०... लोहितकानि लोहितकवर्णानि लोहितकनिदर्शनानि लोहितकनिभासानि ...पे०... अवदातानि अवदातवर्णानि अवदातनिदर्शनानि अवदातनिभासानि, तानि अभिभूय जानामि पश्यामीति विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। इमानि अपि अभिभ्वायतनानि षोडशकृत्व:।

(हिन्दी) २४६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, भीतर अरूपसंज्ञी होकर बाहर नीले, नीलवर्ण, नीलनिदर्शन एवं नीलनिभास रूपों को देखता है, उनको जितकर जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्.... ये धर्म कुशल हैं।

२४७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, भीतर अरूप संज्ञावाला होता है और बाहर पीत(पीले), पीतवर्ण, पीतनिदर्शन एवं पीतनिभास ...पूर्ववत्... लोहित(लाल), लोहितवर्ण, लोहितनिदर्शन, लोहितनिभास...पूर्ववत्... अवदात(सफेद), अवदातवर्ण, अवदातनिदर्शन, अवदातनिभास, उनको जितकर जानता एवं देखता हूँ, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्.... ये धर्म कुशल हैं।

४.तीणि विमोक्खानि सोळसक्खत्तुकानि

२४८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति रूपी रूपानि पस्सति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२४९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अज्झत्तं अरूपसञ्ञी बहिद्धा रूपानि पस्सति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सुभन्ति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं

(संस्कृतच्छाया) २४८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति रूपी रूपानि पश्यति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२४९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अध्यात्मम् अरूपसंज्ञी बहिर्धा रूपानि पश्यति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२५०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति शुभमिति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य

(हिन्दी) २४८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, स्वयं रूपवान् होता हुआ रूपों को देखता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२४९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, अध्यात्म में अरूपसंज्ञी होकर बाहर रूपों को देखता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, शुभ(ही मुक्त होता) है काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, ...पूर्ववत्...

उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।इमानिपि तीणि विमोक्खानि सोळसक्खत्तुकानि।

५.चत्तारि ब्रह्मविहारझानानि सोळसक्खत्तुकानि

२५१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। इमानि अपि त्रीणि विमोक्षानि षोडशकृत्व:।

२५१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्य: विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति मैत्रीसहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२५२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति मैत्रीसहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल है।

२५१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर मैत्री-भावना के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचार को त्यागकर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर मैत्री-भावना के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति पीतिया च विरागा उपेक्खको च विहरति सतो च सम्पजानो सुखञ्च कायेन पटिसंवेदेति, यं तं अरिया आचिक्खन्ति– "उपेक्खको सतिमा सुखविहारी"ति ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति अवितक्कं विचारमत्तं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २५३. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति प्रीत्याश्च विरागादुपेक्षकश्च विहरति स्मृतिमान् च सम्प्रज्ञानः सुखञ्च कायेन प्रतिसंवेदयति यत् तदार्या आचक्षन्ते 'उपेक्षकः स्मृतिमान् सुखविहारि' इति तृतीयं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति मैत्रीसहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः।

२५४. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति मैत्रीसहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः।

२५५. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति अवितर्कं विचारमात्रं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति मैत्रीसहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः।

(हिन्दी) २५३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है और प्रीति से विराग हो जाने पर उपेक्षा युक्त होकर विहार करता है एवं स्मृति से युक्त हो कर कायिक सुख का अनुभव करता है जिसके विषय में आर्य जन "उपेक्षा युक्त स्मृतिमान सुखपूर्वक् विहार करने वाला" कहते हैं। इस तरह के तृतीय ध्यान को प्राप्त कर मैत्री भावना के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर मैत्री-भावना के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है वितर्क से रहित, विशुद्ध विचार वाला समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख से युक्त द्वितीय ध्यान को प्राप्त कर मैत्री-भावना के साथ विहार करता है,उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं ततियं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति पीतिया च विरागा...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति मेत्तासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२५८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति करुणासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २५६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं तृतीयं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति मैत्रीसहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२५७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्य: प्रीत्या: च विरागात् ...पे०... चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति मैत्रीसहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२५८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति करुणासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २५६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले तृतीय ध्यान को प्राप्तकर मैत्री-भावना के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, प्रीति और वैराग्य...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर मैत्री भावना के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर करूणा-भावना के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२५९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे°... दुतियं झानं...पे°... ततियं झानं...पे°... पठमं झानं...पे°... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति करुणासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा कुसला।

२६०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति मुदितासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा कुसला।

२६१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे°... दुतियं झानं...पे°... ततियं झानं...पे°... पठमं झानं...पे°... चतुत्थं झानं

(संस्कृतच्छाया) २५९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे°... द्वितीयं ध्यानम् ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति करुणासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: कुशला:।

२६०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति मुदितासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: कुशला:।

२६१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे°... द्वितीयं ध्यानम् ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं

(हिन्दी) २५९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर करुणा-भावना के साथ विहरता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२६०. कौन से धर्मकुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर मुदिता-भावना के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२६१. कौन से धर्मकुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान

उपसम्पज्ज विहरति मुदितासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२६२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

६.असुभझानं सोळसक्खत्तुकं

२६३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति उद्धुमातकसञ्ञासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) ध्यानमुपसम्पद्य विहरति मुदितासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२६२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति सुखस्य च प्रहाणात् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति उपेक्षासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२६३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति उद्धमातकसंज्ञासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०...अविक्षेपो भवति...पे०...इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर मुदिता-भावना के साथ विहरता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२६२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है सुख एवं दुःख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दुःख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्त कर उपेक्षा-भावना के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२६३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर फूले हुए मृत शरीर के विषय में चेतना के साथ विहार करता...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२६४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति विनीलकसञ्ञासहगतं ...पे०... विपुब्बकसञ्ञासहगतं ...पे०... विच्छिद्दकसञ्ञासहगतं ...पे०... विक्खायितकसञ्ञासहगतं ...पे०... विक्खित्तकसञ्ञासहगतं ...पे०... हतविक्खित्तकसञ्ञासहगतं ...पे०... लोहितकसञ्ञासहगतं ...पे०... पुळवकसञ्ञासहगतं ...पे०... अट्ठिकसञ्ञासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

असुभझानं सोळसक्खत्तुकं।
रूपावचरकुसलं।

(संस्कृतच्छाया)२६४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति विनीलकसंज्ञासहगतं ...पे०... विपूयकसंज्ञासहगतम् ...पे०... विच्छिद्रकसंज्ञासहगतम् ...पे०... विखादितकसंज्ञासहगतम् ...पे०... विक्षिप्तकसंज्ञासहगतम् ...पे०... हतविक्षिप्तकसंज्ञासहगतम् ...पे०... लोहितकसंज्ञासहगतम् ...पे०... पुलवकसंज्ञासहगतम् ...पे०... अष्टिकसंज्ञासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

अशुभध्यानं षोडशकृत्व:।
रूपावचरकुशलम्।

(हिन्दी) २६४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विनीलकसंज्ञा के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... विपूर्यकसंज्ञा के साथ ...पूर्ववत्... विछिद्रगसंज्ञा के साथ ...पूर्ववत्... विख्यायितसंज्ञा के साथ ...पूर्ववत्... विक्षिप्तकसंज्ञा के साथ ...पूर्ववत्... हतविक्षिप्तकसंज्ञा के साथ ...पूर्ववत्... लोहितकसंज्ञा के साथ ...पूर्ववत्... पुलवकसंज्ञा के साथ...पूर्ववत्... अस्थिसंज्ञा के साथ, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

अशुभ ध्यान सोलह प्रकार से।
रूपावचरकुशल समाप्त।

३. अरूपावचरकुसलं

चत्तारि अरूपझानानि सोळसक्खत्तुकानि।

२६५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२६६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २६५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वश: रूपसंज्ञानां समतिक्रमात् प्रतिघसंज्ञानाम् अस्तङ्गमात् नानात्वसंज्ञानाम् अमनसिकारात् आकाशानन्त्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति उपेक्षासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२६६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वश: आकाशानन्त्यायतनं समतिक्रम्य विज्ञानान्त्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति उपेक्षासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी)२६५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय अरूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, तब सभी तरह से रूप संज्ञाओं का अतिक्रमण कर प्रतिहिंसा की संज्ञाओं के अस्त हो जाने से, नानात्वसंज्ञाओं का मन में ध्यान न कर, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से, सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित, उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर, आकाशानन्त्यायतन संज्ञा से युक्त उपेक्षा के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२६६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय अरूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, तब आकाशानन्त्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर, विज्ञानानत्यायतन संज्ञा के साथ, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित, उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर उपेक्षा के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२६७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२६८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति उपेक्खासहगतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया)२६७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वशो विज्ञानानन्त्यायतनं समतिक्रम्य आकिञ्चन्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति उपेक्षासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०...अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२६८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वशो आकिञ्चन्यायतनं समतिक्रम्य नैवसंज्ञानासंज्ञायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति उपेक्षासहगतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २६७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय अरूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, तब विज्ञानानन्त्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर आकिञ्चन्यायतनसंज्ञा के साथ, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर, उपेक्षा के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२६८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय अरूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, तब आकिञ्चन्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर नैवसंज्ञानासंज्ञायतन संज्ञा के साथ, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से, सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर उपेक्षा के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

४. तेभूमककुसलं

१. कामावचरकुसलं

२६९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं ...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०...पणीतं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०...पणीतं...पे०...वीमंसाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं...पे०...पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) २६९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं ज्ञानसम्प्रयुक्तं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्...पे०...छन्दाधिपत्यम् ...पे०...वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०...वीमंसाधिपत्यम्...पे०... छन्दाधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... वीर्याधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... चित्ताधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... वीमंसाधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) २६९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय सौमनस्य सहगत ज्ञान से संप्रयुक्त कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है हीन ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मीमांसा की प्रधानता...पूर्ववत्... हीन छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम...पूर्ववत्... प्रणीत...पूर्ववत्... हीन वीर्य की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत् ...पूर्ववत्... हीन चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्वक... हीन मीमांसा की प्रधानता .....मध्यम..... प्रणीत, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

२७०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये कामावचरं कुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं ञाणसम्पयुत्तं ससङ्खारेन ...पे°... सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं ...पे°... सोमनस्ससहगतं ञाणविप्पयुत्तं ससङ्खारेन...पे°... उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं...पे°... उपेक्खासहगतं ञाणसम्पयुत्तं ससङ्खारेन...पे°... उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं...पे°... उपेक्खासहगतं ञाणविप्पयुत्तं ससङ्खारेन हीनं...पे°... मज्झिमं...पे°... पणीतं...पे°... छन्दाधिपतेय्यं...पे°... वीरियाधिपतेय्यं...पे°... चित्ताधिपतेय्यं...पे°... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे°... मज्झिमं...पे°... पणीतं...पे°... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे°... मज्झिमं...पे°... पणीतं ...पे°... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे°... मज्झिमं ...पे°... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे°... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया)२७०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये कामावचरं कुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं ज्ञानसम्प्रयुक्तं ससंस्कारेन ...पे°... सौमनस्यसहगतं ज्ञानविप्रयुक्तम् ...पे°... सौमनस्यसहगतं ज्ञानविप्रयुक्तं ससंस्कारेन ...पे°... उपेक्षासहगतं ज्ञानसम्प्रयुक्तम् ...पे°... उपेक्षासहगतं ज्ञानसम्प्रयुक्तं ससंस्कारेन ...पे°... उपेक्षासहगतं ज्ञानविप्रयुक्तम् ...पे°... उपेक्षासहगतं ज्ञानविप्रयुक्तं ससंस्कारेन हीनम् ...पे°... मध्यमम् ...पे°... प्रणीतम् ...पे°... छन्दाधिपत्यम् ...पे°... वीर्याधिपत्यम् ...पे°... चित्ताधिपत्यम् ...पे°... छन्दाधिपत्यं हीनम् ...पे°... मध्यमम् ...पे°... प्रणीतम् ...पे°... वीर्याधिपत्यं हीनम् ...पे°... मध्यमम् ...पे°... प्रणीतम् ...पे°... चित्ताधिपत्यं हीनम् ...पे°...मध्यमम् ...पे°... प्रणीतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे°... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी)२७०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय सौमनस्य सहगत ज्ञान से सम्प्रयुक्त ससंस्कारिक कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है ...पूर्ववत्... सौमनस्यसहगत ज्ञान से विप्रयुक्त ...पूर्ववत्... सौमनस्यसहगत ज्ञान से विप्रयुक्त ससंस्कारिक ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त ससंस्कारिक ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानविप्रयुक्त ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानविप्रयुक्त ससंस्कारिक हीन ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... हीन छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम...पूर्ववत्... प्रणीत...पूर्ववत्... हीन चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

२.रूपावचरकुसलं

२७१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं हीनं ...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२७२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं

(संस्कृतच्छाया) २७१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम् ...पे०... छन्दाधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... वीर्याधिपत्यं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... चित्ताधिपत्यं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२७२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं

(हिन्दी) २७१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर हीन पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... हीन छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन वीर्य की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन चित्त की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२७२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, वितर्क-विचार को शान्तकर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान

झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं ...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

३.अरूपावचरकुसलं

२७३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा

(संस्कृतच्छाया) ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम् ...पे०... छन्दाधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... वीर्याधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... चित्ताधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः।

२७३. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वशः रूपसंज्ञानां समतिक्रमात् प्रतिघसंज्ञानाम् अस्तङ्गमनात् नानात्मसंज्ञानाम् अमनसिकारात्

(हिन्दी) ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान को प्राप्त हीन पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... हीन छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

२७३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय अरूपलोक की प्राप्ति के लिये मार्ग की भावना करता है तब सभी तरह के रूप संज्ञा का सर्वथा अतिक्रमण कर, प्रतिघ(प्रतिहिंसा) संज्ञा के अस्त(विनष्ट) हो जाने से नानत्व

आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२७४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०...

(संस्कृतच्छाया) आकाशानन्त्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणात् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम् ...पे०... छन्दाधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... वीर्याधिपत्यं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... चित्ताधिपत्यं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२७४.कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वश: आकाशानन्त्यायतनं समतिक्रम्य विज्ञानानन्त्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणात् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०...

(हिन्दी) (विविधता) संज्ञा को मन में न करने से, ध्यान कर आकाशानन्त्यायनसंज्ञा के साथ सुख का प्रहाण कर ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर हीन रूप में विहार करता है ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... हीन छन्द की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन वीर्य की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन चित्त की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन मीमांसा की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२७४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय अरूपलोक की प्राप्ति के लिये मार्ग की भावना करता है तब आकाशानन्त्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर, सुख को छोड़कर विज्ञानानन्त्यायतन संज्ञा के साथ विहार करता है

छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं ...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

२७५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना ...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं...पे०...

(संस्कृतच्छाया) छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम् ...पे०... छन्दाधिपत्यम् हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... वीर्याधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... चित्ताधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः।

२७५. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वशः विज्ञानानन्त्यायतनं समतिक्रम्य आकिञ्चन्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणात् ...पे०... चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम् ...पे०... छन्दाधिपत्यम् हीनम्

(हिन्दी) ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर हीन रूप में विहार करता है ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... हीन छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन चित्त की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन मीमांसा की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२७५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय अरूपलोक की प्राप्ति के लिये मार्ग की भावना करता है तब विज्ञानानन्त्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर, सुख को छोड़कर आकिञ्चन्यायतनसंज्ञा के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान प्राप्तकर हीन रूप में विहार करता है ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... हीन छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम

मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२७६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना ...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति हीनं...पे०...मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं ...पे०... छन्दाधिपतेय्यं हीनं ...पे०... मज्झिमं ...पे०... पणीतं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं हीनं...पे०... मज्झिमं...पे०... पणीतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) ...पे०... मध्यमम्...पे०... वीर्याधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम् हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

२७६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वश: आकिञ्चन्यायतनं समतिक्रम्य नैवसंज्ञानासंज्ञायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणात्...पे०...चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति हीनम् ...पे०...मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्...पे०... छन्दाधिपत्यम्...पे०... वीर्याधिपत्यम्...पे०...चित्ताधिपत्यम्...पे०...मीमांसाधिपत्यम् ...पे०... छन्दाधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... वीर्याधिपत्यं हीनम् ...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् हीनम् ...पे०...मध्यमम्...पे०...प्रणीतम्...पे०...मीमांसाधिपत्यं हीनम्...पे०... मध्यमम् ...पे०... प्रणीतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०...अविक्षेपो भवति...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी)...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन वीर्य की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन चित्त की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

२७६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय अरूपलोक की प्राप्ति के लिये मार्ग की भावना करता है तब आकिञ्चन्यायतनसंज्ञा का सर्वथा अतिक्रमण कर एवं सुख को छोड़कर नैवसंज्ञानासंज्ञायतन संज्ञा के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर हीन रूप में विहार करता है ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मीमांसा की प्रधानता ...पूर्ववत्... हीन छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत ...पूर्ववत्... हीन मीमांसा की प्रधानता...पूर्ववत्... मध्यम ...पूर्ववत्... प्रणीत, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

५. लोकुत्तरकुसलं

१. सुद्धिकपटिपदा

२७७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, सद्धिन्द्रियं होति, वीरियिन्द्रियं होति, सतिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, पञ्ञिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं होति, सम्मादिट्ठि होति, सम्मासङ्कप्पो होति, सम्मावाचा होति, सम्माकम्मन्तो होति, सम्माआजीवो होति, सम्मावायामो होति, सम्मासति होति, सम्मासमाधि होति, सद्धाबलं होति, वीरियबलं होति, सतिबलं होति, समाधिबलं होति, पञ्ञाबलं होति, हिरिबलं होति, ओत्तप्पबलं होति, अलोभो

(संस्कृतच्छाया) २७७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणात् प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्क भवति, विचारो भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, श्रद्धेन्द्रियं भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, स्मृतीन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, प्रज्ञेन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, अनाज्ञातमाज्ञास्यामीन्द्रियं भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, सम्यक्सङ्कल्पो भवति, सम्यग्वाक् भवति, सम्यक्कर्मान्तो भवति, सम्यगाजीवो भवति, सम्यग्व्यायामो भवति, सम्यक्स्मृति: भवति, सम्यक्समाधि: भवति, श्रद्धाबलं भवति, वीर्यबलं भवति, स्मृतिबलं भवति, समाधिबलं भवति, प्रज्ञाबलं भवति, ह्रीबलं भवति, अपत्राप्यबलं भवति, अलोभो

(हिन्दी)२७७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी (सञ्चित कुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है, सुख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, श्रद्धा-इन्द्रिय होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, स्मृति-इन्द्रिय होती है, समाधि-इन्द्रिय होती है, प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है, मन-इन्द्रिय होती है, सौमनस्य-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है अनाज्ञात-ज्ञात-इन्द्रिय, होती है सम्यग्दृष्टि होती है, सम्यक्संकल्प होता है, सम्यग्वाक् होता है, सम्यक्कर्मान्त होता है, सम्यगाजीव होता है, सम्यग्व्यायाम होता है, सम्यक्स्मृति होती है, सम्यक्समाधि होती है, श्रद्धा-बल होता है, वीर्यबल होता है,

होति, अदोसो होति, अमोहो होति, अनभिज्झा होति, अब्यापादो होति, सम्मादिट्ठि होति, हिरी होति, ओत्तप्पं होति, कायपस्सद्धि होति, चित्तपस्सद्धि होति, कायलहुता होति, चित्तलहुता होति, कायमुदुता होति, चित्तमुदुता होति, कायकम्मञ्ञता होति, चित्तकम्मञ्ञता होति, कायपागुञ्ञता होति, चित्तपागुञ्ञता होति, कायुजुकता होति, चित्तुजुकता होति, सति होति, सम्पजञ्ञं होति, समथो होति, विपस्सना होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

२७८. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

२७९. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जा मनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं

(संस्कृतच्छाया) भवति, अद्वेषो भवति, अमोहो भवति, अनभिध्या भवति, अव्यापादो भवति, सम्यग्दृष्टि: भवति, ह्री: भवति, अपत्राप्यं भवति, कायप्रश्रब्द्धिर्भवति, चित्तप्रश्रब्द्धिर्भवति, कायलहुता भवति, चित्तलहुता भवति, कायमृदुता भवति, चित्तमृदुता भवति, कायकर्मण्यता भवति, चित्तकर्मण्यता भवति, कायप्रागुण्यता भवति, चित्तप्रागुण्यता भवति, कायर्जुकता भवति, चित्तर्जुकता भवति, स्मृति: भवति, सम्प्रजन्यं भवति, शमथो भवति, विपश्यना भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

२७८. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

२७९. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं

(हिन्दी) स्मृति-बल होता है, समाधि-बल होता है, प्रज्ञा-बल होता है, ह्री-बल होता है, अपत्राप्य-बल होता है, अलोभ होता है, अद्वेष होता है, अमोह होता है, अनभिध्या होती है, अव्यापाद होता है, सम्यग्दृष्टि होती है, ह्री होती है, अपत्राप्य होती है, कायप्रश्रद्धि होती है, चित्तप्रश्रद्धि होती है, कायलघुता होती है, चित्तलघुता होती है, कायमृदुता होती है, चित्तमृदुता होती है, कायकर्मण्यता होती है, चित्तकर्मण्यता होती है, कायप्रागुण्यता होती है, चित्तप्रागुण्यता होती है, कायऋजुकता होती है, चित्तऋजुकता होती है, स्मृति होती है, सम्प्रजन्य होता है, शमथ होता है, विपश्यना होती है, प्रग्राह होता है, अविक्षेप होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

२७८. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श कराना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय स्पर्श होता है।

२७९. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय उस मनोविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द, सुख का अनुभव और चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द

वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

२८०. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

२८१. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

२८२. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

(संस्कृतच्छाया) वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

२८०. कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्वम्– इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

२८१. कतमा तस्मिन् समये चेतना भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम्– इयं तस्मिन् समये चेतना भवति ।

२८२. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातुः– इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति।

(हिन्दी) एवं सुख की वेदना है- यह उस समय की वेदना होती है।

२८०. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न संज्ञा है, जो भली प्रकार से जानना और भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय में संज्ञा होती है।

२८१.. उस समय कौन सी चेतना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चेतना, भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय की चेतना होती हे।

२८२. उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन-मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उस से उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय का चित्त होता है।

२८३. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

२८४. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

२८५. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स पीतिसम्बोज्झङ्गो – अयं तस्मिं समये पीति होति।

२८६. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

(संस्कृतच्छाया)२८३. कतम: तस्मिन् समये वितर्को भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपणं सम्यक्सङ्कल्पो मार्गाङ्गो मार्गपर्यापन्न: – अयं तस्मिन् समये वितर्को भवति।

२८४. कतम: तस्मिन् समये विचारो भवति? य: तस्मिन् समये चारो विचार: अनुविचार: उपविचार: चित्तस्य अनुसन्धानत्वम् अनुप्रेक्षणत्वम् – अयं तस्मिन् समये विचारो भवति।

२९५. कतमा तस्मिन् समये प्रीति: भवति? या तस्मिन् समये प्रीति: प्रामोद्यं आमोदनं प्रमोदनं हास: प्रहास: वित्ति औदग्रयम् आप्तमनता चित्तस्य प्रीतिसम्बोध्यङ्ग: – इयं तस्मिन् समये प्रीति: भवति।

२८६. कतमं तस्मिन् समये सुखं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इदं तस्मिन् समये सुखं भवति।

(हिन्दी)२८३. उस समय कौन सा वितर्क होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), तर्क-वितर्क(किसी आलम्बन पर चित्त को रखना), किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना, चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना तथा सम्यक् संकल्प, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग या मार्ग पर आरूढ है- यही उस समय की वितर्क होता है।

२८४. उस समय कौन सा विचार होता है? जो उस समय चार, विचारना, अनुविचार, उपविचार, चित्त की अनुसन्धानता एवं ध्यान (विचार) होता है- यही उस समय का विचार है।

२८५. उस समय कौन सी प्रीति होती है? जो उस समय प्रीति, प्रसन्नता, प्रमुदित होना, प्रमोदना, हँसी, प्रहास, वित्ति, मन का उपर उठ जाने की स्थिति, चित्त की प्रसन्नता एवं प्रीतिसंबोध्यंग है- यही उस समय की प्रीति है।

२८६. उस समय कौन सा सुख होता है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्तसंस्पर्श के द्वारा उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न प्रिय एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय सुख होता है।

२८७. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

२८८. कतमं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धिन्द्रियं होति।

२८९. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो वीरियसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया)२८७. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: समाधिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – इयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकग्रता भवति।

२८८. कतमं तस्मिन् समये श्रद्धेन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये श्रद्धा श्रद्दधानम् अवकल्पनम् अभिप्रसाद: श्रद्धा श्रद्धेन्द्रियं श्रद्धाबलम् – इदं तस्मिन् समये श्रद्धेन्द्रियं भवति।

२८९. कतमं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायामो वीर्यसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – इदं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) २८७. उस समय कौन सी चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति, सुदृढ़ स्थिति, अचञ्चलता, अविक्षेप, चित्त की शान्त अवस्था, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल, सम्यक्समाधि, सम्बोधि के अंग-स्वरूप समाधि, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग या मार्ग पर आरूढ़ है - यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

२८८. उस समय कौन सी श्रद्धा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय श्रद्धा, विश्वास करना, दृढ़ धारणा रखना, अत्यधिक श्रद्धा है, वही श्रद्धा, श्रद्धेन्द्रिय, श्रद्धाबल है- यही उस समय श्रद्धा-इन्द्रिय होती है।

२८९.उस समय कौन सी वीर्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम का परिपूर्ण रहना), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम, सम्बोधि के अंग-स्वरूप वीर्य, आर्य-अष्टाङ्गिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है - यही उस समय वीर्य-इन्द्रिय होती है।

२९०. कतमं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति सतिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये सतिन्द्रियं होति।

२९१. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति।

२९२. कतमं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा

(संस्कृतच्छाया) २९०. कतमं तस्मिन् समये स्मृतीन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति: स्मृतिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – इदं तस्मिन् समये स्मृतीन्द्रियं भवति।

२९१. कतमं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: समाधिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – इदं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति।

२९२. कतमं तस्मिन् समये प्रज्ञेन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: संलक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्लं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा

(हिन्दी) २९०. उस समय कौन सी स्मृति-इन्द्रिय होती है? जो उस समय स्मृति, अतीत धर्मों का स्मरण, प्रतिस्मृति (विचारणा), स्मरण, स्मरण करना, मन में धारण करना, अविस्मरण की अवस्था, नहीं भूलने की स्थिति, स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति, स्मृति-सम्बोध्यङ्ग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय स्मृति-इन्द्रिय होती है।

२९१. उस समय कौन सी समाधि-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ़ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल, सम्यक्समाधि, समाधि-सम्बोध्यङ्ग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है - यही उस समय समाधि-इन्द्रिय है।

२९२. उस समय कौन सी प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, उपलक्षण(विवेचनात्मक ज्ञान), प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (धर्मों को अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (धर्मों का सम्यक्

पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये पञ्ञिन्द्रियं होति।

२९३. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

२९४. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया) प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम्– इदं तस्मिन् समये प्रज्ञेन्द्रियं भवति।

२९३. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

२९४. कतमं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इदं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) प्रकार से अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली है), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचय-सम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय प्रज्ञा-इन्द्रिय होती है।

२९३. उस समय कौन सी मन-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है - यही उस समय मन-इन्द्रिय होती है।

२९४. उस समय कौन सी सौमनस्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुख की अनुभूति, चैतसिक संस्पर्श से उत्पन्न आनन्दमयी एवं सुखमयी वेदना है- यही उस समय सौमनस्य-इन्द्रिय होती है।

२९५. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति।

२९६. कतमं तस्मिं समये अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं होति? या तेसं धम्मानं अनञ्ञातानं अदिट्ठानं अप्पत्तानं अविदितानं असच्छिकतानं सच्छिकिरियाय पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया)२९५. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? य: तेषाम् अरूपिणां धर्माणाम् आयु: स्थिति: यपना यापना ईरणं वर्तनं पालनं जीवितं जीवितेन्द्रियम् – इदं तस्मिन् समये जीवितीन्द्रियं भवति।

२९६. कतमं तस्मिन् समये अनाज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियं भवति? या तेषां धर्माणाम् अनाज्ञातानाम् अदृष्टानाम् अप्राप्तानाम् अविदितानाम् असाक्षात्कृतानां साक्षात्क्रियायै प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचयो सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्लं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम्– इदं तस्मिन् समये अनाज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियं भवति।

(हिन्दी)२९५. उस समय कौन सी जीवित-इन्द्रिय होती है? जो उन अरूप धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत होना, गुजरना, जीवन-स्थिति, बढ़ना, पालना, जीवन, जीवित-इन्द्रिय है- यही उस समय जीवित-इन्द्रिय है।

२९६. उस समय कौन सी अनाज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रिय (किसी अज्ञात धर्म को जानने हेतु संकल्प लेने वाली इन्द्रिय)होती है? जो उन अनाज्ञात (नहीं जाने हुए), नहीं दिखे हुए, अप्राप्त, अविदित, असाक्षात्कृत धर्मों के साक्षात्कार करने के लिये, जो प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचय-सम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय अनाज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रिय होती है।

२९७. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

२९८. कतमो तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना सम्मासङ्कप्पो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मासङ्कप्पो होति।

(संस्कृतच्छाया) २९७. कतमा तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति।

२९८. कतम: तस्मिन् समये सम्यक्सङ्कल्पो भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपणं सम्यक्सङ्कल्पो मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम्– अयं तस्मिन् समये सम्यक्सङ्कल्पो भवति ।

(हिन्दी)२९७. उस समय कौन सी सम्यग्दृष्टि होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश(गलत रास्ते पर जाने से रोकने वाली), प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचय-सम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अङ्ग या मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय सम्यग्दृष्टि होती है।

२९८. उस समय कौन सा सम्यक्संकल्प होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ निश्चय), अर्पण (किसी आलम्बन पर चित्त की एकाग्रता), व्यार्पण(किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना), चित्त का अभिनिरोपण (चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना) तथा सम्यक् संकल्प, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अङ्ग या मार्ग पर आरूढ़ है - यही उस समय सम्यक् संकल्प होता है।

२९९. कतमा तस्मिं समये सम्मावाचा होति? या तस्मिं समये चतूहि वचीदुच्चरितेहि आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो सम्मावाचा मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मावाचा होति।

३००. कतमो तस्मिं समये सम्माकम्मन्तो होति? या तस्मिं समये तीहि कायदुच्चरितेहि आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो सम्माकम्मन्तो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्माकम्मन्तो होति।

३०१. कतमो तस्मिं समये सम्माआजीवो होति? या तस्मिं समये मिच्छाआजीवा आरति विरति पटिविरति वेरमणी अकिरिया अकरणं अनज्झापत्ति वेलाअनतिक्कमो सेतुघातो सम्माआजीवो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्माआजीवो होति।

(संस्कृतच्छाया)२९९. कतमा तस्मिन् समये सम्यग्वाग् भवति? या तस्मिन् समये चतुर्भ्यो वाक्दुश्चरितेभ्य: अरति विरति प्रतिविरति वीरमणी अक्रिया अकरणम् अनध्यापत्ति वेलानतिक्रम: सेतुघात: सम्यग्वाग् मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये सम्यग्वाग् भवति।

३००. कतम: तस्मिन् समये सम्यक्कर्मान्तो भवति? या तस्मिन् समये त्रिभ्य: कायदुश्चरितेभ्य: अरति विरति प्रतिविरति वीरमणी अक्रिया अकरणम् अनध्यापत्ति वेलानतिक्रम: सेतुघात: सम्यक्कर्मान्तो मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम्– अयं तस्मिन् समये सम्यक्कर्मान्तो भवति।

३०१. कतम: तस्मिन् समये सम्यगाजीवो भवति? या तस्मिन् समये मिथ्याजीवात् अरति विरति प्रतिविरति वीरमणी अक्रिया अकरणम् अनध्यापत्ति वेलानतिक्रम: सेतुघात: सम्यगाजीवो मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये सम्यगाजीवो भवति।

(हिन्दी) २९९. उस समय कौन सा सम्यक्वाक् होता है? जो उस समय चार वाग्दुश्चरितों से दूर रहने का प्रयत्न, विरति, प्रतिविरति, विरमण, अकरणीय कामों को न करना, वर्जित कामों को न करना, समय का उल्लंघन न करना, वाग्दुश्चरित कारणों को नष्ट करना, सम्यक्वाक्, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय सम्यक्वाक् होता है।

३००. उस समय कौन सा सम्यक्कर्मान्त होता है? जो उस समय तीन कायदुश्चरित से दूर रहने का प्रयत्न, विरति, प्रतिविरति, विरमण, अकरणीय कामों को न करना, वर्जित कामों को न करना, समय का उल्लंघन न करना, वाग्दुश्चरित कारणों को नष्ट करना, सम्यक्कर्मान्त, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय सम्यक्कर्मान्त होता है।

३०१. उस समय कौन सी सम्यगाजीव होती है? जो उस समय समय मिथ्या-आजीव से दूर रहने का प्रयत्न, विरति, प्रतिविरति, विरमण, अकरणीय कामों को न करना, वर्जित कामों का न करना, ऐसे समय अतिक्रमण कर, वाग्दुश्चरित कारणों को नष्ट करता है, सम्यगाजीव, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय सम्यगाजीव होती है।

३०२. कतमो तस्मिं समये सम्मावायामो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो वीरियसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मावायामो होति।

३०३. कतमा तस्मिं समये सम्मासति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति सतिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मासति होति।

३०४. कतमो तस्मिं समये सम्मासमाधि होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मासमाधि होति।

(संस्कृतच्छाया)३०२. कतम: तस्मिन् समये सम्यग्व्यायामो भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्रहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायामो वीर्यसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये सम्यग्व्यायामो भवति।

३०३. कतमा तस्मिन् समये सम्यक्स्मृति: भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति: स्मृतिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये सम्यक्स्मृति: भवति ।

३०४. कतम: तस्मिन् समये सम्यक्समाधि: भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: समाधिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये सम्यक्समाधि: भवति ।

(हिन्दी) ३०२. उस समय कौन सा सम्यग्व्यायाम होता है? जो उस समय चैतसिक वीर्य-आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, अशिथिलपराक्रमत्वम् (सुदृढ़ पराक्रम की परिपूर्ण रहने का भाव), अनिक्षिप्तछन्द का भाव (सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा), अनिक्षिप्तधुर का भाव (सुदृढ़ वीर्य वाला होना), सुदृढ़ प्रयत्न करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम, वीर्यसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है - यही उस समय सम्यग्व्यायाम होता है।

३०३. उस समय कौन सी सम्यक्स्मृति होती है? जो उस समय स्मृति, अतीत धर्मों का स्मरण, प्रतिस्मृति (विचारणा), स्मरण, स्मरण करना, मन में धारण करना, अविस्मरण की अवस्था, नहीं भूलने की स्थिति, स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति, स्मृतिसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय सम्यक्स्मृति होती है।

३०४. उस समय कौन सी सम्यक्समाधि होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ़ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल, सम्यक्समाधि, समाधिसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय सम्यक्समाधि होती है।

३०५. कतमं तस्मिं समये सद्धाबलं होति? या तस्मिं समये सद्धा सद्दहना ओकप्पना अभिप्पसादो सद्धा सद्धिन्द्रियं सद्धाबलं – इदं तस्मिं समये सद्धाबलं होति।

३०६. कतमं तस्मिं समये वीरियबलं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो वीरियसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं– इदं तस्मिं समये वीरियबलं होति।

३०७. कतमं तस्मिं समये सतिबलं होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति सतिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये सतिबलं होति।

(संस्कृतच्छाया)३०५. कतमं तस्मिन् समये श्रद्धाबलं भवति? या तस्मिन् समये श्रद्धा श्रद्दधानम् अवकल्पनम् अभिप्रसाद: श्रद्धा श्रद्धेन्द्रियं श्रद्धाबलम् – इदं तस्मिन् समये श्रद्धाबलं भवति।

३०६. कतमं तस्मिन् समये वीर्यबलं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यम: व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायामो वीर्यसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – इदं तस्मिन् समये वीर्यबलं भवति।

३०७. कतमं तस्मिन् समये स्मृतिबलं भवति? या तस्मिन् समये स्मृति: अनुस्मृति: प्रतिस्मृति: स्मृति: स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृति: स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृति: स्मृतिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम्– इदं तस्मिन् समये स्मृतिबलं भवति।

(हिन्दी) ३०५. उस समय कौन सा श्रद्धाबल होता है? जो उस समय श्रद्धा, विश्वास करना, दृढ़ धारणा रखना, अत्यधिक श्रद्धा है, वही श्रद्धा, श्रद्धेन्द्रिय, श्रद्धाबल है- यही उस समय श्रद्धाबल होता है।

३०६. उस समय कौन सा वीर्यबल होता है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम से परिपूर्ण रहना), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम, वीर्यसम्बोध्यङ्ग, आर्य-अष्टाङ्गिकमार्ग का अङ्ग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय वीर्यबल होता है।

३०७. उस समय कौन सा स्मृतिबल होता है? जो उस समय स्मृति, अनुस्मृति(अतीत धर्मों का स्मरण), विचारणा, स्मरण करना, मन में धारण करना, बार-बार दोहराना, अविस्मरण की अवस्था, अविक्षिप्तता(स्मृति के विप्रलोप का अभाव), स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति स्मृतिसम्बोध्यङ्ग, आर्य-अष्टांगिकमार्ग का अङ्ग एवं मार्ग पर आरूढ़ है - यही उस समय स्मृति-बल होता है।

३०८. कतमं तस्मिं समये समाधिबलं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये समाधिबलं होति।

३०९. कतमं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये पञ्ञाबलं होति।

३१०. कतमं तस्मिं समये हिरिबलं होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये हिरिबलं होति।

(संस्कृतच्छाया)३०८. कतमं तस्मिन् समये समाधिबलं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: समाधिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – इदं तस्मिन् समये समाधिबलं भवति।

३०९. कतमं तस्मिन् समये प्रज्ञाबलं भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम्– इदं तस्मिन् समये प्रज्ञाबलं भवति।

३१०. कतमं तस्मिन् समये ह्रीबलं भवति? यत् तस्मिन् समये जिह्रेति ह्रीतव्येन जिह्रेति पापकानाम् अकुशलानां धर्माणां समापत्त्यै – इदं तस्मिन् समये ह्रीबलं भवति।

(हिन्दी) ३०८. उस समय कौन सा समाधि-बल होता है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल, सम्यक्समाधि, समाधिसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय समाधि-बल होता है।

३०९. उस समय कौन सा प्रज्ञा-बल होता है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि का धर्मो की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान),अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचयसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही समय उस प्रज्ञा बल होता है।

३१०. उस समय कौन सा ह्रीबल होता है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में (आत्म) लज्जा करता है, (आत्म) लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है- यही उस समय ह्रीबल होता है।

३११. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पबलं होति।

३१२. कतमो तस्मिं समये अलोभो होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अलोभो होति।

३१३. कतमो तस्मिं समये अदोसो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अदोसो होति।

३१४. कतमो तस्मिं समये अमोहो होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा

(संस्कृतच्छाया)३११. कतमं तस्मिन् समये अपत्राप्यबलं भवति? यत् तस्मिन् समये अपत्राप्यति अपत्रापितव्येन अपत्राप्यति पापकानाम् अकुशलानां धर्माणां समापत्त्यै– इदं तस्मिन् समये अपत्राप्यबलं भवति।

३१२. कतम: तस्मिन् समये अलोभो भवति? य: तस्मिन् समये अलोभ: अलोभनम् अलुब्धितत्वम् असराग: असंरञ्जनम् असंरञ्जितत्वम् अनभिध्या अलोभ: कुशलमूलम्– अयं तस्मिन् समये अलोभो भवति।

३१३. कतम: तस्मिन् समये अद्वेषो भवति? य: तस्मिन् समये अद्वेष: अदूषणम् अदूषितत्वम् अव्यापाद: अव्यापाद्यम् अद्वेष: कुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये अद्वेषो भवति।

३१४. कतम: तस्मिन् समये अमोहो भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्लं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा

(हिन्दी)३११. उस समय कौन सा अपत्राप्य-बल होता है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में सामाजिक लज्जा करता है, समाजिक लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है - यही उस समय अपत्राप्य-बल होता है।

३१२. उस समय कौन सा अलोभ होता है? जो उस समय अलोभ, लोभ का न होना, लोभ से मुक्त होना, राग रहित, राग का अभाव, अनासक्तिभाव, तृष्णा का अभाव और जो कुशलमूल अलोभ है- यही उस समय अलोभ होता है।

३१३. उस समय कौन सा अद्वेष होता है? जो उस समय द्वेष का अभाव, द्वेष का न होना, द्वेष से मुक्त होने की अवस्था, अव्यापाद (पर विनाश चिन्ता का अभाव), तुच्छता का अभाव और कुशलमूल के रूप में जो अद्वेष हैं- यही उस समय अद्वेष होता है।

३१४. उस समय कौन सा अमोह होता है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय, अनित्य- अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण, निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान,

पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये अमोहो होति।

३१५. कतमा तस्मिं समये अनभिज्झा होति? यो तस्मिं समये अलोभो अलुब्भना अलुब्भितत्तं असारागो असारज्जना असारज्जितत्तं अनभिज्झा अलोभो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अनभिज्झा होति।

३१६. कतमो तस्मिं समये अब्यापादो होति? यो तस्मिं समये अदोसो अदुस्सना अदुस्सितत्तं अब्यापादो अब्यापज्जो अदोसो कुसलमूलं – अयं तस्मिं समये अब्यापादो होति।

३१७. कतमा तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं

(संस्कृतच्छाया) प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये अमोहो भवति ।

३१५. कतमा तस्मिन् समये अनभिध्या भवति? य: तस्मिन् समये अलोभ: अलोभनम् अलुब्धितत्वम् असंराग: असंरञ्जनम् असंरञ्जितत्वम् अनभिध्या अलोभ: कुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये अनभिध्या भवति।

३१६. कतम: तस्मिन् समये अव्यापादो भवति? य: तस्मिन् समये अद्वेष: अदूषणम् अदूषितत्वम् अव्यापाद: अव्यापद्य: अद्वेष: कुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये अव्यापादो भवति।

३१७. कतमा तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्लं नैपुण्यं

(हिन्दी) प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जाँच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचयसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय अमोह होता है।

३१५. उस समय कौन सी अनभिध्या (अनासक्ति) होती है? जो उस समय अलोभ, लोभ का न होना, लोभ से मुक्त होना, राग रहित, राग का अभाव, अनासक्तिभाव, तृष्णा का अभाव और जो कुशलमूल अलोभ है- यही उस समय अनभिध्या होती है।

३१६. उस समय कौन सा अव्यापाद होता है? जो उस समय द्वेष का अभाव, द्वेष का न होना, द्वेष से मुक्त होने की अवस्था, अव्यापाद (पर विनाश चिन्ता का अभाव), तुच्छता का अभाव और कुशलमूल के रूप में जो अद्वेष है - यही उस समय अव्यापद होता है।

वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सम्मादिट्ठि होति।

३१८. कतमा तस्मिं समये हिरी होति? यं तस्मिं समये हिरीयति हिरियितब्बेन हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – अयं तस्मिं समये हिरी होति।

३१९. कतमं तस्मिं समये ओत्तप्पं होति? यं तस्मिं समये ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये ओत्तप्पं होति।

(संस्कृतच्छाया) वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये सम्यग्दृष्टि: भवति।

३१८. कतमा तस्मिन् समये ह्री: भवति? यत् तस्मिन् समये जिह्रेति ह्रीतव्येन जिह्रेति पापकानाम् अकुशलानां धर्माणां समापत्त्यै – अयं तस्मिन् समये ह्री: भवति।

३१९. कतमं तस्मिन् समये अपत्राप्यं भवति? यं तस्मिन् समये अपत्राप्यति अपत्राप्येन अपत्राप्यति पापकानाम् अकुशलानां धर्माणां समापत्त्यै – इदं तस्मिन् समये अपत्राप्यं भवति।

(हिन्दी)३१७. उस समय कौन सी सम्यग्दृष्टि होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन(अनित्य आदि का चयन), प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय (अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का अन्वेषण), निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दु:ख का ज्ञान), अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचयसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ है- यही उस समय सम्यग्दृष्टि होती है।

३१८. उस समय कौन सी ह्री होती है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में (आत्म) लज्जा करता है, (आत्म) लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है- यही उस समय ह्री होती है।

३१९. उस समय कौन सी अपत्राप्य होती है? जो उस समय पापयुक्त अकुशल धर्मों के करने में सामाजिक लज्जा करता है, समाजिक लज्जा करने योग्य कर्म में भी लज्जा करता है - यही उस समय अपत्राप्य होती है।

३२०. कतमा तस्मिं समये कायपस्सद्धि होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स पस्सद्धि पटिपस्सद्धि पस्सम्भना पटिपस्सम्भना पटिपस्सम्भितत्तं पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गो – अयं तस्मिं समये कायपस्सद्धि होति।

३२१. कतमा तस्मिं समये चित्तपस्सद्धि होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स पस्सद्धि पटिपस्सद्धि पस्सम्भना पटिपस्सम्भना पटिपस्सम्भितत्तं पस्सद्धिसम्बोज्झङ्गो – अयं तस्मिं समये चित्तपस्सद्धि होति।

३२२. कतमा तस्मिं समये कायलहुता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – अयं तस्मिं समये कायलहुता होति।

(संस्कृतच्छाया)३२०. कतमा तस्मिन् समये कायप्रश्रब्धिर्भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य प्रश्रब्धि: प्रतिप्रश्रब्धि: प्रश्रम्भणं प्रतिप्रश्रम्भणं प्रतिप्रश्रब्धत्वं प्रश्रब्धिसम्बोध्यङ्गम् – इयं तस्मिन् समये कायप्रश्रब्धिर्भवति।

३२१. कतमा तस्मिन् समये चित्तप्रश्रब्धिर्भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य प्रश्रब्धि: प्रतिप्रश्रब्धि: प्रश्रम्भणं प्रतिप्रश्रम्भणं प्रतिप्रश्रब्धत्वं प्रश्रब्धिसम्बोध्यङ्गम्– इयं तस्मिन् समये चित्तप्रश्रब्धिर्भवति।

३२२. कतमा तस्मिन् समये कायलघुता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य लघुता लघुपरिणामता अतन्द्रता अविस्त्यानत्वम् – इयं तस्मिन् समये कायलघुता भवति।

(हिन्दी)३२०. उस समय कौन सी कायप्रश्रब्धि होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं संस्कारस्कन्ध के क्लेशों की उपशन की अवस्था, प्रतिप्रश्रब्धि(चैतसिको में क्लेशों की पूर्ण उपशन की अवस्था), चैतसिकों में क्लेशों के उपशन की क्रिया, चैतसिकों में क्लेशों के पूर्ण उपशन की क्रिया, तीनों स्कन्धों में क्लेशों की पूर्ण उपशमन की अवस्था है- यही उस समय कायप्रश्रब्धि होती है।

३२१. उस समय कौन सी चित्तप्रश्रब्धि होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध के क्लेशों की उपशन की अवस्था, चित्त में क्लेशों की पूर्ण उपशन की अवस्था, चैतसिकों में क्लेशों के उपशन की क्रिया, चैतसिकों में क्लेशों के पूर्ण उपशन की क्रिया, क्लेशों की पूर्ण उपशमन की अवस्था है- यही उस समय चित्तप्रश्रब्धि होती है।

३२२. उस समय कौन सी कायलघुता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं संस्कारस्कन्ध का हल्का पन होना, लघु परिणाम से युक्त होना, भारीपन एवं शिथिलता का अभाव है- यही उस समय कायलघुता होती है।

३२३. कतमा तस्मिं समये चित्तलहुता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स लहुता लहुपरिणामता अदन्धनता अवित्थनता – अयं तस्मिं समये चित्तलहुता होति।

३२४. कतमा तस्मिं समये कायमुदुता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – अयं तस्मिं समये कायमुदुता होति।

३२५. कतमा तस्मिं समये चित्तमुदुता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स मुदुता मद्दवता अकक्खळता अकथिनता – अयं तस्मिं समये चित्तमुदुता होति।

३२६. कतमा तस्मिं समये कायकम्मञ्ञता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – अयं तस्मिं समये कायकम्मञ्ञता होति।

(संस्कृतच्छाया)३२३. कतमा तस्मिन् समये चित्तलघुता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य लघुता लघुपरिणामता अतन्द्रता अविस्त्यानत्वम् – इयं तस्मिन् समये चित्तलघुता भवति।

३२४. कतमा तस्मिन् समये कायमृदुता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य मृदुता मार्द्रवम् अकक्खटता अकथिनता – इयं तस्मिन् समये कायमृदुता भवति।

३२५. कतमा तस्मिन् समये चित्तमृदुता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य मृदुता मार्द्रवम् अकक्खटता अकथिनता – इयं तस्मिन् समये चित्तमृदुता भवति।

३२६. कतमा तस्मिन् समये कायकर्मण्यता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य कर्मण्यता कर्मण्यत्वं कर्मण्यभाव: – इयं तस्मिन् समये कायकर्मण्यता भवति।

(हिन्दी) ३२३. उस समय कौन सी चित्तलघुता होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध का हल्का पन होना, लघु परिणाम से युक्त होना, भारीपन एवं शिथिलता का अभाव है- यही उस समय चित्तलघुता होती है।

३२४. उस समय कौन सी कायमृदुता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध के मृदुभाव, लचीलापन, कोमलता, अकथनीता है- यही उस समय काममृदुता होती है।

३२५. उस समय कौन सी चित्तमृदुता होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध के मृदुता, लचीलापन, कोमलता, अकथनीता है- यही उस समय चित्तमृदुता होती है।

३२६. उस समय कौन सी कायकर्मण्यता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध की कर्मण्यता(कुशल क्रियाओं को ठीक से करने की क्षमता), कर्मण्यतत्व(कुशल क्रियाओं को ठीक से करने की प्रकृति) एवं कर्मण्य का भाव है- यही उस समय कायकर्मण्यता होती है।

३२७. कतमा तस्मिं समये चित्तकम्मञ्ञता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स कम्मञ्ञता कम्मञ्ञत्तं कम्मञ्ञभावो – अयं तस्मिं समये चित्तकम्मञ्ञता होति।

३२८. कतमा तस्मिं समये कायपागुञ्ञता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स पगुणता पगुणत्तं पगुणभावो– अयं तस्मिं समये कायपागुञ्ञता होति।

३२९. कतमा तस्मिं समये चित्तपागुञ्ञता होति? या तस्मिं समये विञ्ञाणक्खन्धस्स पगुणता पगुणत्तं पगुणभावो – अयं तस्मिं समये चित्तपागुञ्ञता होति।

३३०. कतमा तस्मिं समये कायुजुकता होति? या तस्मिं समये वेदनाक्खन्धस्स सञ्ञाक्खन्धस्स सङ्खारक्खन्धस्स उजुता उजुकता अजिम्हता अवङ्कता अकुटिलता – अयं तस्मिं समये कायुजुकता होति।

(संस्कृतच्छाया)३२७. कतमा तस्मिन् समये चित्तकर्मण्यता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य कर्मण्यता कर्मण्यत्वं कर्मण्यभाव: – इयं तस्मिन् समये चित्तकर्मण्यता भवति।

३२८. कतमा तस्मिन् समये कायप्रागुण्यता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य प्रगुता प्रागुण्यत्वं प्रागुण्यभाव: – इयं तस्मिन् समये कायप्रागुण्यता भवति ।

३२९. कतमा तस्मिन् समये चित्तप्रागुण्यता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य प्रगुता प्रागुण्यत्वं प्रागुण्यभाव: – इयं तस्मिन् समये चित्तप्रागुण्यता भवति।

३३०. कतमा तस्मिन् समये कायर्जुकता भवति? या तस्मिन् समये वेदनास्कन्धस्य संज्ञास्कन्धस्य संस्कारस्कन्धस्य ऋजुता ऋजुकत्वम् अजिह्मता अवक्रता अकुटिलता – इयं तस्मिन् समये कायर्जुकता भवति।

(हिन्दी)३२७. उस समय कौन सी चित्तकर्मण्यता होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध की कर्मण्यता (कुशल क्रियाओं को ठीक से करने की क्षमता), कर्मण्यत्व(कुशल क्रियाओं को ठीक से करने की प्रकृति) एवं कर्मण्य का भाव है - यही उस समय चित्तकर्मण्यता होती है।

३२८. उस समय कौन सी कायप्रागुण्यता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध की प्रागुण्यता (आतुरता का उपशम करना), प्रागुण्यत्व, प्रागुण्य(आतुरता का न होने) का भाव है- यही उस समय कायप्रागुण्यता होती है।

३२९. उस समय कौन सी चित्त-प्रागुण्यता होती है? जो उस समय विज्ञानस्कन्ध की प्रागुण्यता, प्रागुण्यत्व एवं प्रागुण्य का भाव है- यही उस समय चित्तप्रागुण्यता होती है।

३३०. उस समय कौन सी काय-ऋजुकता होती है? जो उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, संस्कारस्कन्ध की सरलता(कुटीलता का अभाव), साधुता(अकुशल का अभाव), आर्जवता(सरलता का भाव), अवक्रता(सीधापन का भाव), अकुटिलता है- यही उस समय काय-ऋजुकता होती है।

३३१. कतमा तस्मिन् समये चित्तृजुकता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य उजुता ऋजुकत्त्व अजिह्मता अवङ्कता अकुटिलता – इयं तस्मिन् समये चित्तृजुकता भवति।

३३२. कतमा तस्मिं समये सति होति? या तस्मिं समये सति अनुस्सति पटिस्सति सति सरणता धारणता अपिलापनता असम्मुस्सनता सति सतिन्द्रियं सतिबलं सम्मासति सतिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये सति होति।

३३३. कतमं तस्मिं समये सम्पजञ्ञं होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – इदं तस्मिं समये सम्पजञ्ञं होति।

(संस्कृतच्छाया)३३१. कतमा तस्मिन् समये चित्तर्जुकता भवति? या तस्मिन् समये विज्ञानस्कन्धस्य ऋजुता ऋजुकत्वम् अजिह्मता अवक्रता अकुटिलता – इयं तस्मिन् समये चित्तर्जुकता भवति।

३३२. कतमा तस्मिन् समये स्मृतिर्भवति? या तस्मिन् समये स्मृतिः अनुस्मृतिः प्रतिस्मृतिः स्मृतिः स्मरणता धारणता अप्लावनता असम्मर्षणता स्मृतिः स्मृतीन्द्रियं स्मृतिबलं सम्यक्स्मृतिः स्मृतिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – इयं तस्मिन् समये स्मृतिर्भवति।

३३३. कतमं तस्मिन् समये सम्प्रजन्यं भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचयः प्रविचयो धर्मविचयः सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरिः मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोदः प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासादः प्रज्ञालोकः प्रज्ञावभासः प्रज्ञाप्रद्योतः प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचयः सम्यग्दृष्टिः धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – इदं तस्मिन् समये सम्प्रजन्यं भवति।

(हिन्दी)३३१. उस समय कौन सी चित्त-ऋजुकता होती है? जो उस समय विज्ञान-स्कन्ध की सरलता, साधुता, आर्जवता(सरलता का भाव), सीधापन का भाव, अकुटिलता है- यही उस समय चित्त-ऋजुकता होती है।

३३२. उस समय कौन सी स्मृति होती है? जो उस समय स्मृति, अनुस्मृति(अतीत धर्मों का स्मरण), विचारणा, स्मरण करना, मन में धारण करना, बार-बार दोहराना, अविस्मरण की अवस्था, अविक्षिप्तता, स्मृति, स्मृति-इन्द्रिय, स्मृति-बल, सम्यक्स्मृति, स्मृतिसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय स्मृति होती है।

३३३. उस समय कौन सा सम्प्रजन्य होता है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन, प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय, निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दुःख का ज्ञान), अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचयसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय सम्प्रजन्य होता है।

३३४. कतमो तस्मिं समये समथो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये समथो होति।

३३५. कतमा तस्मिं समये विपस्सना होति? या तस्मिं समये पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं– अयं तस्मिं समये विपस्सना होति।

(संस्कृतच्छाया)३३४. कतम: तस्मिन् समये शमथो भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: समाधिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये शमथो भवति।

३३५. कतमा तस्मिन् समये विपश्यना भवति? या तस्मिन् समये प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये विपश्यना भवति।

(हिन्दी)३३४. उस समय कौन सा शमथ होता है? जो उस समय चित्त की (आनम्बन पर)स्थिति, संस्थिति(सुदृढ़स्थिति), अवस्थिति, अचञ्चलता, अविक्षेप, शान्त चित्त वाला, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल, सम्यक्समाधि, समाधिसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है - यही उस समय शमथ होता है।

३३५. उस समय कौन सी विपश्यना होती है? जो उस समय प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन, प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय, निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना (अनित्य आदि विविध आकार द्वारा देखना), सम्प्रजन्य (सम्यक् प्रकार से धर्मों के अनित्य, अनात्म एवं दुःख का ज्ञान), अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचयसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय विपश्यना होती है।

३३६. कतमो तस्मिं समये पग्गाहो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं सम्मावायामो वीरियसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये पग्गाहो होति।

३३७. कतमो तस्मिं समये अविक्खेपो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं सम्मासमाधि समाधिसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं – अयं तस्मिं समये अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, नविन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, अट्ठङ्गिको मग्गो होति, सत्त बलानि

(संस्कृतच्छाया) ३३६. कतम: तस्मिन् समये प्रग्राहो भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायाम: वीर्यसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये प्रग्राहो भवति।

३३७. कतम: तस्मिन् समये अविक्षेपो भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं सम्यक्समाधि: समाधिसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम् – अयं तस्मिन् समये अविक्षेपो भवति। ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, नवेन्द्रियानि भवन्ति, पञ्चाङ्गिकं ध्यानं भवति, अष्टाङ्गिको मार्गो भवति, सप्त बलानि

(हिन्दी)३३६. उस समय कौन सा प्रग्राह(पकड़) होता है? जो उस समय वीर्य रूपी चैतसिक का आरम्भ, प्रयत्न, पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीतरता, सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रत्यन करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल सम्यग्व्यायाम, वीर्यसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है - यही उस समय प्रग्राह होता है।

३३७. उस समय कौन सा अविक्षेप होता है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति, अवस्थिति अचंचलता, अविक्षेप, शान्त चित्त की अवस्था, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल सम्यक्समाधि, समाधिबल, सम्यक्समाधि, समाधिसम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग एवं मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय अविक्षेप होता है; ये अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म कुशल हैं।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, नव-इन्द्रियाँ

होन्ति, तयो हेतू होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला...पे०...।

३३८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता सद्धिन्द्रियं वीरियिन्द्रियं सतिन्द्रियं समाधिन्द्रियं पञ्ञिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं अनञ्ञातञ्ञस्सामीतिन्द्रियं सम्मादिट्ठि सम्मासङ्कप्पो सम्मावाचा सम्माकम्मन्तो सम्माआजीवो सम्मावायामो सम्मासति सम्मासमाधि सद्धाबलं वीरियबलं सतिबलं समाधिबलं पञ्ञाबलं हिरिबलं ओत्तप्पबलं अलोभो अदोसो अमोहो अनभिज्झा अब्यापादो सम्मादिट्ठि हिरी ओत्तप्पं

(संस्कृतच्छाया) भवन्ति, त्रयो हेतवो भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति, एका वेदना भवति, एका संज्ञा भवति, एका चेतना भवति, एकं चित्तं भवति, एको वेदनास्कन्धो भवति, एक: संज्ञास्कन्धो भवति, एक: संस्कारस्कन्धो भवति, एको विज्ञानस्कन्धो भवति, एकं मनआयतनं भवति, एकं मनइन्द्रियं भवति, एको मनोविज्ञानधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला: ...पे०... ।

३३८. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचार: प्रीति: चित्तस्यैकाग्रता श्रद्धेन्द्रियं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं जीवितेन्द्रियं अनाज्ञातमाज्ञास्यामीतीन्द्रियं सम्यग्दृष्टि: सम्यक्सङ्कल्प: सम्यक्वाक् सम्यक्कर्मान्त: सम्यगाजीव: सम्यग्व्यायाम: सम्यक्स्मृति: सम्यक्समाधि: श्रद्धाबलं वीर्यबलं स्मृतिबलं समाधिबलं प्रज्ञाबलं ह्रीबलं अपत्राप्यबलं अलोभ: अद्वेष: अमोह: अनभिध्या अब्यापाद: सम्यग्दृष्टि: ह्री: अपत्राप्यं

(हिन्दी) होती हैं, पाँच अंगों वाला ध्यान होता है, आठ अंगों वाला मार्ग होता है, सात बल होते हैं, तीन हेतुएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है, एक वेदना होती है, एक संज्ञा होती है, एक चेतना होती है, एक चित्त होता है, एक वेदनास्कन्ध होता है, एक संज्ञास्कन्ध होता है, एक संस्कार स्कन्ध होता है, एक विज्ञान स्कन्ध होता है, एक मनआयतन होता है, एक मन-इन्द्रिय होती है, एक मनोविज्ञानधातु होती है, एक धर्म-आयतन होता है, एक धर्मधातु होती है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

३३८. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता, श्रद्धा-इन्द्रिय, वीर्य-इन्द्रिय, स्मृति-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, प्रज्ञा-इन्द्रिय, जीवित-इन्द्रिय, अनाज्ञातमाज्ञास्यामीन्द्रिय, सम्यग्दृष्टि, सम्यक्संकल्प, सम्यग्वाक्, सम्यक्कर्मान्त, सम्यगाजीव, सम्यग्व्यायाम, सम्यक्स्मृति, सम्यग्समाधि, श्रद्धाबल, वीर्य-बल, स्मृति-बल, समाधि-बल, प्रज्ञाबल, ह्रीबल, अपत्राप्य-बल, अलोभ, अद्वेष, अमोह, अनभिध्या, अव्यापाद, सम्यग्दृष्टि, ह्री, अपत्राप्य,

कायपस्सद्धि चित्तपस्सद्धि कायलहुता चित्तलहुता कायमुदुता चित्तमुदुता कायकम्मञ्ञता चित्तकम्मञ्ञता कायपागुञ्ञता चित्तपागुञ्ञता कायुजुकता चित्तुजुकता सति सम्पजञ्ञं समथो विपस्सना पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे॰... इमे धम्मा कुसला।

३३९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) कायप्रश्रद्धि: चित्तप्रश्रद्धि: कायलघुता चित्तलघुता कायमृदुता चित्तमृदुता कायकर्मण्यता चित्तकर्मण्यता कायप्रागुण्यता चित्तप्रागुण्यता कायर्जुकता चित्तर्जुकता स्मृति: सम्प्रजन्यं शमथो विपश्यना प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे॰... इमे धर्मा: कुशला: ।

३३९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे॰... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) कायप्रश्रब्धि, चित्तप्रश्रब्धि, कायलघुता, चित्तलघुता, कायमृदुता, चित्तमृदुता, कायकर्मण्यता, चित्तकर्मण्यता, कायप्रागुण्यता, चित्तप्रागुण्यता, काय-ऋजुकता, चित्त-ऋजुकता, स्मृति, सम्प्रजन्य, शमथ, विपश्यना, प्रग्राह अविक्षेप है, अथवा वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३३९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचितकुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

३४०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि ...पे°... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा कुसला।

३४१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे°... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा कुसला।

३४२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा ...पे°... दुतियं झानं

(संस्कृतच्छाया)३४०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे°... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: कुशला:।

३४१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे°... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: कुशला:।

३४२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे°...

(हिन्दी) ३४०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचितकुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३४१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला।

२.सुञ्ञतं

३४३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३४३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति शून्यतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) ३४२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचितकुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचारों को शान्तकर...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३४३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचित कुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

३४४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३. सुञ्ञतमूलकपटिपदा

३४५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) ३४४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति शून्यतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३४५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकुत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं दन्धाभिज्ञं शून्यतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) ३४४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचितकुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचार को शान्तकर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३४५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत् दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता वाले... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३४६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३४७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३४८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं

(संस्कृतच्छाया)३४६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३४७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३४८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं

(हिन्दी)३४६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३४७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३४८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को

उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

३४९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं ...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

३४९. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) प्राप्तकर सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

३४९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचितकुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचारों को शान्तकर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर शून्यता के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

४. अप्पणिहितं

३५०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) ३५०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३५१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी)३५०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर अप्रणिहित(सुदृढ संकल्प से रहित) के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३५१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचार को शान्तकर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर अप्रणिहित के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

५.अप्पणिहितमूलकपटिपदा

३५२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं ञानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं ञानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) ३५२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३५३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

(हिन्दी) ३५२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचितकुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित(सुदृढ संकल्प से रहित) वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३५३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचितकुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३५४. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५५. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

३५६. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं

(संस्कृतच्छाया) ३५४. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३५५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३५६. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम्

(हिन्दी) ३५४. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३५५. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३५६. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों

...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं...पे०... दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

६.वीसति महानया

३५७. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं मग्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सतिपट्ठानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सम्मप्पधानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इद्धिपादं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इन्द्रियं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बलं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बोज्झङ्गं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सच्चं भावेति...पे०... लोकुत्तरं समथं भावेति...पे०...

(संस्कृतच्छाया) ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३५७. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं मार्गं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं स्मृतिप्रस्थानं भावयति...पे०... लोकोत्तरं सम्यक्प्रधानं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् ऋद्धिपादं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् इन्द्रियं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं बलं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं बोध्यङ्गं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं सत्यं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं शमथं भावयति ...पे०...

(हिन्दी) के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचार को शान्तकर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३५७. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय लोकोत्तर मार्ग की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्मृतिप्रस्थान की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर सम्यक्प्रधान की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर ऋद्धिपाद् की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर इन्द्रिय की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर बल की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर बोध्यांग की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर सत्य की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर शमथ की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर धर्म की भावना करता है

लोकुत्तरं धम्मं भावेति...पे०... लोकुत्तरं खन्धं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आयतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धातुं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आहारं भावेति...पे०... लोकुत्तरं फस्सं भावेति...पे०... लोकुत्तरं वेदनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं सञ्ञं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चेतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चित्तं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

७. अधिपति

३५८. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं

(संस्कृतच्छाया) लोकोत्तरं धर्मं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं स्कन्धं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् आयतनं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं धातुं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् आहारम् भावयति ...पे०... लोकोत्तरं स्पर्शं भावयति ...पे०... लोकोत्तरां वेदनां भावयति ...पे०... लोकोत्तरां संज्ञां भावयति ...पे०... लोकोत्तरां चेतनां भावयति ...पे०... लोकोत्तरं चित्तं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३५८. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं

(हिन्दी) ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्कन्ध की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर आयतन की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर धातु की भवना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर आहार की भावना करता है ...पूर्ववत्... स्पर्श ...पूर्ववत्... वेदना ...पूर्ववत्... संज्ञा ...पूर्ववत्... चेतना ...पूर्ववत्... नैर्याणिक अपचयगामी मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण एवं प्रथम भूमि के प्राप्ति के लिये लोकोत्तर चित्त की भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा के साथ विहार करता है, तस्मिन समये स्पर्श होता ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३५८. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचितकुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... वीर्य की

दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... वीरियाधिपतेय्यं...पे०... चित्ताधिपतेय्यं...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

३५९. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा ...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला।

(संस्कृतच्छाया) तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः।

३५९. कतमे धर्माः कुशलाः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै वितर्कविचारयोः व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः।

(हिन्दी) प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीमांसा की प्रधानता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

३५९. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचित कुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचार को शान्तकर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीमांसा की प्रधानता है- उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

३६०. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं मग्गं भावेति...पे०...लोकुत्तरं सतिपट्ठानं भावेति...पे०...लोकुत्तरं सम्मप्पधानं भावेति...पे०... लोकुत्तरं इद्धिपादं भावेति...पे०...लोकुत्तरं इन्द्रियं भावेति...पे०...लोकुत्तरं बलं भावेति...पे०...लोकुत्तरं बोज्झङ्गं भावेति...पे०...लोकुत्तरं सच्चं भावेति...पे०...लोकुत्तरं समथं भावेति...पे०...लोकुत्तरं धम्मं भावेति...पे०...लोकुत्तरं खन्धं भावेति...पे०...लोकुत्तरं आयतनं भावेति...पे०...लोकुत्तरं धातुं भावेति...पे०...लोकुत्तरं आहारं भावेति...पे०...लोकुत्तरं फस्सं भावेति...पे०...लोकुत्तरं वेदनं भावेति...पे०...लोकुत्तरं सञ्ञं भावेति...पे०... लोकुत्तरं चेतनं भावेति...पे०...लोकुत्तरं चित्तं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०...पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं...पे०...वीरियाधिपतेय्यं...पे०...चित्ताधिपतेय्यं ...पे०...वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

पठमो मग्गो।

(संस्कृतच्छाया) ३६०. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं मार्गं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं स्मृतिप्रस्थानं भावयति...पे०... लोकोत्तरं सम्यक्प्रधानं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् ऋद्धिपादं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् इन्द्रियं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं बलं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं बोध्यङ्गं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं सत्यं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं शमथं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं धर्मं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं स्कन्धं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् आयतनं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं धातुं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् आहारम् भावयति ...पे०... लोकोत्तरं स्पर्शं भावयति ...पे०... लोकोत्तरां वेदनां भावयति ...पे०... लोकोत्तरं संज्ञां भावयति ...पे०... लोकोत्तरां चेतनां भावयति ...पे०... लोकोत्तरं चित्तं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... मीमांसाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। प्रथम: मार्ग:।

(हिन्दी)३६०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय लोकोत्तर मार्ग की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्मृतिप्रस्थान की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर सम्यक्प्रधान की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर ऋद्धिपाद की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर इन्द्रिय की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर बल की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर बोध्यांग की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर सत्य की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर शमथ की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर धर्म की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्कन्ध की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर आयतन की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर धातु की भवना करता है ...पूर्ववत्... आहार ...पूर्ववत्... स्पर्श ...पूर्ववत्... वेदना ...पूर्ववत्... संज्ञा ...पूर्ववत्... चेतना ...पूर्ववत्... जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीमांसा की प्रधानता, उस समय स्पर्श होता है...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। प्रथम मार्ग।

३६१. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं कामरागब्यापादानं तनुभावाय दुतियाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

दुतियो मग्गो।

३६२. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं कामरागब्यापादानं अनवसेसप्पहानाय ततियाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला।

ततियो मग्गो।

(संस्कृतच्छाया) ३६१. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं कामरागव्यापादयो: तनुभावाय द्वितीयाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... आज्ञेन्द्रियं भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

द्वितीय: मार्ग:।

३६२. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं कामरागव्यापादयो: अनवशेषप्रहाणाय तृतीयाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... आज्ञेन्द्रियं भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

तृतीय: मार्ग:।

(हिन्दी)३६१. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक (मार्गफल आदि को जानते हुए जाने वाला) एवं अपचयगामी(संचित कुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की कामराग एवं व्यापाद को शान्त करने हेतु तथा द्वितीय भूमि की प्राप्ति के लिये भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... आज्ञेन्द्रिय(अर्हत अवस्था में प्राप्त इन्द्रिय) होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। द्वितीय मार्ग।

३६२. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी(संचित कुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की कामराग एवं व्यापाद को सम्पूर्ण रूप से शमन करने तथा तृतीय भूमि की प्राप्ति के लिये भावना करता है, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... आज्ञेन्द्रिय होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। तृतीय मार्ग।

३६३. कतमे धम्मा कुसला? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं रूपरागअरूपरागमानउद्धच्चअविज्जाय अनवसेसप्पहानाय चतुत्थाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०...अविक्खेपो होति...पे०...इमे धम्मा कुसला...पे०...।

३६४. कतमं तस्मिं समये अञ्ञिन्द्रियं होति? या तेसं धम्मानं ञातानं दिट्ठानं पत्तानं विदितानं सच्छिकतानं सच्छिकिरियाय पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं, इदं तस्मिं समये अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला। चतुत्थो मग्गो।

(संस्कृतच्छाया)३६३. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं रूपरागारूपरागमानौद्धत्याविद्याया: अनवशेषप्रहाणाय चतुर्थाय भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, ...पे०... आज्ञेन्द्रियं भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:।

३६४. कतमं तस्मिन् समये आज्ञेन्द्रियं भवति? या तेषां धर्माणां ज्ञातानां दृष्टानां प्राप्तानां विदितानां साक्षात्कृतानां साक्षात्क्रियायै प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: संलक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या-चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम्– इदं तस्मिन् समये आज्ञेन्द्रियं भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला:। चतुर्थ: मार्ग:।

(हिन्दी)३६३. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी(संचित कुशल अकुशल एवं च्युतिसन्धि का विध्वंस करते हुए जाने वाला) लोकोत्तर ध्यान की रूपराग, अरूपराग मान, औद्धत्य-अविद्या के प्राहाण एवं चतुर्थ भूमि की प्राप्ति के लिये, काम-भोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... आज्ञेन्दिय(अर्हत् के ज्ञान द्वारा प्राप्त इन्दिय) होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

३६४. उस समय कौन सी आज्ञेन्द्रिय होती है? जो उन ज्ञात, दृष्ट, प्राप्त, जाने हुये, साक्षात किया हुये धर्मों के साक्षात्कार्य के लिये जो प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, अनित्य आदि का चयन, प्रविचय, धर्मविचय, निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना, सम्प्रजन्य, अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचय-सम्बोध्यंग, आर्य-अष्टांगिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है, यही उस समय आज्ञेन्द्रिय(अर्हत अवस्था में प्राप्त इन्द्रिय) होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। चतुर्थ मार्ग।

२. अकुसला धम्मा

१. लोभचित्तानि

१. पठमं चित्तं

३६५. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छादिट्ठि होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, मोहो होति, अभिज्झा होति, मिच्छादिट्ठि होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया)३६५. कतमे धर्मा: कुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं दृष्टिगतसम्प्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्यैन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, मिथ्यादृष्टि: भवति, मिथ्यासङ्कल्पो भवति, मिथ्याव्यायामो भवति, मिथ्यासमाधिर्भवति, वीर्यबलं भवति, समाधिबलं भवति, अह्रीबलं भवति, अपत्राप्यबलं भवति, लोभो भवति, मोहो भवति, अभिद्या भवति, मिथ्यादृष्टि: भवति, अह्री: भवति, अपत्राप्यं भवति, शमथो भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला: ...पे०... ।

(हिन्दी)३६५. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय सौमनस्य सहगत मिथ्यादृष्टि से संप्रयुक्त रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है, सुख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, समाधीन्द्रिय होती है, मनइन्द्रिय होती है, सौमनस्येन्द्रिय होती है, जीवित-इन्द्रिय होती है, मिथ्यादृष्टि होती है, मिथ्यासंकल्प होता है, मिथ्याव्यायाम होता है, मिथ्यासमाधि होती है, वीर्यबल होता है, समाधिबल होता है, अह्रीबल होता है, अपत्राप्यबल होता है, लोभ होता है, मोह होता है, अभिध्या होती है, मिथ्यादृष्टि होती है, अह्रीक्य होती है, अपत्राप्य होता है, शमथ होता है, प्रग्राह होती है, अविक्षेप होता है; ये अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म कुशल हैं।

३६६. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

३६७. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

३६८. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

३६९. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

(संस्कृतच्छाया) ३६६. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

३६७. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

३६८. कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्त्वम्– इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

३६९. कतमा तस्मिन् समये चेतना भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम्– इयं तस्मिन् समये चेतना भवति ।

(हिन्दी) ३६६. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श होता है।

३६७. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द, सुख अनुभव और चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुख की वेदना है- यही उस समय की वेदना होती है।

३६८. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न संज्ञा है, जो भली प्रकार से जानना और भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय में संज्ञा होती है।

३६९. उस समय कौन सी चेतना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चेतना, भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय की चेतना होती हे।

३७०. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

३७१. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना मिच्छासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

३७२. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

३७३. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये पीति होति।

(संस्कृतच्छाया)३७०. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति ।

३७१. कतम: तस्मिन् समये वितर्को भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपणं सम्यक्सङ्कल्प:– अयं तस्मिन् समये वितर्को भवति।

३७२. कतम: तस्मिन् समये विचारो भवति? य: तस्मिन् समये चारो विचार: अनुविचार: उपविचार: चित्तस्य अनुसन्धानत्वम् अनुप्रेक्षनत्वम् – अयं तस्मिन् समये विचारो भवति।

३७३. कतमा तस्मिन् समये प्रीति: भवति? या तस्मिन् समये प्रीति: प्रामोद्यम् आमोदनं प्रमोदनं हास: प्रहासो वित्ति: औदग्र्यम् आप्तमनता चित्तस्य – इयं तस्मिन् समये प्रीति: भवति।

(हिन्दी) ३७०. उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन,मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय चित्त होता है।

३७१. उस समय कौन सा वितर्क होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), तर्क-वितर्क (किसी आलम्बन पर चित्त को रखना), किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना, चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना तथा सम्यक् संकल्प है- यही उस समय वितर्क होता है।

३७२. उस समय कौन सा विचार होता है? जो उस समय गतिशील होना, विचार, अनुविचार(आलम्बन के पीछे-पीछे विचरण करना), उपविचार(आलम्बन के समीप विचरण करना), चित्त की आलम्बन की खोज परक प्रवृत्ति एवं आलम्बन के प्रति उपेक्षा रहित होने की प्रवृत्ति है- यही उस समय विचार होता है।

३७३. उस समय कौन सी प्रीति होती है? जो उस समय प्रीति, प्रसन्नता, आमोद्य, प्रमोदता, हँसी, प्रहास, वित्ति (प्रसन्नता), तेजस्वी(आनन्द से मन का उपर उठ जाने की स्थिति) एवं चित्त की आप्तमनता(प्रसन्नता) है- यही उस समय प्रीति होती है।

३७४. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

३७५. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

३७६. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तच्छन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं मिच्छावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया)३७४. कतमं तस्मिन् समये सुखं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये सुखं भवति।

३७५. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं मिथ्यासमाधि:– इयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति।

३७६. कतमं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं मिथ्याव्यायाम:– इदं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति।

(हिन्दी)३७४. उस समय कौन सा सुख होता है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्तसंस्पर्श के द्वारा उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न प्रिय एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय सुख होता है।

३७५. उस समय कौन से चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति(सम्यक् रूप से स्थिति), सुदृढ़ स्थिति, अचञ्चलता, अविक्षेप, चित्त की शान्त अवस्था, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

३७६. उस समय कौन सी वीर्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम की दशा), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है - यही उस समय वीर्य-इन्द्रिय होती है।

३७७. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति?

३७८. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु– इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

३७९. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

३८०. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं– इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया) ३७७. कतमं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्मृतिः संस्थितिः अवस्थितिः अविसंहारः अविक्षेपः अविसंहृतमानसता शमथः समाधीन्द्रियं समाधिबलं मिथ्यासमाधिः – इदं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति।

३७८. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यं तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातुः– इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

३७९. कतमं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति।

३८०. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? यः तेषाम् अरूपीणां धर्माणाम् आयुः स्थितिः यपना यापना ईरणं वर्तनं पालनं जीवितं जीवितेन्द्रियम्– इदं तस्मिन् समये जीवितीन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) ३७७. उस समय कौन सी समाधि-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ़ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय समाधि-इन्द्रिय होती है।

३७८. उस समय कौन सी मन-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय मन-इन्द्रिय होती है।

३७९. उस समय कौन सी सौमनस्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुख की अनुभूति, चैतसिक संस्पर्श से उत्पन्न आनन्दमयि एवं सुखमयि वेदना है- यही उस समय सौमनस्य-इन्द्रिय होती है।

३८०. उस समय कौन सी जीवित-इन्द्रिय होती है? जो उन अरूपी धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत होना, गुजरना, क्रिया शीलता,विद्यमान रहना, पालन करना, जीवन और जीवित-इन्द्रिय है- यही उस समय जीवित-इन्द्रिय होती है।

३८१. कतमा तस्मिं समये मिच्छादिट्ठि होति? या तस्मिं समये दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं तस्मिं समये मिच्छादिट्ठि होति।

३८२. कतमो तस्मिं समये मिच्छासङ्कप्पो होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना मिच्छासङ्कप्पो – अयं तस्मिं समये मिच्छासङ्कप्पो होति।

३८३. कतमो तस्मिं समये मिच्छावायामो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं मिच्छावायामो– अयं तस्मिं समये मिच्छावायामो होति।

(संस्कृतच्छाया)३८१.कतमा तस्मिन् समये मिथ्यादृष्टिर्भवति? या तस्मिन् समये दृष्टि: दृष्टिगतं दृष्टिगहनं दृष्टिकान्तारो दृष्टिविसूकायिकं दृष्टिविप्फन्दितं दृष्टिसंयोजनं ग्राह: प्रतिग्राह: अभिनिवेश: परामर्श: कुमार्गो मिथ्यापथो मिथ्यात्वं तिर्थायतनं विपर्यासग्राह:– अयं तस्मिन् समये मिथ्यादृष्टिर्भवति।

३८२. कतम: तस्मिन् समये मिथ्यासङ्कल्पो भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपणं मिथ्यासङ्कल्प: – अयं तस्मिन् समये मिथ्यासङ्कल्पो भवति।

३८३. कतम: तस्मिन् समये मिथ्याव्यायामो भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भ: निष्क्रम: पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं मिथ्याव्यायाम: – अयं तस्मिन् समये मिथ्याव्यायामो भवति।

(हिन्दी) ३८१. उस समय कौन सी मिथ्यादृष्टि होती है? जो उस समय मिथ्यादृष्टि, मिथ्या धारणा, मिथ्या दृष्टियों का घना जंगल, मिथ्या सिद्धान्तों का जंगल, सम्यक्-दृष्टि को बेध देने वाली मिथ्यादृष्टि, मिथ्या धारणाओं की तरह-तरह से उछल-कूद, मन को बन्धनग्रस्त करने वाली मिथ्यादृष्टि, पकड़ने वाला, प्रतिग्रह, अभिनिवेश(दृढ़ धारणा), परामर्श(मिथ्या स्पर्श), कुमार्ग, मिथ्यापथ, मिथ्या का भाव, तिर्थायतन(सम्प्रदाय विशेष के सिद्वान्त), विपर्यासग्राह है- यही उस समय मिथ्यादृष्टि है।

३८२. उस समय कौन सा मिथ्यासंकल्प होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), तर्क-वितर्क (किसी आलम्बन पर चित्त को रखना), किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना, चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना तथा मिथ्यासंकल्प- यही उस समय मिथ्यासंकल्प होता है।

३८३. उस समय कौन सा मिथ्याव्यायाम होता है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम का परिपूर्ण रहना), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, मिथ्याव्यायाम है - यही उस समय मिथ्याव्यायाम होता है।

३८४. कतमो तस्मिं समये मिच्छासमाधि होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – अयं तस्मिं समये मिच्छासमाधि होति।

३८५. कतमं तस्मिं समये वीरियबलं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तच्छन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं मिच्छावायामो – इदं तस्मिं समये वीरियबलं होति।

३८६. कतमं तस्मिं समये समाधिबलं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – इदं तस्मिं समये समाधिबलं होति।

(संस्कृतच्छाया) ३८४. कतम: तस्मिन् समये मिथ्यासमाधि: भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं मिथ्यासमाधि: – अयं तस्मिन् समये मिथ्यासमाधि: भवति।

३८५. कतमं तस्मिन् समये वीर्यबलं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं मिथ्याव्यायाम: – इदं तस्मिन् समये वीर्यबलं भवति।

३८६. कतमं तस्मिन् समये समाधिबलं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं मिथ्यासमाधि: – इदं तस्मिन् समये समाधिबलं भवति।

(हिन्दी)३८४. उस समय कौन सी मिथ्यासमाधि होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ़ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल और मिथ्यासमाधि है - यही उस समय मिथ्यासमाधि होत है।

३८५. उस समय वीर्यबल क्या होता है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम की परिपूर्ण रहना), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है- यही उस समय वीर्यबल होता है।

३८६. उस समय समाधि-बल क्या होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), अवस्थिति (सुदृढ़ स्थिति), अचंचलता, अविक्षेप, अविक्षिप्त चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्त अवस्था, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय समाधि-बल होता है।

३८७. कतमं तस्मिं समये अहिरिकबलं होति? यं तस्मिं समये न हिरीयति हिरियितब्बेन न हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये अहिरिकबलं होति।

३८८. कतमं तस्मिं समये अनोत्तप्पबलं होति? यं तस्मिं समये न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन न ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये अनोत्तप्पबलं होति।

३८९. कतमो तस्मिं समये लोभो होति? यो तस्मिं समये लोभो लुब्भना लुब्भितत्तं सारागो सारज्जना सारज्जितत्तं अभिज्झा लोभो अकुसलमूलं – अयं तस्मिं समये लोभो होति।

३९०. कतमो तस्मिं समये मोहो होति? यं तस्मिं समये अञ्ञाणं अदस्सनं अनभिसमयो अननुबोधो असम्बोधो अप्पटिवेधो असंगाहना अपरियोगाहना असमपेक्खना अपच्चवेक्खना अपच्चक्खकम्मं दुम्मेज्झं बाल्यं असम्पजञ्ञं मोहो पमोहो सम्मोहो अविज्जा अविज्जोघो अविज्जायोगो अविज्जानुसयो अविज्जापरियुट्ठानं अविज्जालङ्गी मोहो अकुसलमूलं – अयं तस्मिं समये मोहो होति।

(संस्कृतच्छाया) ३८७. कतमं तस्मिन् समये अह्रीबलं भवति? यत् तस्मिन् समये न जिह्रेति ह्रीतव्येन न जिह्रेति पापकानाम् अकुशलानां धर्मणां समापत्त्यै – इदं तस्मिन् समये अह्रीबलं भवति।

३८८. कतमं तस्मिन् समये अनपत्राप्यबलं भवति? यत् तस्मिन् समये न अपत्राप्यति अपत्राप्यव्येन न अपत्राप्यति पापकानाम् अकुशलानां धर्मणां समापत्त्यै– इदं तस्मिन् समये अनपत्राप्यबलं भवति ।

३८९. कतम: तस्मिन् समये लोभो भवति? य: तस्मिन् समये लोभो लोभनम् अलुब्धत्वम् असंराग: संरञ्जनं संरञ्जितत्वम् अभिध्या लोभ: कुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये लोभो भवति ।

३९०. कतम: तस्मिन् समये मोहो भवति? यत् तस्मिन् समये अज्ञानम् अदर्शनम् अनभिसमय अननुबोध: असम्बोध: अप्रतिवेध: असंगाहना अपर्यगाहना असम्प्रेक्षणा अप्रत्यवेक्षणा अप्रत्यक्षकर्मनं दुर्मेध्यं बाल्यं असम्प्रजन्यं मोह: प्रमोह: सम्मोह: अविद्या अविद्यौघ: अविद्यायोग: अविद्यानुशय: अविद्यापर्यवस्थानम् अविद्यालङ्गी मोह: अकुशलमूलम्– अयं तस्मिन् समये मोहो भवति।

(हिन्दी) ३८७. उस समय कौन सा अह्रीक-बल होता है? जो उस समय आत्म लज्जा करने योग्य धर्मों में आत्म लज्जा नहीं करता तथा पाप से युक्त अकुशल धर्म के प्राप्ति में लज्जा नहीं करता है - यही उस समय अह्रीकवल होता है।

३८८. उस समय कौन सा अनपत्राप्यबल होता है? जो उस समय सामाजिक लज्जा करने योग्य धर्मों में लज्जा नहीं करता तथा पाप से युक्त अकुशल धर्म के प्राप्ति में लज्जा नहीं करता है - यही उस समय अनपत्राप्यबल होता है।

३८९. उस समय कौन सा लोभ होता है? जो उस समय लोभ, लोभ करना, लोभ से युक्त होना, राग, राग करना, राग से युक्त, अभिध्या, लोभ, अकुशल मूल है - यही उस समय लोभ होता है।

३९०. उस समय कौन सा मोह होता है? जो उस समय अज्ञान अदर्शन, अनभिसमय, अननुबोध, असम्बोध, अप्रतिबोध, असंगाहना, अपर्योगाहना(सूक्ष्म परीक्षण न करना), असंप्रेक्षण, प्रत्यक्ष अनुभव से रहित, अपरीक्षण, दुर्बुद्धि, बाल, असम्प्रजन्य, मोह, प्रमोद, सम्मोह, अविज्ञा, अविद्या-ओघ, अविद्या-योग, अविद्या-अनुशय, अविद्या द्वारा अभिभूय हो जाना, अविद्या रूपी घेरा, मोह, अकुशलमूल है- यही उस समय मोह होता है।

३९१. कतमा तस्मिं समये अभिज्झा होति? यो तस्मिं समये लोभो लुब्भना लुब्भितत्तं सारागो सारज्जना सारज्जितत्तं अभिज्झा लोभो अकुसलमूलं– अयं तस्मिं समये अभिज्झा होति।

३९२. कतमा तस्मिं समये मिच्छादिट्ठि होति? या तस्मिं समये दिट्ठि दिट्ठिगतं दिट्ठिगहनं दिट्ठिकन्तारो दिट्ठिविसूकायिकं दिट्ठिविप्फन्दितं दिट्ठिसंयोजनं गाहो पतिट्ठाहो अभिनिवेसो परामासो कुम्मग्गो मिच्छापथो मिच्छत्तं तित्थायतनं विपरियासग्गाहो – अयं तस्मिं समये मिच्छादिट्ठि होति।

३९३. कतमं तस्मिं समये अहिरिकं होति? यं तस्मिं समये न हिरीयति हिरियितब्बेन न हिरीयति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये अहिरिकं होति।

३९४. कतमं तस्मिं समये अनोत्तप्पं होति? यं तस्मिं समये न ओत्तप्पति ओत्तप्पितब्बेन न ओत्तप्पति पापकानं अकुसलानं धम्मानं समापत्तिया – इदं तस्मिं समये अनोत्तप्पं होति।

(संस्कृतच्छाया) ३९१. कतमा तस्मिं समये अभिध्या भवति? य: तस्मिन् समये लोभो लोभनं लुब्धत्वम् सराग: संरञ्जनं संरञ्जितत्वम् अभिध्या लोभ: अकुशलमूलम् – अयं तस्मिन् समये अभिध्या भवति।

३९२. कतमा तस्मिन् समये मिथ्यादृष्टि: भवति? या तस्मिन् समये दृष्टि: दृष्टिगतं दृष्टिगहनं दृष्टिकान्तारो दृष्टिविसूकायिकं दृष्टिविप्फन्दितं दृष्टिसंयोजनं ग्राह: प्रतिग्राह: अभिनिवेश: परामर्श: कुमार्गो मिथ्यापथो मिथ्यात्वं तिर्थायतनं विपर्यासग्राह: – अयं तस्मिन् समये मिथ्यादृष्टिर्भवति।

३९३. कतमं तस्मिन् समये अह्रीकं भवति? यत् तस्मिन् समये न जिह्रेति ह्रीतव्येन न जिह्रेति पापकानाम् अकुशलानां धर्मणां समापत्यै – इदं तस्मिन् समये अह्रिबलं भवति।

३९४. कतमं तस्मिन् समये अनपत्राप्यं भवति? यं तस्मिन् समये न अपत्राप्यति अपत्राप्यव्येन न अपत्राप्यति पापकानाम् अकुशलानां धर्मणां समापत्यै – इदं तस्मिन् समये अपत्राप्यं भवति ।

(हिन्दी) ३९१. कौन उस समय अभिध्या होती है? जो उस समय लोभ, लोभ का होना, लोभ से युक्त होना, राग सहित, राग का भाव, आसक्ति-भाव, तृष्णा का भाव, अकुशल मूल लोभ है- यही उस समय अभिध्या होती है।

३९२. उस समय मिथ्यादृष्टि क्या होती है? जो उस समय दृष्टि, मिथ्या धारणा, मिथ्या दृष्टियों का घना जंगल, मिथ्या सिद्धान्तों का जंगल, सम्यक्-दृष्टि को बेध देने वाली मिथ्यादृष्टि, मिथ्या धारणाओं की तरह-तरह से उछल-कूद, मन को बन्धनग्रस्त करने वाली मिथ्यादृष्टि, पकड़ने वाला, प्रतिग्रह, अभिनिवेश(दृढ़ धारणा), परामर्श(मिथ्या स्पर्श), कुमार्ग, मिथ्यापथ, मिथ्या का भाव, तिर्थायतन, विपर्यासग्राह है- यही उस समय मिथ्यादृष्टि होती है।

३९३. उस समय कौन सा अह्रीक होता है? जो उस समय आत्म लज्जा करने योग्य धर्मों में आत्म लज्जा नहीं करता तथा पाप से युक्त अकुशल धर्मों के प्राप्ति में लज्जा नहीं करता है - यही उस समय अह्रीकवल होता है।

३९४. कौन उस समय अनपत्राप्य होता है? जो उस समय सामाजिक लज्जा करने योग्य धर्मों में लज्जा नहीं करता तथा पाप से युक्त अकुशल धर्मों के प्राप्ति में लज्जा नहीं करता है - यही उस समय अनपत्राप्य होता है।

३९५. कतमो तस्मिं समये समथो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – अयं तस्मिं समये समथो होति।

३९६. कतमो तस्मिं समये पग्गाहो होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं मिच्छावायामो – अयं तस्मिं समये पग्गाहो होति।

३९७. कतमो तस्मिं समये अविक्खेपो होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं मिच्छासमाधि – अयं तस्मिं समये अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया)३९५. कतम: तस्मिन् समये शमथो भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं मिथ्यासमाधि: – अयं तस्मिन् समये शमथो भवति।

३९६. कतम: तस्मिन् समये प्रग्राहो भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलं सम्यग्व्यायाम:– अयं तस्मिन् समये प्रग्राहो भवति।

३९७. कतम: तस्मिन् समये अविक्षेपो भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं मिथ्यासमाधि:– अयं तस्मिन् समये अविक्षेपो भवति। ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अकुशला:।

(हिन्दी) ३९५. उस समय कौन सा शमथ होता है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति (सम्यक् रूप से स्थिति), सुदृढ़ स्थिति, अविसंहार (अचंचलता), अविक्षेप, अविक्षिप्त (चित्त की शान्त अवस्था), चित्त से युक्त रहना, चित्त की शान्ति, समाधि-इन्द्रिय, समाधि-बल, मिथ्यासमाधि है- यही उस समय शमथ होता है।

३९६. उस समय कौन सा प्रग्राह होता है? जो उस समय वीर्य रूपी चैतसिक का आरम्भ, प्रयत्न, पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीतरता, सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रत्यन करना, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, मिथ्याव्यायाम है- यही उस समय प्रग्राह होता है।

३९७. उस समय कौन सा अविक्षेप होता है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति, अवस्थिति, अचंचलता, अविक्षेप, शान्त चित्त वाला, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल, मिथ्यासमाधि है- यही उस समय अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे॰... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला...पे॰...।

३९८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छादिट्ठि मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो मोहो अभिज्झा मिच्छादिट्ठि अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे॰... इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, पञ्चेन्द्रियानि भवन्ति, पञ्चाङ्गिकं ध्यानं भवति, चतुरङ्गिको मार्गो भवति, चत्वारि बलानि भवन्ति, द्वे हेतू भवतः, एकः स्पर्शो भवति, ...पे॰... एकं धर्मायतनं भवति, एकः धर्मधातुः भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अकुशलाः।

३९८. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारः प्रीतिः चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियं मिथ्यादृष्टिः मिथ्यासङ्कल्पः मिथ्याव्यायाम मिथ्यासमाधिः वीर्यबलं समाधिबलम् अह्रीकबलम् अनपत्राप्यबलम् अलोभः अमोहः अभिध्या मिथ्यादृष्टिः अह्रीकम् अनपत्राप्यं शमथः प्रग्राहः अविक्षेपः; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे॰... इमे धर्माः अकुशलाः।

(हिन्दी) उस समय चार स्कन्ध, दो आयतन, दो धातुएँ, तीन आहार, पाँच-इन्द्रिय, पञ्चाङ्गिक ध्यान, चतुराङ्गिक मार्ग, चार बल, दो हेतुएँ, एक स्पर्श होता ....पूर्ववत्... एक धर्मायतन, एक धर्माधातु होती है; ये अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं। ...पूर्ववत्...

३९८. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता, वीर्येन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मिथ्यादृष्टि, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, मिथ्यासमाधि, वीर्यबल, समाधिबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, लोभ, मोह, अभिध्या, मिथ्यादृष्टि, अह्रीक, अनपत्राप्य, शमथ, प्रग्राह, अविक्षेप; ये अथवा वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यह उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

२. दुतियं चित्तं

३९९. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा...पे०... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

३. ततियं चित्तं

४००. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति,

(संस्कृतच्छाया)३९९. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं दृष्टिगतसम्प्रयुक्तं ससंस्कारेन रूपालम्बनं वा ...पे०... धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अकुशला:।

४००. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं दृष्टिगतसम्प्रयुक्तं ससंस्कारेन रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, मिथ्यासङ्कल्पो भवति, मिथ्याव्यायामो भवति,

(हिन्दी) ३९९. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय सौमनस्यसहगत दृष्टिगतसम्प्रयुक्त ससंस्कार से युक्त रूपालम्बन या ... पूर्ववत्... धर्मालम्बन अथवा पुनः उन-उन आलम्बनों को प्रारम्भ कर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है ... पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

४००. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय सौमनस्य सहगत दृष्टि से विप्रयुक्त रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर कुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है, सुख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, समाधीन्द्रिय होती है, मनइन्द्रिय होती है, सौमनस्येन्द्रिय होती है, जीवित-इन्द्रिय होती है, मिथ्यासंकल्प होता है, मिथ्यव्यायाम होता है, मिथ्यासमाधि होती है, वीर्यबल होता है, समाधिबल होता है,

मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, मोहो होति, अभिज्झा होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला ...पे॰...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, पञ्चङ्गिकं झानं होति, तिवङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे॰... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला...पे॰...।

४०१. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो मोहो अभिज्झा

(संस्कृतच्छाया)मिथ्यासमाधि: भवति, वीर्यबलं भवति, समाधिबलं भवति, अह्रीकबलं भवति, अनपत्राप्यबलं भवति, लोभो भवति, मोहो भवति, अभिध्या भवति, अह्रीकं भवति, अनपत्राप्यं भवति, शमथो भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अकुशला: ...पे॰... ।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, पञ्चेन्द्रियानि भवन्ति, पञ्चाङ्गिकं ध्यानं भवति, त्रयङ्गिको मार्गो भवति, चत्वारि बलानि भवन्ति, द्वौ हेतू भवत:, एक: स्पर्शो भवति ...पे॰... एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अकुशला:।

४०१. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचार: प्रीति: चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियं मिथ्यासङ्कल्पो मिथ्याव्यायाम मिथ्यासमाधि: वीर्यबलं समाधिबलम् अह्रीकबलम् अनपत्राप्यबलं लोभो मोह: अभिध्या

(हिन्दी) अह्रीकबल होता है, अनपत्राप्यबल होता है, लोभ होता है, मोह होता है, अभिध्या होती है, अह्रीक होती है, अनपत्राप्य होती है, शमथ होता है, प्रग्राह होती है, अविक्षेप होता है; ये अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, पाँच-इन्द्रिया होती हैं, पाँचाङ्गिक ध्यान होता है, तीन अंगों वाला मार्ग होता है, चार बल होते हैं, दो हेतुएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है ...पूर्ववत्...

४०१. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता वीर्येन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, मिथ्यासमाधी, वीर्यबल, समाधिबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, लोभ, मोह, अभिध्या, अह्रीक, अनपत्राप्य, शमथ, पग्राह, अविक्षेप है; अथवा उस समय

अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

४. चतुत्थं चित्तं

४०२. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति सोमनस्ससहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा...पे०... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

५. पंचमं चित्तं

४०३. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छादिट्ठि होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति,

(संस्कृतच्छाया) अह्रीकम् अनपत्राप्यं शमथ: प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अकुशला:।

४०२. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तमुत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं दृष्टिगतविप्रयुक्तं ससंस्कारेन रूपालम्बनं वा ...पे०... धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अकुशला:।

४०३. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं दृष्टिगतसम्प्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, मिथ्यादृष्टि: भवति, मिथ्यासङ्कल्पो भवति, मिथ्याव्यायामो भवति, मिथ्यासमाधि:

(हिन्दी) वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

४०२. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय सौमनस्यसहगत दृष्टिगतविप्रयुक्त ससंस्कारिक रूपालम्बन या ...पूर्ववत्... धर्मावलम्बन अथवा पुन: उन-उन आलम्बनों को प्रारम्भ कर कामावचर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है ... पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

४०३. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय उपेक्षासहगत दृष्टिगतसम्प्रयुक्त रूप, शब्द, गन्ध, रस, स्पृष्टव्य या धर्म आलम्बन अथवा पुन: उन-उन(आलम्बनों) को प्रारम्भ कर कामावचर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस

वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, मोहो होति, अभिज्झा होति, मिच्छादिट्ठि होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

४०४. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४०५. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति...पे०...।

४०६. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं

(संस्कृतच्छाया) भवति, वीर्यबलं भवति, समाधिबलं भवति, अह्रीकबलं भवति, अनपत्राप्यबलं भवति, लोभो भवति, मोहो भवति, अभिध्या भवति, अह्रीकं भवति, अनपत्राप्यं भवति, शमथो भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अकुशला: ।

४०४. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

४०५. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजं अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति ...पे०... ।

४०६. कतमा तस्मिन् समये उपेक्षा भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं

(हिन्दी) समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, वितर्क, विचार, उपेक्षा, चित्त की एकाग्रता, वीर्य-इन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, मनइन्द्रिय, सौमनस्स-इन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, मिथ्यासमाधि, वीर्यबल, समाधिबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, लोभ, मोह, अभिध्या, अह्रीक, अनपत्राप्य, शमथ, प्रग्राह, अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

४०४. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श होता है।

४०५. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न न चैतसिक सुख, न तो चैतसिक दु:ख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न जो अदु:ख एवं असुख अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदु:ख एवं असुख वेदना है- यही उस समय की वेदना होती है।

४०६. उस समय कौन सी उपेक्षा होती है? जो उस समय न चैतसिक सुख और न तो चैतसिक दु:ख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न जो दु:ख एवं सुख से रहित अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदु:ख एवं असुख वेदना है- यही उस समय की वेदना होती है।

चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति...पे०...।

४०७. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, चतुरङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति ...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला...पे०...।

(संस्कृतच्छाया) चेतस्संस्पर्शजम् अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना – अयं तस्मिन् समये उपेक्षा भवति।

४०७. कतमं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजम् अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खमसुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति ...पे०... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अकुशला:।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, पञ्चेन्द्रियानि भवन्ति, चतुरङ्गिकं ध्यानं भवति, त्र्यङ्गिको मार्गो भवति, चत्वारि बलानि भवन्ति, द्वौ हेतू भवत:, एक: स्पर्शो भवति ...पे०... एकं धर्मायतनं भवति, एक: धर्मधातुर्भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अकुशला:।

(हिन्दी) ४०७. उस समय कौन सी उपेक्षा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय न चैतसिक सुख, न तो चैतसिक दु:ख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न जो दु:ख एवं सुख से रहित अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदु:खद् एवं असुखद् वेदना है- यही उस समय उपेक्षा-इन्द्रिय होती है ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, पाँच-इन्द्रिय होती हैं, चार अंगो वाला ध्यान होता है, चार अंगों वाला मार्ग होता है, चार बल होते हैं, दो हेतुएँ होती है, एक स्पर्श होता है...पूर्ववत्... एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

४०८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छादिट्ठि मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो मोहो अभिज्झा मिच्छादिट्ठि अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

६.छट्ठं चित्तं

४०९. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया)४०८. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियं मिथ्यादृष्टि: मिथ्यासङ्कल्पो मिथ्याव्यायाम मिथ्यासमाधि: वीर्यबलं समाधिबलम् अह्रीकबलम् अनपत्राप्यबलं लोभो मोह: अभिध्या मिथ्यादृष्टि: अह्रीकम् अनपत्राप्यं शमथ: प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्- अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अकुशला:।

४०९. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति सौमनस्यसहगतं दृष्टिगतविप्रयुक्तं ससंस्कारेन रूपालम्बनं वा रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अकुशला:।

(हिन्दी)४०८. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, वीर्येन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, जीवितेनिद्रय, मिथ्यादृष्टि, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, मिथ्यासमाधि, वीर्यबल, समाधिबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, लोभ, मोह, अभिध्या, मिथ्यादृष्टि, अह्रीक, अनपत्राप्य, शमथ, प्रग्राह, अविक्षेप है; ये अथवा वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

४०९. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय उपेक्षासहगत दृष्टिगतसम्प्रयुक्त ससंस्कारिक रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है ... पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

७. सत्तमं चित्तं

४१०. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, लोभो होति, मोहो होति, अभिज्झा होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला...पे॰...।

(संस्कृतच्छाया)४१०. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं दृष्टिगतविप्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, मिथ्यासङ्कल्पो भवति, मिथ्याव्यायामो भवति, मिथ्यासमाधि: भवति, वीर्यबलं भवति, समाधिबलं भवति, अह्रीकबलं भवति, अनपत्राप्यबलं भवति, लोभो भवति, मोहो भवति, अभिध्या भवति, अह्रीकं भवति, अनपत्राप्यं भवति, शमथो भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अकुशला:।

(हिन्दी) ४१०. कौन से धर्म कुशल हैं? जिस समय उपेक्षासहगत दृष्टिगतविप्रयुक्त रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर कामावचर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, समाधीन्द्रिय होती है, मनेन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है, मिथ्यासंकल्प होता है, मिथ्याव्यायाम होता है, मिथ्यासमाधि होती है, वीर्यबल होता है, समाधिबल होता है, अह्रीकबल होता है, अनपत्राप्यबल होता है, लोभ होता है, मोह होता है, अभिध्या होती है, अह्रीक होता है, अनपत्राप्य होता है, शमथ होता है, प्रग्राह होती है, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं ...पूर्ववत्...

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, तिवङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति ...पे॰... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला...पे॰...।

४११. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं लोभो मोहो अभिज्झा अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं– अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे॰... इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, पञ्चेन्द्रियानि भवन्ति, चतुरङ्गिकं ध्यानं भवति, त्र्यङ्गिको मार्गो भवति, चत्वारि बलानि भवन्ति, द्वौ हेतू भवतः, एकः स्पर्शो भवति, ...पे॰... एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातुः भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अकुशलाः।

४११. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियं मिथ्यासङ्कल्पो मिथ्याव्यायाम मिथ्यासमाधिः वीर्यबलं समाधिबलम् अह्रीकबलम् अनपत्राप्यबलं लोभो मोहः अभिध्या अह्रीकम् अनपत्राप्यं शमथः प्रग्राहः अविक्षेपः; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे॰... इमे धर्माः अकुशलाः।

(हिन्दी) उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, पाँच इन्द्रियाँ होती हैं, चार अंगों वाला ध्यान होता है, तीन अंगों वाला मार्ग होता है, चार बल होते हैं, दो हेतुएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन होता है, एक धर्म धातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं ...पूर्ववत्...

४११. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, वीर्येन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, मिथ्यासमाधि, वीर्यबल समाधिबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, लोभ, मोह, अभिध्या, अह्रीक, अनपत्राप्य, शमथ, प्रग्राह अविक्षेप होता है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

८. अट्ठमं चित्तं

४१२. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं दिट्ठिगतविप्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा ...पे०... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

२. दोसचित्तानि

१. पठमं चित्तं

४१३. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति दोमनस्ससहगतं पटिघसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, दुक्खं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, दोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, दोसो होति, मोहो होति, ब्यापादो

(संस्कृतच्छाया)४१२. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तमुत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं दृष्टिगतविप्रयुक्तं ससंस्कारेन रूपालम्बनं वा ...पे०... धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अकुशला:।

४१३. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति दौर्मनस्यसहगतं प्रतिघसम्प्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, दु:खं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, दौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, मिथ्यासङ्कल्पो भवति, मिथ्याव्यायामो भवति, मिथ्यासमाधि: भवति, वीर्यबलं भवति, समाधिबलं भवति, अह्रीकबलं भवति, अनपत्राप्यबलं भवति, द्वेषो भवति, मोहो भवति, व्यापादो भवति,

(हिन्दी) ४१२.कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय उपेक्षासहगत दृष्टिगतविप्रयुक्त ससंस्कारिक रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... यह धर्म अकुशल हैं।

४१३. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय दौर्मनस्यसहगत प्रतिघसम्प्रयुक्त रूपालम्बन या गन्धालम्बन या रसालम्बन या स्पृष्टव्यालम्बन या धर्मालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, दु:ख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, वीर्येन्द्रिय होती है, समाधीन्द्रिय होती है, मनेन्द्रिय होती है, दौर्मनस्येन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है, मिथ्यासंकल्प होता है, मिथ्याव्यायाम होता है, मिथ्यासमाधि होती है, वीर्यबल होता है, समाधिबल होता है, अह्रीकबल होता है, अनपत्राप्यबल होता है, द्वेष

होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

४१४. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४१५. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं असातं चेतसिकं दुक्खं चेतोसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति...पे॰...।

४१६. कतमं तस्मिं समये दुक्खं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं असातं चेतसिकं दुक्खं चेतोसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं तस्मिं समये दुक्खं होति...पे॰...।

(संस्कृतच्छाया) अह्रीकं भवति, अनपत्राप्यं भवति, शमथो भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अकुशलाः।

४१४. कतमः तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? यः तस्मिन् समये स्पर्शः स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

४१५. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकम् अशातं चैतसिकं दुःखं चेतस्संस्पर्शजम् अशातं दुःखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अशाता दुःखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति ...पे॰... ।

४१६. कतमं तस्मिन् समये दुःखं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकम् अशातं चैतसिकं दुःखं चेतस्संस्पर्शजम् अशातं दुःखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अशाता दुःखा वेदना– इयं तस्मिन् समये वेदना भवति ...पे॰... ।

(हिन्दी) होता है, मोह होता है, व्यापाद होता है, अह्रीक होता है, अनपत्राप्य होता है, शमथ होता है, प्रग्राह होता है, अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

४१४. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श होता है।

४१५. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न चैतसिक अशात, चैतसिक दुःख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अशात एवं दुःख की अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न प्रतिकूल एवं दुःख की वेदना है- यही उस समय की वेदना होती है।

४१६. उस समय कौन सा दुःख होता है? जो उस समय चैतसिक अशात, चैतसिक दुःख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अशात एवं दुःख की अनुभूति और चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न प्रतिकूल एवं दुःख की वेदना है- यही उस समय दुःख होता है।

४१७. कतमं तस्मिं समये दोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं असातं चेतसिकं दुक्खं चेतोसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं तस्मिं समये दोमनस्सिन्द्रियं होति...पे॰...।

४१८. कतमो तस्मिं समये दोसो होति? यो तस्मिं समये दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये दोसो होति...पे॰...।

४१९. कतमो तस्मिं समये ब्यापादो होति? यो तस्मिं समये दोसो दुस्सना दुस्सितत्तं ब्यापत्ति ब्यापज्जना ब्यापज्जितत्तं विरोधो पटिविरोधो चण्डिक्कं असुरोपो अनत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये ब्यापादो होति...पे॰... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया) ४१७. कतमं तस्मिन् समये दौर्मनस्येन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं अशातं चैतसिकं दु:खं चेतस्संस्पर्शजं अशातं दु:खं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अशाता दु:खा वेदना– इयं तस्मिन् समये दौर्मनस्येन्द्रियं भवति ...पे॰... ।

४१८. कतम: तस्मिन् समये द्वेषो भवति? य: तस्मिन् समये द्वेष: दूषणं दूषितत्वं व्यापत्ति: व्यापद्यनं व्यापद्यितत्वं विरोध: प्रतिविरोध: चाण्डिक्यम् असुरोप: अनाप्तमनसा चित्तस्य – अयं तस्मिन् समये द्वेषो भवति ...पे॰...।

४१९. कतम: तस्मिन् समये व्यापादो भवति? य: तस्मिन् समये द्वेष: दूषणं दूषितत्वं व्यापत्ति: व्यापद्यं व्यापद्यितत्वं विरोध: प्रतिविरोध: चाण्डिक्यम् असुरोप: अनाप्तमनसा चित्तस्य – अयं तस्मिन् समये व्यापादो भवति ...पे॰... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अकुशला:।

(हिन्दी) ४१७. उस समय कौन सा दौर्मनस्येन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक अशात, चैतसिक दु:ख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अशात, दु:ख का अनुभूति और चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न प्रतिकूल एवं दु:खद् वेदना है- यही उस समय दौर्मनस्येन्द्रिय होती है।

४१८. उस समय कौन सा द्वेष होता है? जो उस समय द्वेष, द्वेष करना, द्वेष युक्त, मानसिक असंतुलन, विक्षिप्त हो जाना, विरोध, प्रतिरोध, अशिष्टता, असंयमित, चित्त की अरुचि है- यही उस समय द्वेष होता है।

४१९. उस समय कौन सा व्यापाद होता है? जो उस समय द्वेष, द्वेष करना, द्वेष युक्त, मानसिक असंतुलन, विक्षिप्त हो जाना, विरोध, प्रतिरोध, अशिष्टता, असंयमित, चित्त की अरुचि है- यही उस समय व्यापाद होता है ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, तिवङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, द्वे हेतू होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एकं धम्मायतनं होति , एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला...पे०...।

४२०. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं दोसो मोहो ब्यापादो अहिरिकं अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया)तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, पञ्चेन्द्रियानि भवन्ति, चतुरङ्गिकं ध्यानं भवति, त्र्यङ्गिको मार्गः भवति, चत्वारि बलानि भवन्ति, द्वौ हेतू भवतः, एकः स्पर्शो भवति...पे०...एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातुः भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अकुशलाः।

४२०. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियं मिथ्यासङ्कल्पो मिथ्याव्यायाम मिथ्यासमाधिः वीर्यबलं समाधिबलम् अह्रीकबलम् अनपत्राप्यबलं द्वेषः मोहः व्यापादः अहीकम् अनपत्राप्यं शमथः प्रग्राहः अविक्षेपः; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्माः अकुशलाः।

(हिन्दी) उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, पाँच-इन्द्रियाँ होती हैं, चार अंगों वाला ध्यान होता है, तीन अंगों वाला मार्ग होता है, चार बल होते हैं, दो हेतुएँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं

४२०. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, वीर्येन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, मिथ्यासमाधि, वीर्यबल समाधिबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, लोभ, मोह, व्यापाद, अह्रीक, अनपत्राप्य, शमथ, प्रग्राह, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

२. दुतियं चित्तं

४२१. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति दोमनस्ससहगतं पटिघसम्पयुत्तं ससङ्खारेन रूपारम्मणं वा ...पे०... धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

३. मोहचित्तानि

१. पठमं चित्तं

४२२. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं विचिकिच्छासम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणं वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, वीरियबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, विचिकिच्छा होति, मोहो होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, पग्गाहो

(संस्कृतच्छाया)४२१. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तमुत्पन्नं भवति दौर्मनस्यसहगतं प्रतिघसम्प्रयुक्तं ससंस्कारेन रूपालम्बनं वा ...पे०... धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अकुशला:।

४२२. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं विचिकित्सासम्प्रयुक्तं रूपालम्बनं वा शब्दालम्बनं वा गन्धालम्बनं वा रसालम्बनं वा स्पृष्टव्यालम्बनं वा धर्मालम्बनं वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, मिथ्यासङ्कल्पो भवति, मिथ्याव्यायामो भवति, वीर्यबलं भवति, अह्रीकबलं भवति, अनपत्राप्यबलं भवति, विचिकित्सा भवति, मोहो भवति, अह्रीकं भवति, अनपत्राप्यं भवति, प्रग्राहो

(हिन्दी) ४२१. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय दौर्मनस्यसहगत प्रतिघसम्प्रयुक्त ससंस्कारिक रूपालम्बन ... पूर्ववत्... धर्मालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

४२२. कौन से धर्म अकुशल हैं? जिस समय उपेक्षासहगत विचिकित्सासम्प्रयुक्त रूपालम्बन या गन्धालम्बन या रसालम्बन या स्पृष्टव्यालम्बन या धर्मालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, वितर्क, विचार, उपेक्षा, चित्त की एकाग्रता, वीर्येन्द्रिय, मन-इन्द्रिय, उपेक्षा-इन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, वीर्यबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, विचिकित्सा, मोह, अह्रीक, अनपत्राप्य, प्रग्राह; अथवा उस समय जो भी अन्य

होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

४२३. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...।

४२४. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति...पे०...।

४२५. कतमा तस्मिं समये विचिकिच्छा होति? या तस्मिं समये कङ्खा कङ्खायना कङ्खायितत्तं विमति विचिकिच्छा द्वेळ्हकं द्वेधापथो संसयो अनेकंसग्गाहो आसप्पना परिसप्पना अपरियोगाहना थम्भितत्तं चित्तस्स मनोविलेखो – अयं तस्मिं समये विचिकिच्छा होति ...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया) भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अकुशला:।

४२३. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०...।

४२४. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: – अयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति ...पे०...।

४२५. कतमा तस्मिन् समये विचिकित्सा भवति? या तस्मिन् समये कांक्षा कांक्षायना कांक्षायितत्वात् विमति विचिकित्सा द्वेलहकं द्वेधापथ: संशय: अनेकंसगर्ाह: आसर्पणा परिसर्पणा अपर्यवगाहना स्तम्भितत्वं चित्तस्य मनोविलेख: – अयं तस्मिन् समये विचिकित्सा भवति ...पे०... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अकुशला:।

(हिन्दी) प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म अकुशल हैं।

४२३. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श होता है।

४२४. उस समय कौन सी चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति है- यही समय चित्त की एकाग्रता होती है ...पूर्ववत्...

४२५. उस समय कौन सी विचिकित्सा होती है? सन्देह, सन्देह करना, सन्देह से युक्त, शक, सन्देह, शक (द्वेल्हक), सड़क का बँटवारा, संशय, अनेकसंग्रह, रेंग कर पास पहुँचना, अविश्वास, नीचे उतर कर गहरे पानी में प्रवेश न करना, स्तम्भ, मन का उलझन है - यही उस समय विचिकित्सा होती है ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, चत्तारि इन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, दुवङ्गिको मग्गो होति, तीणि बलानि होन्ति, एको हेतु होति, एको फस्सो होति...पे॰... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला...पे॰...।

४२६. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो वीरियबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं विचिकिच्छा मोहो अहिरिकं अनोत्तप्पं पग्गाहो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं– अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे॰... इमे धम्मा अकुसला।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, चत्वारीन्द्रियानि भवन्ति, चतुरङ्गिकं ध्यानं भवति, द्वौ अङ्गिको मार्गो भवति, त्रीणि बलानि भवन्ति, एको हेतु: भवति, एक: स्पर्शो भवति ...पे॰... एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अकुशला:।

४२६. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं जीवितेन्द्रियं मिथ्यासङ्कल्पो मिथ्याव्यायाम वीर्यबलम् अह्रीकबलम् अनपत्राप्यबलं विचिकित्सा मोह: अह्रीकम् अनपत्राप्यं प्रग्राह:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे॰... इमे धर्मा: अकुशला:।

(हिन्दी) उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती है, तीन आहार होते हैं, पाँच-इन्द्रियाँ होती है, चार अंगों वाला ध्यान होता है, दो अंगों वाला मार्ग होता है, तीन बल होते हैं, एक हेतु होती है, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

४२६. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, वीर्येन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, वीर्यबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, विचिकित्सा, मोह अह्रीक, अनपत्राप्य, प्रग्राह है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

२. दुतियं चित्तं

४२७. कतमे धम्मा अकुसला? यस्मिं समये अकुसलं चित्तं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं उद्धच्चसम्पयुत्तं रूपारम्मणं वा ...पे०... यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति, मिच्छासङ्कप्पो होति, मिच्छावायामो होति, मिच्छासमाधि होति, वीरियबलं होति, समाधिबलं होति, अहिरिकबलं होति, अनोत्तप्पबलं होति, उद्धच्चं होति, मोहो होति, अहिरिकं होति, अनोत्तप्पं होति, समथो होति, पग्गाहो होति, अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला।

४२८. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...।

(संस्कृतच्छाया)४२७. कतमे धर्मा: अकुशला:? यस्मिन् समये अकुशलं चित्तम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं औद्धत्यसम्प्रयुक्तं रूपालम्बनं वा ...पे०... यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेइन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति, मिथ्यासङ्कल्पो भवति, मिथ्याव्यायामो भवति, मिथ्यासमाधि भवति, वीर्यबलं भवति, समाधिबलं भवति, अह्रीकबलं भवति, अनपत्राप्यबलं भवति, औद्धत्य भवति, मोहो भवति, अह्रीकं भवति, अनपत्राप्यं भवति, शमथो भवति, प्रग्राहो भवति, अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अकुशला:।

४२८.कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०...।

(हिन्दी) ४२७. कौन से धर्म अकुशल है? जिस समय उपेक्षासहगत औद्धत्यसम्प्रयुक्त रूपालम्बन या गन्धालम्बन या रसालम्बन या स्पृष्टव्यालम्बन या धर्मालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर अकुशल चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, वीर्य-इन्द्रिय होती है, समाधि-इन्द्रिय होती है, मनइन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है, मिथ्यासंकल्प होता है, मिथ्याव्यायाम होता है, मिथ्यासमाधि होती है, वीर्यबल होता है, समाधिबल होता है, अह्रीकबल होता है, अनपत्राप्यबल होता है, औद्धत्य होता है, मोह होता है, अह्रीक होता है, अनपत्राप्य होता है, शमथ होता है, प्रग्राह होता है, अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

४२८. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श होता है।

४२९. कतमं तस्मिं समये उद्धच्चं होति? यं तस्मिं समये चित्तस्स उद्धच्चं अवूपसमो चेतसो विक्खेपो भन्तत्तं चित्तस्स – इदं तस्मिं समये उद्धच्चं होति ...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अकुसला।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, चतुरङ्गिकं झानं होति, तिवङ्गिको मग्गो होति, चत्तारि बलानि होन्ति, एको हेतु होति, एको फस्सो होति...पे०... एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अकुसला...पे०...।

४३०. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं मिच्छासङ्कप्पो मिच्छावायामो मिच्छासमाधि वीरियबलं समाधिबलं अहिरिकबलं अनोत्तप्पबलं उद्धच्चं मोहो अहिरिकं

(संस्कृतच्छाया)४२९. कतमं तस्मिन् समये औद्धत्य भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तस्य औद्धत्यं अव्युपशम: चेतसो विक्षेपो भ्रान्तत्वं चित्तस्य– इदं तस्मिन् समये औद्धत्यं भवति ...पे०... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अकुशला:।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, पञ्चेन्द्रियाणि भवन्ति, चतुरङ्गिकं ध्यानं भवति, त्र्यङ्गिको मार्गो भवति, चत्वारि बलानि भवन्ति, एको हेतु भवति, एक: स्पर्शो भवति, ...पे०... एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अकुशला:।

४३०. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियं मिथ्यासङ्कल्प: मिथ्याव्यायाम: मिथ्यासमाधि: वीर्यबलं समाधिबलम् अह्रीकबलम् अनपत्राप्यबलं औद्धत्यं मोह: अह्रीकम्

(हिन्दी)४२९. उस समय कौन सा औद्धत्य होता है? जो उस समय चित्त की औद्धत्य, चित्त में शान्ति का अभाव, हृदय की विक्षेपता एवं चित्त की भ्रान्तता है- यही उस समय औद्धत्य होता है ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, पाँच-इन्द्रियाँ होती है, चार अंगों वाला ध्यान होता है, तीन अंगों वाला मार्ग होता है, चार-बल होते हैं, एक हेतु होती है, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अकुशल हैं।

४३०. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, वीर्येन्द्रिय, समाधि-इन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय, मिथ्यासंकल्प, मिथ्याव्यायाम, मिथ्यासमाधि, वीर्यबल, समाधिबल, अह्रीकबल, अनपत्राप्यबल, औद्धत्य, मोह, अह्रीक,

अनोत्तप्पं समथो पग्गाहो अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अकुसला।

३.अब्याकता धम्मा

१. विपाका

१. कुसलविपाका अहेतुका

१. चक्खुविञ्ञाणं

४३१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं चक्खुविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं रूपारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) अनपत्राप्यं शमथ: प्रग्राह: अविक्षेप:; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अकुशला:।

४३१. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये कामावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं चक्षुर्विज्ञानम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं रूपालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) अनपत्राप्यबल, औद्धत्य, मोह, अह्रीक, अनपत्राप्य, शमथ, प्रग्राह, अविक्षेप है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर अन्य जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अकुशल हैं।

४३१. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय कामावचर अकुशल कर्म किया हुआ होने के कारण से उपचित(संगृहीत) विपाक उपेक्षासहगत रूपालम्बन चक्षुर्विज्ञान उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, मनइन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४३२. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४३३. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४३४.कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४३५.कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

(संस्कृतच्छाया) ४३२. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

४३३. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं चक्षुर्विज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजं अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

४३४. कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा चक्षुर्विज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्वम्– इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

४३५. कतमा तस्मिन् समये चेतना भवति? या तस्मिन् समये तज्जा चक्षुर्विज्ञानधातुसंस्पर्शजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम्– इयं तस्मिन् समये चेतना भवति।

(हिन्दी)४३२. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श है।

४३३. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय चक्षुर्विज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न न तो चैतसिक अनुकूल और न प्रतिकूल अनुभव, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदु:खद् एवं असुखद् की अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदु:खद् असुखद् वेदना है - यही उस समय वेदना होती है।

४३४. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय चक्षुर्विज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न संज्ञा, जो भली प्रकार से जानना और भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय में संज्ञा होती है।

४३५. उस समय कौन सी चेतना होती है? जो उस समय चक्षुर्विज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चेतना, भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय की चेतना होती हे।

४३६. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४३७. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति।

४३८. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४३९. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जाचक्खुविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया)४३६. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो चक्षुर्विज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति ।

४३७. कतमा तस्मिन् समये उपेक्षा भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजं अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना– इयं तस्मिन् समये उपेक्षा भवति।

४३८. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति:– अयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति।

४३९. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो चक्षुर्विज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

(हिन्दी)४३६. उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मनइन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न चक्षुर्विज्ञान धातु है- यही उस समय चित्त होता है।

४३७. उस समय कौन सी उपेक्षा होती है? जो उस समय चैतसिक न तो शात नाशात, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदु:खद् असुखद् अनुभूति, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदु:ख-असुख वेदना है- यही उस समय उपेक्षा होती है।

४३८. उस समय कौन सी चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति है- यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

४३९. उस समय कौन सी मनइन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मनइन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न चक्षुर्विज्ञान धातु है - यही उस समय मनइन्द्रिय होती है।

४४०. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति।

४४१. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका चक्खुविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

(संस्कृतच्छाया) ४४०. कतमं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजम् अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना– इयं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति।

४४१. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? य: तेषाम् अरूपीणां धर्माणाम् आयु: स्थिति: यपनं यापना ईरणं वर्तनं पालनं जीवितं जीवितेन्द्रियम् – इदं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, त्रीणीन्द्रियाणि भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति ...पे०... एक: चक्षुर्विज्ञानधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:... पे०...।

(हिन्दी) ४४०. उस समय कौन सा उपेक्षा इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक न तो शात न अशात, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न दु:ख सुख से रहित अनुभूति है, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न दु:ख सुख से रहित वेदना है- यही उस समय उपेक्षा इन्द्रिय होती है।

४४१. उस समय कौन सी जीवितेन्द्रिय होती है? जो उस अरूपी धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत होना, गुजरना, जीवन-स्थिति, बढ़ना, पालना, जीवन, जीवित-इन्द्रिय है- यही उस समय जीवित-इन्द्रिय है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रियाँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक चक्षुर्विज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४४२. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(2-5) सोतविञ्ञाणं- कायविञ्ञाणं

४४३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सोतविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं सद्दारम्मणं ...पे०... घानविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं गन्धारम्मणं...पे०... जिव्हाविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं रसारम्मणं...पे०... कायविञ्ञाणं उप्पन्नं होति सुखसहगतं फोट्ठब्बारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, सुखिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)४४२. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

४४३. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये कामावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं स्रोतविज्ञानम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं शब्दालम्बनम् ...पे०... घ्राणविज्ञानम् उत्पन्नं भवति, उपेक्षासहगतं गन्धालम्बनं जिह्वाविज्ञानम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं रसालम्बनम् ...पे०... कायविज्ञानम् उत्पन्नं भवति सुखसहगतं स्पृष्टव्यालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भावति, चेतना भवति, चित्तं भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, सुखेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)४४२. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, चित्त की एकाग्रता, जीवितेन्द्रिय; ये अथवा वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

४४३. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय कामावचर अकुशल कर्म किया हुआ होने के कारण से उपचित(संगृहीत) विपाक उपेक्षासहगत शब्दालम्बन स्रोतविज्ञान उत्पन्न होता है ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत गन्धावलम्बन घ्राणविज्ञान उत्पन्न होता है...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत रसालम्बन जिह्वाविज्ञान उत्पन्न होता है...पूर्ववत्... सुखसहगत स्पृष्टालम्बन कायविज्ञान उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, सुख, चित्त की एकाग्रता, मनइन्द्रिय, सुखेन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४४४. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४४५.कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जाकायविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं कायिकं सातं कायिकं सुखं कायसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं कायसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४४६.कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जाकायविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४४७. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जाकायविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

(संस्कृतच्छाया)४४४. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

४४५. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं कायविज्ञानधातुसंस्पर्शजं कायिकं शातं कायिकं सुखं कायसस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं कायसस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

४४६. कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा कायविज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञातत्वम्– इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

४४७. कतमा तस्मिन् समये चेतना भवति? या तस्मिन् समये तज्जा कायविज्ञानधातुसंस्पर्शजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम्– इयं तस्मिन् समये चेतना भवति ।

(हिन्दी)४४४. उस समय कैसा सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय स्पर्श होता है।

४४५. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय कायविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न कायिक शात कायिक सुख, कायसंस्पर्श से उत्पन्न अनुकूल एवं सुखद् अनुभूति, कायसंस्पर्श से उत्पन्न अनुकूल एवं सुखद् वेदना है- यही उस समय वेदना होती है।

४४६. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय कायविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न संज्ञा है, जो भली प्रकार से जानना और भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय में संज्ञा होती है।

४४७. उस समय कौन सी चेतना होती है? जो उस समय कायविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चेतना, भली प्रकार से सजग होना और भली प्रकार से सजग होने की स्थिति है- यही उस समय की चेतना होती हे।

४४८. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जाकायविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४४९. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये कायिकं सातं कायिकं सुखं कायसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं कायसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

४५०. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४५१. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जाकायविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया) ४४८. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्ज: कायविज्ञानधातु: – इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति।

४४९. कतमं तस्मिन् समये सुखं भवति? यं तस्मिन् समये कायिकं शातं कायिकं सुखं कायसंस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं कायसंस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इदं तस्मिन समये सुखं भवति।

४५०. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: – अयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति।

४५१. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्ज: कायविज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) ४४८. उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मनइन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न कायविज्ञानधातु है- यही उस समय चित्त होता है।

४४९. उस समय कौन सा सुख होता है? जो उस समय कायिक आनन्द कायिक सुख, कायसंस्पर्श से उत्पन्न अनुकूल एवं सुखद् अनुभूति, कायसंस्पर्श से उत्पन्न अनुकूल एवं सुख वेदना है- यही उस समय सुख होता है।

४५०. उस समय कौन सी चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति है- यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

४५१. उस समय कौन सी मनइन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मनइन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न कायविज्ञानधातु है- यही उस समय मनइन्द्रिय होती है।

४५२. कतमं तस्मिं समये सुखिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये कायिकं सातं कायिकं सुखं कायसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं कायसम्फस्सजा साता सुखा वेदना– इदं तस्मिं समये सुखिन्द्रियं होति।

४५३. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं– इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका कायविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

(संस्कृतच्छाया)४५२. कतमं तस्मिन् समये सुखेन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये कायिकं शातं कायिकं सुखं कायसंस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं कायसंस्पर्शजा शाता सुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये सुखेन्द्रियं भवति।

४५३. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? यः तेषाम् अरूपीणां धर्माणां आयुः स्थितिः यपना यापना ईरणं वर्तन पालनं जीवितं जीवितेन्द्रियम्– इदं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकताः।

तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, त्रीणीन्द्रियाणि भवन्ति, एकः स्पर्शो भवति ...पे०... एकः कायविज्ञानधातुः भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातुः भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अव्याकृताः ...पे०...।

(हिन्दी) ४५२. उस समय कौन सी सुखेन्द्रिय होती है? जो उस समय कायिक आनन्द, कायिक सुख, कायसंस्पर्श से उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद् अनुभूति, काय संस्पर्श से उत्पन्न प्रिय एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय सुख होता है।

४५३. उस समय कौन सी जीवितेन्द्रिय होती हे? जो उस अरूप धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत करना, गुजरना, जीवन-स्थिति, बढ़ना, पालना, जीवन, जीवितेन्द्रिय है- यही उस समय जीवितेन्द्रिय होती है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रियाँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक कायविज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४५४. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं– अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता। कुसलविपाकानि पञ्चविञ्ञाणानि।

६. कुसलविपाकमनोधातु

४५५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोधातु उप्पन्ना होति उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा...पे०... फोट्ठब्बारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)४५४. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुनस्तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

४५५. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये कामावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाक: मनोधातु: उत्पन्नो भवति उपेक्षासहगत: रूपालम्बन: वा ...पे०... स्पृष्टव्यालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भावति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)४५४. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, चित्त की एकाग्रता, जीवितेन्द्रिय है; अथवा वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ... पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

४५५. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय कामावचर कुशल कर्म के किये जाने से, संगृहीत फल उपेक्षासहगत मनोधातु रूपालम्बन ...पूर्ववत्... स्पृष्टव्यालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, मनइन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४५६. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४५७. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४५८. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४५९. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

४६०. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

(संस्कृतच्छाया)४५६. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

४५७. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजं अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खमसुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

४५८.कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञातत्वम्– इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

४५९. कतमा तस्मिन् समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जा मनोधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम् – अयं तस्मिन् समये चेतना भवति।

४६०. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु:– इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति।

(हिन्दी)४५६. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श होता है।

४५७. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुख की अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुखद् वेदना है- यही उस समय की वेदना होती है।

४५८. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न संज्ञा, भली प्रकार से जानना और भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय में संज्ञा होती है।

४५९. उस समय कौन सी चेतना होती है? जो उस समय मनोधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चेतना, भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय की चेतना होती हे।

४६०. उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन,

४६१. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

४६२. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

४६३.कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना– अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति।

४६४. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४६५. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया)४६१. कतम: तस्मिन् समये वितर्को भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपणं सम्यक्सङ्कल्प:– अयं तस्मिन् समये वितर्को भवति।

४६२. कतम: तस्मिन् समये विचारो भवति? य: तस्मिन् समये चारो विचार: अनुविचार: उपविचार: चित्तस्य अनुसन्धानत्वम् अनुप्रेक्षणत्वम् – अयं तस्मिन् समये विचारो भवति।

४६३.कतमा तस्मिन् समये उपेक्षा भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजमदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना– इयं तस्मिन् समये उपेक्षा भवति।

४६४. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति:– इयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति।

४६५.कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोधातु:– इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) मनइन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय चित्त होता है।

४६१. उस समय कौन सा वितर्क होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, दृढ़ निश्चय, किसी आलम्बन पर चित्त को रखना, किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना, चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना है- यही उस समय वितर्क होता है।

४६२. उस समय कौन सा विचार होता है? जो उस समय चार, विचारना, अनुविचार, उपविचार, चित्त की अनुसन्धानता एवं आलम्बन के प्रति उपेक्षा रहित होने की प्रवृत्ति है- यही उस समय विचार होता है।

४६३. उस समय कौन सी उपेक्षा होती है? जो उस समय चैतसिक न शात न अशात, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदुःख-असुख अनुभूति है, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदुःख-असुख वेदना है- यही उस समय उपेक्षा होती है।

४६४. उस समय कौन सी चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति है- यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

४६५. उस समय कौन सी मनइन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मनइन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय मनइन्द्रिय होती है।

४६६. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति।

४६७. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति ...पे०... एका मनोधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता ...पे०...।

(संस्कृतच्छाया)४६६. कतमं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजम् अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति।

४६७. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? य: तेषाम् अरूपिणां धर्माणाम् आयु: स्थिति: यपना यापना ईरणं वर्तनं पालनं जीवितं जीवितेन्द्रियम् – इदं तस्मिन् समये जीवितीन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, त्रीणीन्द्रियाणि भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति, ...पे०... एको मनोधातुर्भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातुर्भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:... पे०...।

(हिन्दी)४६६. उस समय कौन सी उपेक्षा इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक न तो शात न अशात, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदु:ख एवं असुख अनुभूति, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदु:ख एवं असुख वेदना है- यही उस समय उपेक्षा इन्द्रिय होती है।

४६७. उस समय कौन सी जीवितेन्द्रिय होती है? जो उस अरूप धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत करना, गुजरना, जीवन-स्थिति, बढ़ना, पालना, जीवन, जीवितेन्द्रिय है- यही उस समय जीवितेन्द्रिय होती है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म अव्याकृत हैं।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रियाँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक मनोधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४६८. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

७.कुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातु सोमनस्ससहगता

४६९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति सोमनस्ससहगता रूपारम्मणा वा ...पे०... धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)४६८. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचार: चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

४६९. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये कामावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाको मनोविज्ञानधातु: उत्पन्नो भवति सौमनस्यसहगतो रूपालम्बनो वा ...पे०... धर्मालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भावति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, प्रीतिर्भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)४६८. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, जीवितेन्द्रिय; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

४६९. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय कामावचर कुशल कर्म के किये जाने से, संगृहीत फल सौमनस्य सहगत मनोविज्ञानधातु रूपलम्बन ...पूर्ववत्... स्पृष्टव्यालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है, सुख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, मनइन्द्रिय होती है,

४७०. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४७१. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जा मनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४७२. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४७३. कतमा तस्मिं समये चेतना होति। या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं – अयं तस्मिं समये चेतना होति।

(संस्कृतच्छाया) ४७०. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

४७१. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

४७२. कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा सञ्ज्ञानं सञ्ज्ञातत्वम्– इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

४७३. कतमा तस्मिन् समये चेतना भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्वम् – इयं तस्मिन् समये चेतना भवति।

(हिन्दी) सौमनस्य-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं - ये धर्म अव्याकृत हैं।

४७०. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श है।

४७१. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न आनन्द एवं सुखद वेदना है- यही उस समय की वेदना होती है।

४७२. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न संज्ञा, जो भली प्रकार से जानना, भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय की संज्ञा होती है।

४७३. उस समय कौन सी चेतना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चेतना, भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय की चेतना होती हे।

४७४. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जा मनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४७५. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

४७६. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

४७७. कतमा तस्मिं समये पीति होति? या तस्मिं समये पीति पामोज्जं आमोदना पमोदना हासो पहासो वित्ति ओदग्यं अत्तमनता चित्तस्स – अयं तस्मिं समये पीति होति।

(संस्कृतच्छाया) ४७४. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति ।

४७५. कतम: तस्मिन् समये वितर्को भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपनम् – अयं तस्मिन् समये वितर्को भवति।

४७६. कतम: तस्मिन् समये विचारो भवति? य: तस्मिन् समये चारो विचार: अनुविचार: उपविचार: चित्तस्य अनुसन्धानत्वम् अनुप्रेक्षणत्वम् – अयं तस्मिन् समये विचारो भवति।

४७७. कतमा तस्मिन् समये प्रीतिर्भवति? या तस्मिन् समये प्रीति: प्रामोद्याम् आमोदनं प्रमोदनं हास: प्रहासो वित्ति: औदग्र्यम् आप्तमनता चित्तस्य – इयं तस्मिन् समये प्रीतिर्भवति।

(हिन्दी)४७४. उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत(स्पष्ट), मन,मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय चित्त होता है।

४७५. उस समय कौन सा वितर्क होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), तर्क-वितर्क (किसी आलम्बन पर चित्त को रखना), किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना, चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना है- यही उस समय वितर्क होता है।

४७६. उस समय कौन सा विचार होता है? जो उस समय गतिशील होना, विचार, अनुविचार, उपविचार(आलम्बन के समीप विचरण करना), चित्त की आलम्बन की खोज परक प्रवृत्ति एवं आलम्बन के प्रति उपेक्षा रहित होने की प्रवृत्ति है- यही उस समय विचार होता है।

४७७. उस समय कौन सी प्रीति होती है? जो उस समय प्रीति, प्रसन्नता, आमोद्य, प्रमोदता, हँसी, प्रहास, वित्ति (प्रसन्नता), तेजस्वी(आनन्द से मन का उपर उठ जाने की स्थिति) एवं चित्त की आप्तमनता(प्रसन्नता) है- यही उस समय प्रीति होती है।

४७८. कतमं तस्मिं समये सुखं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सुखं होति।

४७९. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४८०. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

४८१. कतमं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं सातं चेतसिकं सुखं चेतोसम्फस्सजं सातं सुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा साता सुखा वेदना – इदं तस्मिं समये सोमनस्सिन्द्रियं होति।

(संस्कृतच्छाया) ४७८. कतमं तस्मिन् समये सुखं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये सुखं भवति।

४७९. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: – इयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति।

४८०. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

४८१. कतमं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं शातं चैतसिकं सुखं चेतस्संस्पर्शजं शातं सुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा शाता सुखा वेदना– इदं तस्मिन् समये सौमनस्येन्द्रियं भवति।

(हिन्दी) **४७८**. उस समय कौन सा सुख होता है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्तसंस्पर्श के द्वारा उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न प्रिय एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय सुख होता है।

४७९. उस समय कौन से चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थीति है- यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

४८०. उस समय कौन सी मनइन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मनइन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञानस्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञानधातु है- यही उस समय मनइन्द्रिय होती है ।

४८१. उस समय कौन सी सौमनस्येन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक आनन्द, चैतसिक सुख, चित्तसंस्पर्श के द्वारा उत्पन्न आनन्द दायक एवं सुखद अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न प्रिय एवं सुखकर वेदना है- यही उस समय सौमनस्येन्द्रिय होती है ।

४८२. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

४८३. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना

(संस्कृतच्छाया) ४८२. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? यः तेषाम् अरूपिणां धर्माणाम् आयुः स्थितिः यपना यापना ईरणं वर्तनं पालनं जीवितं जीवितेन्द्रियम्– इदं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्नाः अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अव्याकृताः।

तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, त्रीणीन्द्रियाणि भवन्ति, एकः स्पर्शो भवति, ...पे०... एको मनोविज्ञानधातुर्भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातुर्भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्नाः अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अव्याकृताः ... पे०... ।

४८३. कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारः प्रीतिः चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्नाः

(हिन्दी) ४८२. उस समय कौन सी जीवितेन्द्रिय होती है? जो उन अरूप धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत होना, गुजरना, क्रिया शीलता, विद्यमान रहना, पालन करना, जीवन और जीवित-इन्द्रिय है- यही उस समय जीवित-इन्द्रिय होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

जो उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रिय होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक मनोविज्ञानधातु होता है; एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४८३. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता

अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

८.कुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातुउपेक्खासहगता

४८४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा सद्दारम्मणा वा गन्धारम्मणा वा रसारम्मणा वा फोट्ठब्बारम्मणा वा धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

४८४. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये कामावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाक: मनोविज्ञानधातु: उत्पन्नो भवति उपेक्षासहगतो रूपालम्बनो वा शब्दालम्बनो वा गन्धालम्बनो वा रसालम्बनो वा स्पृष्टव्यालम्बनो वा धर्मालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भावति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेइन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना: अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) जीवितेन्द्रिय है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

४८४. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय कामावचर कुशल कर्म के किये जाने से संगृहीत फल रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर उपेखासहगत मनोविज्ञानधातु उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, मनइन्द्रिय होती है, उपेक्षा इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४८५. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

४८६. कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति।

४८७. कतमा तस्मिं समये सञ्ञा होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा सञ्ञा सञ्जानना सञ्जानितत्तं – अयं तस्मिं समये सञ्ञा होति।

४८८. कतमा तस्मिं समये चेतना होति? या तस्मिं समये तज्जामनोविञ्ञाणधातुसम्फस्सजा चेतना सञ्चेतना चेतयितत्तं– अयं तस्मिं समये चेतना होति।

(संस्कृतच्छाया)४८५. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

४८६. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजं चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजं अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति।

४८७. कतमा तस्मिन् समये संज्ञा भवति? या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा संज्ञा संज्ञानं संज्ञातत्वम् – इयं तस्मिन् समये संज्ञा भवति।

४८८. कतमा तस्मिन् समये चेतना भवति। या तस्मिन् समये तज्जा मनोविज्ञानधातुसंस्पर्शजा चेतना संचेतना चेतयितत्वम्– इयं तस्मिन् समये चेतना भवति।

(हिन्दी)४८५. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श है।

४८६. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के स्पर्श से उत्पन्न न तो चैतसिक शात न अशात, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदु:ख-असुख अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदु:ख-असुख वेदना है - यही उस समय वेदना होती है।

४८७. उस समय कौन सी संज्ञा होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न संज्ञा है, जो भली प्रकार से जानना और भली प्रकार से जानने की स्थिति है- यही उस समय में संज्ञा होती है।

४८८. उस समय कौन सी चेतना होती है? जो उस समय मनोविज्ञानधातु के संस्पर्श से उत्पन्न चेतना, भली प्रकार से चित्त का सजग होना और भली प्रकार से चित्त की सजग होने की स्थिति है- यही उस समय की चेतना होती हे।

४८९. कतमं तस्मिं समये चित्तं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये चित्तं होति।

४९०. कतमो तस्मिं समये वितक्को होति? यो तस्मिं समये तक्को वितक्को सङ्कप्पो अप्पना ब्यप्पना चेतसो अभिनिरोपना – अयं तस्मिं समये वितक्को होति।

४९१. कतमो तस्मिं समये विचारो होति? यो तस्मिं समये चारो विचारो अनुविचारो उपविचारो चित्तस्स अनुसन्धानता अनुपेक्खनता – अयं तस्मिं समये विचारो होति।

४९२. कतमा तस्मिं समये उपेक्खा होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – अयं तस्मिं समये उपेक्खा होति।

(संस्कृतच्छाया)४८९. कतमं तस्मिन् समये चित्तं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातु: – इदं तस्मिन् समये चित्तं भवति ।

४९०. कतम: तस्मिन् समये वितर्को भवति? य: तस्मिन् समये तर्को वितर्क: सङ्कल्प: अर्पणं व्यर्पणं चेतस: अभिनिरोपनम्– अयं तस्मिन् समये वितर्को भवति।

४९१. कतम: तस्मिन् समये विचारो भवति? य: तस्मिन् समये चारो विचार: अनुविचार: उपविचार: चित्तस्य अनुसन्धानत्वम् अनुप्रेक्षणत्वम् – अयं तस्मिन् समये विचारो भवति।

४९२. कतमा तस्मिन् समये उपेक्षा भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजं अदु:खासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदु:खासुखा वेदना – इयं तस्मिन् समये उपेक्षा भवति।

(हिन्दी)४८९ उस समय कौन सा चित्त होता है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय चित्त होता है।

४९०. उस समय वितर्क कौन सा होता है? जो उस समय तर्क, वितर्क, संकल्प(दृढ़ निश्चय), तर्क-वितर्क (किसी आलम्बन पर चित्त को रखना), किसी आलम्बन पर चित्त को विशेष रूप से रखना, चित्त को किसी विषय पर आरोपित करना तथा सम्यक् संकल्प है- यही उस समय वितर्क होता है।

४९१. उस समय कौन सा विचार होता है? जो उस समय चार, विचारना, अनुविचार, उपविचार, चित्त की अनुसन्धानता एवं ध्यान (विचार) होता है- यही उस समय का विचार है।

४९२. उस समय कौन सी उपेक्षा होती है? जो उस समय न तो चैतसिक शात न अशात, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदु:ख- असुख अनुभूति, चित्त के संस्पर्श से उत्पन्न अदु:ख-असुख वेदना है- यही उस समय वेदना होती है।

४९३. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

४९४. कतमं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पण्डरं मनो मनायतनं मनिन्द्रियं विञ्ञाणं विञ्ञाणक्खन्धो तज्जामनोविञ्ञाणधातु – इदं तस्मिं समये मनिन्द्रियं होति।

४९५. कतमं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये चेतसिकं नेव सातं नासातं चेतोसम्फस्सजं अदुक्खमसुखं वेदयितं चेतोसम्फस्सजा अदुक्खमसुखा वेदना – इदं तस्मिं समये उपेक्खिन्द्रियं होति।

४९६. कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं – इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ४९३. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थितिः – इयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति।

४९४. कतमं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चित्तं मनो मानसं हृदयं पाण्डरं मनो मनआयतनं मनइन्द्रियं विज्ञानं विज्ञानस्कन्धस्तज्जो मनोविज्ञानधातुः– इदं तस्मिन् समये मनइन्द्रियं भवति।

४९५. कतमं तस्मिन् समये उपेक्षेन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये चैतसिकं नैव शातं नाशातं चेतस्संस्पर्शजम् अदुःखासुखं वेदयितं चेतस्संस्पर्शजा अदुःखासुखा वेदना – इदं तस्मिन् समये उपेक्षाः भवति।

४९६. कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? यः तेषाम् अरूपिणां धर्माणाम् आयुः स्थितिः यपना यापना ईरणं वर्तनं पालना जीवितं जीवितेन्द्रियम् – इदं तस्मिन् समये जीवितीन्द्रियं भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्नाः अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी) ४९३. उस समय कौन सी चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति है - यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

४९४. उस समय कौन सी मन-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त, मन, मानस, हृदय, श्वेत, मन, मनआयतन, मन-इन्द्रिय, विज्ञान, विज्ञान-स्कन्ध, उससे उत्पन्न मनोविज्ञान धातु है- यही उस समय मन-इन्द्रिय होती है।

४९५. उस समय कौन सी उपेक्षा-इन्द्रिय होती है? जो उस समय न तो चैतसिक शात न अशात, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदुःख- असुख अनुभूति, चित्त के स्पर्श से उत्पन्न अदुःख-असुख वेदना है- यही उस समय उपेक्षा-इन्द्रिय होती है।

४९६. उस समय कौन सी जीवितेन्द्रिय होती है? जो उस अरूप धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत करना, गुजरना, जीवन-स्थिति, बढ़ना, पालना, जीवन, जीवितेन्द्रिय है- यही उस समय जीवितेन्द्रिय होती है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

४९७. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

कुसलविपाका उपेक्खासहगता मनोविञ्ञाणधातु।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुनः समये चत्वारः स्कन्धाः भवन्ति, द्वे आयतने भवतः, द्वौ धातू भवतः, त्रयः आहाराः भवन्ति, त्रीणीन्द्रियाणि भवन्ति, एकः स्पर्शो भवति, एका वेदना भवति, एका संज्ञा भवति, एका चेतना भवति, एकं चित्तं भवति, एको वेदनास्कन्धो भवति, एकः संज्ञास्कन्धो भवति, एकः संस्कारस्कन्धो भवति, एको विज्ञानस्कन्धो भवति, एकं मनआयतनं भवति, एकं मनइन्द्रियं भवति, एको मनोविज्ञानधातुर्भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातुर्भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्नाः अरूपिणो धर्माः– इमे धर्मा अव्याकृताः ... पे०... ।

४९७.कतमः तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्नाः अरूपिणो धर्माः स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्माः अव्याकृताः।

कुशलविपाकः उपेक्षासहगतो मनोविज्ञानधातुः।

(हिन्दी) उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रिय होती हैं, एक स्पर्श होता है, एक वेदना होती है, एक संज्ञा होती है, एक चेतना होती है, एक चित्त होता है, एक वेदनास्कन्ध होता है, एक संज्ञास्कन्ध होता है, एक संस्कार स्कन्ध होता है, एक विज्ञान स्कन्ध होता है, एक मनआयतन होता है, एक मन-इन्द्रिय होती है, एक मनोविज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४९७. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, जीवितेन्द्रिय है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

कुशलविपाक उपेक्षासहगत मनोविज्ञानधातु समाप्त।

२. कुसलविपाका सहेतुका

१. अट्ठमहाविपाका

४९८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये कामावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति सोमनस्ससहगता ञाणसम्पयुत्ता ...पे°... सोमनस्ससहगता ञाणसम्पयुत्ता ससङ्खारेन ...पे°... सोमनस्ससहगता ञाणविप्पयुत्ता ...पे°... सोमनस्ससहगता ञाणविप्पयुत्ता ससङ्खारेन ...पे°... उपेक्खासहगता ञाणसम्पयुत्ता ...पे°... उपेक्खासहगता ञाणसम्पयुत्ता ससङ्खारेन ...पे°... उपेक्खासहगता ञाणविप्पयुत्ता ...पे°... उपेक्खासहगता ञाणविप्पयुत्ता ससङ्खारेन रूपारम्मणा वा सद्दारम्मणा वा गन्धारम्मणा वा रसारम्मणा वा फोट्ठब्बारम्मणा वा धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे°... अविक्खेपो होति ...पे°... इमे धम्मा अब्याकता ...पे°... अलोभो अब्याकतमूलं ...पे°... अदोसो अब्याकतमूलं ...पे°... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ४९८. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये कामावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाको मनोविज्ञानधातु: उत्पन्नो भवति सौमनस्यसहगतो ज्ञानसम्प्रयुक्त: ...पे°... सौमनस्यसहगतो ज्ञानसम्प्रयुक्त: ससंस्कारेन ...पे°... सौमनस्यसहगतो ज्ञानविप्रयुक्त: ...पे°... सौमनस्यसहगतो ज्ञानविप्रयुक्त: ससंस्कारेन ...पे°... उपेक्षासहगतो ज्ञानसम्प्रयुक्त: ...पे°... उपेक्षासहगतो ज्ञानसम्प्रयुक्त: ससंस्कारेन ...पे°... उपेक्षासहगतो ज्ञानविप्रयुक्त: ...पे°... उपेक्षासहगतो ज्ञानविप्रयुक्त: ससंस्कारेन रूपालम्बनो वा शब्दालम्बनो वा गन्धालम्बनो वा रसालम्बनो वा स्पृष्टव्यालम्बनो वा धर्मालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे°... अलोभ: अव्याकृतमूलम् ...पे°... अद्वेष: अव्याकृतमूलम् ...पे°... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) ४९८. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय कामावचर अकुशल कर्म किया हुये एवं उपचित(संगृहीत) होने से सौमनस्यसहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त मनोविज्ञानधातु विपाक उत्पन्न होता है, ...पूर्ववत्... सौमनस्यसहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त ससंस्कारिक ...पूर्ववत्... सौमनस्यसहगत ज्ञानविप्रयुक्त ...पूर्ववत्... सौमनस्यसहगत ज्ञानविप्रयुक्त ससंस्कारिक ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त....पूर्ववत्..... उपेक्षासहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त ससंस्कारिक ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानविप्रयुक्त ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानविप्रयुक्त ससंस्कारिक रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्मालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर चित्त उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं ...पूर्ववत्... अलोभ अव्याकृतमूल ...पूर्ववत्... अद्वेष अव्याकृतमूल ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

२.रूपावचरविपाका

४९९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति...पे॰... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव रूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे॰... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ४९९. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, प्रीति: भवति ...पे॰... अविक्षेपो भवति, ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव रूपावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे॰... अविक्षेपो भवति, ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: –इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) ४९९. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय रूपभव में पुनर्जन्म की प्राप्ति के लिए मार्ग की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। उस रूपावचर कुशल कर्म के किये हुये होने के कारण से उपचित(संगृहीत) विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५००. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये रूपूपपत्तिया मग्गं भावेति वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव रूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

३.अरूपावचरविपाका

५०१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा

(संस्कृतच्छाया)५००. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये रूपोपपत्यै मार्गं भावयति वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव रूपावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं सुखस्य च प्रहाणात् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५०१. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वश: रूपसंज्ञानां समतिक्रमात् प्रतिघसंज्ञानाम् अस्तंगमनात् नानात्मसंज्ञानाम् अमनसिकारात्

(हिन्दी)५००. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय रूपोत्पत्ति मार्ग की भावना करते हुये वितर्क-विचार को शान्तकर... पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान... पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी रूपावचर कुशल कर्म के किये जाने से संगृहीत विपाक, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५०१. कौन धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय रूपोत्पत्ति मार्ग की भावना करते हुए सभी तरह के रूपसंज्ञा का सर्वथा अतिक्रमण कर, द्वेष(पटिघ) संज्ञाओं के अस्त हो जाने से, नानत्वसंज्ञा (विभिन्न प्रकार की शारीरिक संज्ञा) को अमनसिकार (मन में न करने से) कर, आकाशानन्त्यायतनसंज्ञासहगत, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से,

आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला। तस्सेव अरूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्त्वा विपाकं सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

५०२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव अरूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सब्बसो

(संस्कृतच्छाया) आकाशानन्त्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणात् दुःखस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददुःखासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव अरूपावचरस्य कुशलस्य कर्मणः कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं सर्वशो रूपसंज्ञानां समतिक्रमात् प्रतिघसंज्ञानाम् अस्तंगमनात् नानात्वसंज्ञानाम् अमनसिकारात् आकाशानन्त्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणात्...पे०... चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... धर्माः अव्याकृताः।

५०२. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वशः आकाशानन्त्यायतनं समतिक्रम्य विज्ञानञ्चायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणात् ...पे०... चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव अरूपावचरस्य कुशलस्य कर्मणः कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं सर्वशः

(हिन्दी) सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दुःख-सुख से रहित, उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस अरूपावचर कुशल कर्म के किये जाने से संगृहीत विपाक, सुख को छोड़कर सभी रूपसंज्ञा का सर्वथा अतिक्रमण कर प्रतिघ संज्ञाओं के सर्वथा अस्त हो जाने से, नानत्व संज्ञाओं को मन में न करने से आकाशानन्त्यायतनसंज्ञासहगत सुख को छोड़कर ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५०२. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय अरूपोत्पत्ति मार्ग की भावना करते हुए सर्वथा आकाशानन्त्यायतन को पारकर विज्ञानान्त्यायतनसंज्ञासहगत सुख को छोड़कर ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं।

आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव अरूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना...पे०... चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)आकाशानन्त्यायतनं समतिक्रम्य विज्ञानञ्चायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५०३. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अरूपोपपत्त्यै मार्गं भावयति सर्वशो विज्ञानानत्यायतनं समतिक्रम्य आकिञ्चन्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव अरूपावचरस्य कुशलस्य कर्मण: कृतत्वाद् उपचितत्वाद् विपाकं सर्वशो विज्ञानञ्चायतनं समतिक्रम्य आकिञ्चन्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणात् ...पे०... चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) उस अरूपावचर कुशल कर्म के किये गये होने से प्राप्त विपाक से सभी आकाशानन्त्यायतन को पार कर विज्ञानानन्त्यायतनसहगत, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से, सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृता हैं।

५०३. कौन धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय अरूपोत्पत्ति मार्ग की भावना करते हुए विज्ञानानन्त्यायतन का सभी ओर से सर्वथा अतिक्रमण कर आकिञ्चन्यायतनसंज्ञा के साथ, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस अरूपावचर कुशल कर्म के किये गये होने से प्राप्त विपाक से विज्ञानानन्त्यायतन का भी सभी ओर से सर्वथा अतिक्रमण कर आकिञ्चन्यायतनसंज्ञा के साथ सुख को छोड़कर ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५०४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपूपपत्तिया मग्गं भावेति सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव अरूपावचरस्स कुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा –इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)५०४. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये अरूपोपपत्यै मार्गं भावयति सर्वशः आकिञ्चन्यायतनं समतिक्रम्य नैवसंज्ञानासंज्ञायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दुःखस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददुःखासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव अरूपावचरस्य कुशलस्य कर्मणः कृतत्वाद् उपचितत्वात् विपाकं सर्वशः आकिञ्चन्यायतनं समतिक्रम्य नैवसंज्ञानासंज्ञायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दुःखस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददुःखासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी) ५०४. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय अरूपोत्पत्ति मार्ग की भावना करते हुये आकिञ्चन्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर नैवसंज्ञानासंज्ञायतनसंज्ञा के साथ, सुख एवं दुःख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दुःख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्...अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। उसी अरूपावचर कुशल कर्म के किये गये होने से प्राप्त विपाक के द्वारा आकिञ्चन्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर नैवसंज्ञानासंज्ञायतनसंज्ञा से युक्त हो, सुख एवं दुःख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दुःख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

४. लोकुत्तरविपाक

क. सुद्धिकपटिपदा

५०५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...

(संस्कृतच्छाया) ५०५. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... आज्ञेन्द्रियं भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५०६. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०...

(हिन्दी)५०५. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त, दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण कामभोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता है उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... आज्ञेन्द्रिय होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५०६. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु कामभोगों से विविक्त होकर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्...

अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्त भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५०७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... आज्ञेन्द्रियम् भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५०७. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... आज्ञेन्द्रियम् भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने से वह(साधक) प्राप्त विपाक के द्वारा कामभोगों को छोड़कर...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... आज्ञेन्द्रिय होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५०७. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु कामभोगों से विविक्त होकर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने से वह(साधक) प्राप्त विपाक के द्वारा कामभोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... आज्ञेन्द्रिय होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५०८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५०८. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यैः वितर्कविचारयोः व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतसः एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञमिति कुशलम्...पे०... दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतामिति विपाकः ...पे०... दुःखप्रतिपदं दन्धाभिज्ञमिति कुशलम्...पे०... दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तमिति विपाकः ...पे०... दुःखप्रतिपदं दन्धाभिज्ञमिति कुशलम् ...पे०... दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति विपाकः, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी) ५०८. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्त कर कुशलता के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता विपाक ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा कुशल ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त(असंस्कृत) विपाक ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा कुशल को जान ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित विपाक है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५०९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं ...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं ...पे°... दुतियं झानं ...पे°... ततियं झानं...पे°... चतुत्थं झानं ...पे°... पठमं झानं ...पे°... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञन्ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तं ति विपाको ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे°... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

सुद्धिकपटिपदा।

(संस्कृतच्छाया) ५०९. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यैः विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् ...पे°... सुखप्रतिपदं दन्धाभिज्ञम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् ...पे°... द्वितीयं ध्यानं ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानं ...पे°... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञमिति कुशलम्...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अनिमित्तमिति विपाकः ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञमिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति विपाकः, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकृताः।

शुद्धिकप्रतिपदः।

(हिन्दी) ५०९. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा लोकोत्तर ध्यान की प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दुःखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्त कर कुशलता के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अनिमित्त(असंस्कृत) विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा कुशल ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

शुद्धिकप्रतिपद समाप्त।

ख. सुद्धिकसुञ्ञतं

५१०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

५११. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०...

(संस्कृतच्छाया) ५१०. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै: विविच्यैव कामेभ्य: विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५११. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै: विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०...

(हिन्दी)५१०. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति के लिए काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर, शून्यता पर ध्यान लगाकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण कामभोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५११. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति के लिए काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर शून्यता पर ध्यान लगाकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्...

अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५१२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्य अकुसलेहि धम्मेहि सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अनिमित्तम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५१२. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने से वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण कामभोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न अनिमित्त(असंस्कृत) के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५१२. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की भावना करता है मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति के लिये कामभोगों से विविक्त होकर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान को प्राप्तकर शून्यता पर ध्यान लगाकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल है। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने से (साधक) प्राप्त विपाक के कारण, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर अप्रणिहित(कामना रहित) होकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५१३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं...पे°... ततियं झानं...पे°... चतुत्थं झानं...पे°... पठमं झानं...पे°... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे°... सुञ्ञतन्ति विपाको...पे°... सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे°... अनिमित्तन्ति विपाको...पे°... सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे°... अप्पणिहितन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

ग. सुञ्ञतपटिपदा

५१४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितर्कं सविचारं विवेकजं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति

(संस्कृतच्छाया)५१३. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै वितर्कविचारायोः व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतसः एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानम् ...पे°... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति शून्यतामिति कुशलम् ...पे°... शून्यतामिति विपाकः ...पे°... शून्यतामिति कुशलम् ...पे°... अनिमित्तमिति विपाकः ...पे°... शून्यतामिति कुशलम् ...पे°... अप्रणिहितमिति विपाकः, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकृताः।

५१४. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति

(हिन्दी)५१३. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की भावना करता है समस्त मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति के लिए वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथमध्यान ...पूर्ववत्...पञ्चम ध्यान उपसम्पन्न शून्यता वाले कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... शून्यता विपाक ...पूर्ववत्... शून्यता कुशल ...पूर्ववत्... अनिमित्त विपाक ...पूर्ववत्... शून्यता कुशल ...पूर्ववत्... अप्रणिहित विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५१४. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की भावना करता है मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति के लिये काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय

दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५१५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति

(संस्कृतच्छाया) दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः अव्याकृताः।

५१५. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति

(हिन्दी) अकुशल धर्मों का प्रहाणकर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित, प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल है। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण कामभोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता वाले प्रथम ध्यान उपसम्पन्न विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५१५. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की भावना करता है मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति के लिये कामभोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण कामभोगों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दुःखप्रतिपद

दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५१६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५१६. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्त्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५१६. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की भावना करता है मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५१७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५१७. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै वितर्कविचारयोः व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतसः एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतामिति कुशलम् ...पे०... दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतामिति विपाकः ...पे०... दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतामिति कुशलम् ...पे०... दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं अनिमित्तमिति विपाकः ...पे०... दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतमिति कुशलम् ...पे०... दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं अप्रणिहितमिति विपाकः, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी) ५१७. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की भावना करता है समस्त मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति के लिए वितर्कविचार को शान्तकर वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान उपसम्पन्न दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता विपाक ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञज्ञ शून्यता कुशल ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त विपाक ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता कुशल ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५१८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं ...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं ...पे°... दुतियं झानं ...पे°... ततियं झानं ...पे°... चतुत्थं झानं...पे°... पठमं झानं ...पे°... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे°... अविक्खेपो; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५१८. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यताम्, ...पे°... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यताम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यताम् ...पे°... द्वितीयं ध्यानम् ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानम् ...पे°... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतामिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतामति विपाक: ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतामिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अनिमित्तमिति विपाक: ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतामिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति विपाक:, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे°... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) ५१८. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की भावना करता है मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता पञ्चम ध्यान उपसम्पन्न कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्रभिज्ञा शून्यता विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता कुशल ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अनिमित्त विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता कुशल ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

घ. सुद्धिकअप्पणिहितं

५१९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे°... अविक्खेपो होति ...पे°... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे°... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे°... अविक्खेपो होति ...पे°... इमे धम्मा अब्याकता।

५२०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे°... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो

(संस्कृतच्छाया)५१९. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे°... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५१९. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे°... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो

(हिन्दी)५१९. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त अप्रणिहित के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न अप्रणिहित के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५२०. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... अप्रणिहित के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ..पूर्ववत्... अविक्षेप होता है

होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अनिमित्तम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५२१. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के ...पूर्ववत्... अनिमित्त वाले प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५२१. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... अप्रणिहित वाले प्रथम ध्यान प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५२२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं ति कुसलं ...पे०... अप्पणिहितं ति विपाको ...पे०... अप्पणिहितं ति कुसलं ...पे०... अनिमित्तं ति विपाको ...पे०... अप्पणिहितं ति कुसलं ...पे०... सुञ्ञतं ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

ङ. अप्पणिहितपटिपदा

५२३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च

(संस्कृतच्छाया)५२२. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे०... अप्रणिहितमिति विपाक: ...पे०... अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे०... अनिमित्तमिति विपाक: ...पे०... अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे०... शून्यतामिति विपाक:, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५२३. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य

(हिन्दी)५२२. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न की ध्यान भावना करता है ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान उपसम्पन्न अप्रणिहित कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... अप्रणिहित विपाक ...पूर्ववत्... अप्रणिहित कुशल ...पूर्ववत्... अनिमित्त विपाक ...पूर्ववत्... अप्रणिहित कुशल ...पूर्ववत्... शून्यता विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५२३. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय

अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

५२४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति

(संस्कृतच्छाया) अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५२४. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति

(हिन्दी) अकुशल धर्मों का प्रहाणकर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं।

५२४. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दु:खप्रतिपद

दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

५२५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं

(संस्कृतच्छाया) दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकृताः।

५२५. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात्

(हिन्दी) तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उसी लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५२५. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान की भावना से प्राप्त विपाक से काम-

विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५२६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा ...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति विपाको ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तन्ति विपाको ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)भावितत्वात् विपाकं विविच्चैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभङ्गं शून्यतम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५२६. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति विपाक: ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तमिति विपाक: ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतामिति विपाक:, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) वितर्कों को छोड़कर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५२६. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु वितर्कविचार को शान्तकर ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान उपसम्पन्न दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित विपाक ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित कुशल ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त विपाक ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित कुशल ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५२७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं ...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं ...पे°... दुतियं झानं ...पे°... ततियं झानं ...पे°... चतुत्थं झानं ...पे°... पठमं झानं ...पे°... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं ति विपाको...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं ति कुसलं...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तं ति विपाको...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५२७. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितम्, ...पे°... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितम् ...पे°... द्वितीयं ध्यानम् ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानम् ...पे°... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति विपाक: ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अनिमित्तमिति विपाक: ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितमिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतामिति विपाक:, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) ५२७. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर दुःखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित..पूर्ववत् सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित कुशल वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित विपाक कुशल के साथ विहार करता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

च. वीसति महानया

५२८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं मग्गं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं ...पे°... लोकुत्तरं सतिपट्ठानं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं सम्मप्पधानं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं इद्धिपादं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं इन्द्रियं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं बलं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं बोज्झङ्गं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं सच्चं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं समथं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं धम्मं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं खन्धं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं आयतनं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं धातुं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं आहारं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं फस्सं भावेति...पे°... लोकुत्तरं वेदनं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं सञ्ञं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं चेतनं भावेति ...पे°... लोकुत्तरं चित्तं भावेति निय्यानिकं

(संस्कृतच्छाया)५२८. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं मार्गं भावयति यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् ...पे°... लोकोत्तरं स्मृतिप्रस्थानं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं सम्यक्प्रधानं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं ऋद्धिपादं भावयति ...पे°... लोकोत्तरम् इन्द्रियं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं बलं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं बोध्यङ्गं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं सत्यं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं शमथं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं धर्मं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं स्कन्धं भावयति ...पे°... लोकोत्तरम् आयतनं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं धातुं भावयति ...पे°... लोकोत्तरम् आहारं भावयति ...पे°... लोकोत्तरं स्पर्शं भावयति ...पे°... लोकोत्तरां वेदनां भावयति ...पे°... लोकोत्तरां संज्ञां भावयति ...पे°... लोकोत्तरां चेतनां भावयति ...पे°... लोकोत्तरं चित्तं

(हिन्दी)५२८. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्मृतिप्रस्थान की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर सम्यक्प्रधान की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर ऋद्धिपाद की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर इन्द्रिय की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर बल की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर बोध्यंग की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर सत्य की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर शमथ की भावना ...पूर्ववत्... लोकोतर धातु की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर आहार ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्पर्श की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर चेतना ...पूर्ववत्... नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु काम-

अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं ...पे०... अनिमित्तं ...पे०... अप्पणिहितं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

छ. छन्दाधिपतेय्यसुद्धिकपटिपदा

५२९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति नियानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति

(संस्कृतच्छाया) भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला: तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानं उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यताम् ...पे०... अनिमित्तम् ...पे०... अप्रणिहितम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५२९. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति

(हिन्दी) भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त, दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञ के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... अनिमित्त ...पूर्ववत्... अप्रणिहित, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप अविक्षेप होता है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५२९. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान

दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५३०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति

(संस्कृतच्छाया) दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यताम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५३०. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्चैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति

(हिन्दी) को प्राप्तकर दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह प्राप्त विपाक के कारण काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५३०. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५३१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः अव्याकृताः।

५३१. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी)५३१. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण वह(साधक) प्राप्त विपाक के कारण काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान उपसम्पन्न दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५३२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५३२. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम्...पे०...दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति विपाक:, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)५३२.कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले, चित्त की एकाग्रता से युक्त, वितर्क-विचार से रहित, समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता वाले कुशल पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले विपाक ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता वाले कुशल ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की प्रधानता वाले विपाक ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता वाले कुशल ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा इच्छा रहित छन्द की प्रधानता वाले विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५३३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)५३३. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम्...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम्...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति विपाकः ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यमिति विपाकः ...पे०...सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति विपाकः, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी)५३३. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता वाले कुशल पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद छन्द की प्रधानता कुशल ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता कुशल ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की प्रधानता वाले विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा इच्छा रहित छन्द की प्रधानता वाले विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

ज. छन्दाधिपतेय्यसुद्धिकसुञ्ञता

५३४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५३४. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यः विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति शून्यतां छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यः विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति शून्यतां छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी) ५३४. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त शून्यता एवं छन्द की प्रधानता वाली प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण, काम-भोगों की वासना का त्यागकर पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त शून्यता एवं छन्द की प्रधानता वाली प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५३५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५३६.कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं

(संस्कृतच्छाया) ५३५. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति शून्यतां छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति अनिमित्तं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५३६. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति शून्यतां छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं

(हिन्दी)५३५. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त शून्यता एवं छन्द की प्रधानता वाली प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्...अनिमित्त छन्द की प्रधानता वाली प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५३६. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त शून्यता एवं छन्द की प्रधानता वाली प्रथम ध्यान को प्राप्तकर भावना करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप

विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५३७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५३७. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम्...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति शून्यतां छन्दाधिपत्यमति कुशलम् ...पे०... शून्यतां छन्दाधिपत्यमति विपाक: ...पे०... शून्यतां छन्दाधिपत्यमति कुशलम् ...पे०... अनिमित्तं छन्दाधिपत्यमति विपाक: ...पे०... शून्यतां छन्दाधिपत्यमति कुशलम् ...पे०... अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमति विपाक:, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) होता ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल है। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५३७. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान उपसम्पन्न शून्यता छन्द की प्रधानता वाली कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... शून्यता छन्द की प्रधानता वाली कुशल ...पूर्ववत्... शून्यता छन्द की प्रधानता वाली कुशल ...पूर्ववत्... अनिमित्त छन्द की प्रधानता वाली विपाक ...पूर्ववत्... शून्यता छन्द की प्रधानता वाली कुशल ...पूर्ववत्... अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाली विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५३८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५३९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं,

(संस्कृतच्छाया)५३८. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति अनिमित्तं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५३९. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यम्,

(हिन्दी)५३८. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने से विपाक के कारण, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५३९. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है,

तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकुत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५४०. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल है। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४०. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये जाने एवं भावित होने के कारण, काम-भोगों की वासना का त्यागकर...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)५४१. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति विपाक:, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)५४१. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से, आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित, समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता कुशल वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाली विपाक ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता कुशल ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की प्रधानता विपाक ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता कुशल ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता विपाक ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं...पे०... दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं ...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं

(संस्कृतच्छाया) ५४२. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यम् ...पे०... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यम् ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम्

(हिन्दी)५४२. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्...प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता कुशल वाले पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता कुशल ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की प्रधानता विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता कुशल ...पूर्ववत्...

छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

५४३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति विपाकः, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अव्याकृताः।

५४३.कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः – इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी) सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता विपाक ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता विपाक है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४३. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति, अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५४४. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति अनिमित्तं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)५४४. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त इच्छा रहित छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त अनिमित्त छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४५. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा...पे०...

(संस्कृतच्छाया) ५४५. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति शून्यतां छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५४६. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात्

(हिन्दी)५४५. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त इच्छा रहित छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त शून्य छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४६. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क एवं विचार से रहीत...पूर्ववत्... द्वितीय

दुतियं झानं ...पे०... ततियं झानं ...पे०... चतुत्थं झानं ...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको ...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे०... अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको ...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे०... सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०...

(संस्कृतच्छाया) ...पे०... द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०...पञ्चमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति विपाकः ...पे०... अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... अनिमित्तं छन्दाधिपत्यमिति विपाकः ...पे०... अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे०... शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति विपाकः, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः अव्याकृताः।

५४७. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०...

(हिन्दी) ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... इच्छा रहित इच्छा की प्रधानता वाली पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... इच्छा रहित छन्द की प्रधानता विपाक ...पूर्ववत्... इच्छा रहित छन्द की प्रधानता कुशल ...पूर्ववत्... अनिमित्त छन्द की प्रधानता विपाक ...पूर्ववत्... इच्छा रहित छन्द की प्रधानता कुशल ...पूर्ववत्... शून्यता छन्द की प्रधानता विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४७. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त, दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा इच्छा रहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श

अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं

(संस्कृतच्छाया) अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५४८. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं

(हिन्दी) होता है अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा इच्छा रहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४८. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा इच्छा रहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं

सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५४९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि ...पे०... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा अव्याकृताः।

५४९. कतमे धर्मा अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमायाः भूम्याः प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यः ...पे०... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः कुशलाः। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्यः सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दुःखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् शून्यतां छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः अव्याकृताः।

(हिन्दी) विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की प्रधानता के साथ विहार करता है। उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५४९. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा इच्छा-रहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त दुःखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५५०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं ...पे°... ततियं झानं ...पे°... चतुत्थं झानं ...पे°... पठमं झानं ...पे°... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं ति कुसलं ...पे°... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं ति विपाको ...पे°... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं ति कुसलं ...पे°... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यं ति विपाको...पे°... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं ति कुसलं ...पे°... दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यं ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति...पे°... अविक्खेपो होति...पे°... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५५०. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानम् ...पे°... पञ्चमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे°... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे°... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे°... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे°... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे°... दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति विपाक:, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे°... अविक्षेपो भवति ...पे°... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)५५०.कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से, आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त, वितर्क-विचार से रहित, समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा इच्छा-रहित छन्द की प्रधानता वाले कुशल पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा इच्छा-रहित छन्द की प्रधानता वाले कुशल ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा इच्छा-रहित छन्द की प्रधानता वाले कुशल ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की प्रधानता वाले विपाक ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले विपाक, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५५१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि ...पे°... पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं ...पे°... सुखपटिपदं दन्धाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं ...पे°... दुतियं झानं...पे°... ततियं झानं...पे°... चतुत्थं झानं ...पे°... पठमं झानं ...पे°... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं ...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अनिमित्तं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको...पे°... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यन्ति कुसलं

(संस्कृतच्छाया) ५५१. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्य: ...पे°... प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम् ...पे°... सुखप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम् ...पे°... द्वितीयं ध्यानम् ...पे°... तृतीयं ध्यानम् ...पे°... चतुर्थं ध्यानम् ...पे°... प्रथमं ध्यानम् ...पे°... पञ्चमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम् ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अनिमित्तं छन्दाधिपत्यमिति विपाक: ...पे°... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यमिति कुशलम्

(हिन्दी)५५१. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर ...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... द्वितीय ध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाले कुशल पञ्चम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाले कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता विपाक के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता वाले कुशल के साथ विहार करता है ...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अनिमित्त छन्द की

...पे०... सुखपटिपदं खिप्पाभिञ्ञं सुञ्ञतं छन्दाधिपतेय्यन्ति विपाको, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

५५२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं मग्गं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं सतिपट्ठानं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं सम्मप्पधानं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं इद्धिपादं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं इन्द्रियं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बलं भावेति...पे०... लोकुत्तरं बोज्झङ्गं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं सच्चं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं समथं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धम्मं भावेति...पे०... लोकुत्तरं खन्धं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं आयतनं भावेति...पे०... लोकुत्तरं धातुं भावेति...पे०... लोकुत्तरं आहारं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं फस्सं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं वेदनं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं सञ्ञं भावेति ...पे०... लोकुत्तरं चेतनं

(संस्कृतच्छाया) ...पे०... सुखप्रतिपदं क्षिप्राभिज्ञम् शून्यतां छन्दाधिपत्यमिति विपाकः, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्माः अव्याकृताः।

५५२. कतमे धर्माः अव्याकृताः? यस्मिन् समये लोकोत्तरं मार्गं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं स्मृतिप्रस्थानं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं सम्यक्प्रधानं भावयति...पे०... लोकोत्तरं ऋद्धिपादं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् इन्द्रियं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं बलं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं बोध्यङ्गं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं सत्यं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं शमथं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं धर्मं भावयति...पे०... लोकोत्तरं स्कन्धं भावयति ...पे०... लोकोत्तरम् आयतनं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं धातुं भावयति...पे०... लोकोत्तरम् आहारं भावयति ...पे०... लोकोत्तरं स्पर्शं भावयति ...पे०... लोकोत्तरां वेदनां भावयति ...पे०... लोकोत्तरां संज्ञां भावयति ...पे०... लोकोत्तरां चेतनां

(हिन्दी) प्रधानता विपाक ...पूर्ववत्.... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा अप्रणिहित छन्द की प्रधानता कुशल...पूर्ववत्... सुखप्रतिपद क्षिप्राभिज्ञा शून्यता छन्द की प्रधानता वाले विपाक के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५५२. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय लोकोत्तर मार्ग की भावना करता है ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्मृतिप्रस्थान की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर सम्यक्प्रधान की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर ऋद्धिपाद की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर इन्द्रिय की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर बल की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर बोध्यंग की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर सत्य की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर शमथ की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर धर्म की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्कन्ध की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर आयतन की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर धातु की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर आहार की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर स्पर्श की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर वेदना की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर संज्ञा की भावना ...पूर्ववत्... लोकोत्तर

भावेति ...पे०... लोकुत्तरं चित्तं भावेति नियानिकं अपचयगामिं दिट्ठिगतानं पहानाय पठमाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं छन्दाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं ...पे०... अनिमित्तं ...पे०... अप्पणिहितं छन्दाधिपतेय्यं ...पे०... वीरियाधिपतेय्यं ...पे०... चित्ताधिपतेय्यं ...पे०... वीमंसाधिपतेय्यं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

पठममग्गविपाको।

(संस्कृतच्छाया) भावयति ...पे०... लोकोत्तरं चित्तं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं दृष्टिगतानां प्रहाणाय प्रथमाया: भूम्या: प्रत्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं छन्दाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञं शून्यताम् ...पे०... अनिमित्तम् ...पे०... अप्रणिहितं छन्दाधिपत्यम् ...पे०... वीर्याधिपत्यम् ...पे०... चित्ताधिपत्यम् ...पे०... वीमंसाधिपत्यम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

प्रथममार्गविपाक:।

(हिन्दी) चेतना की भावना ...पूर्ववत्... नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की मिथ्यादृष्टियों के प्रहाण हेतु तथा प्रथम भूमि की प्राप्ति हेतु भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित, प्रीति एवं सुख से युक्त, दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा छन्द की प्रधानता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त, दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है ...पूर्ववत्... अनिमित्त ...पूर्ववत्... अप्रणिहित छन्द की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीर्य की प्रधानता ...पूर्ववत्... चित्त की प्रधानता ...पूर्ववत्... वीमांसा की प्रधानता, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृता हैं।

प्रथम मार्गफल समाप्त।

दुतियादिमग्गविपाको

५५३. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये लोकुत्तरं झानं भावेति निय्यानिकं अपचयगामिं कामरागब्यापादानं तनुभावाय दुतियाय भूमिया पत्तिया ...पे०... कामरागब्यापादानं अनवसेसप्पहानाय ततियाय भूमिया पत्तिया ...पे०... रूपरागअरूपरागमानउद्धच्चअविज्जाय अनवसेसप्पहानाय चतुत्थाय भूमिया पत्तिया विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अञ्ञिन्द्रियं होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा कुसला। तस्सेव लोकुत्तरस्स कुसलस्स झानस्स कतत्ता भावितत्ता विपाकं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति दुक्खपटिपदं दन्धाभिञ्ञं सुञ्ञतं, तस्मिं

(संस्कृतच्छाया)५५३. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये लोकोत्तरं ध्यानं भावयति नैर्याणिकम् अपचयगामिनं कामरागव्यापादयो: तनुभावाय द्वितीयाया: भूम्या: प्राप्त्यै ...पे०... कामरागव्यापादयो: अनवशेषप्रहाणाय तृतीयाया: भूम्या: प्राप्त्यै ...पे०... कामरागव्यापादयो: तनुभावाय द्वितीयाया: भूम्या: प्राप्त्यै ...पे०... कामरागव्यापादयो: अनवशेषप्रहाणाय तृतीयाया: भूम्या: प्राप्त्यै ...पे०... रूपरागारूपरागमानौद्धत्याविद्याया अनवशेषप्रहाणाय चतुर्थ्या: भूम्या: प्राप्त्यै विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... आज्ञेन्द्रियं भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: कुशला:। तस्यैव लोकोत्तरस्य कुशलस्य ध्यानस्य कृतत्वात् भावितत्वात् विपाकं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानमुपसम्पद्य विहरति दु:खप्रतिपदं तन्द्राभिज्ञम् शून्यताम्, तस्मिन्

(हिन्दी) ५५३. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय नैर्याणिक एवं अपचयगामी लोकोत्तर ध्यान की भावना करता है कामराग एवं द्वेष को कम करने के लिये, द्वितीय भूमि की प्राप्ति के लिये ...पूर्ववत्... कामराग एवं व्यापाद से पूर्णरूप से छुटकारा प्राप्ति के लिये, तृतीय भमि की प्राप्ति ...पूर्ववत्... रूपराग, अरूपराग, औद्धत्य एवं अविद्या से पूर्णरूप छुटकारा प्राप्ति के लिये, चतुर्थ भूमि को प्राप्ति के लिये, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाण कर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त, दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... आज्ञेन्द्रिय होती है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म कुशल हैं। उस लोकोत्तर कुशल ध्यान के किये होने से, भावित होने से विपाक, काम-भोगों की वासना का त्यागकर...पूर्ववत्... दु:खप्रतिपद तन्द्राभिज्ञा शून्यता वाले प्रथम ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है

समये फस्सो होति ...पे०... अञ्ञाताविन्द्रियं होति...पे०... अविक्खेपो होति...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

५५४. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...।

५५५. कतमं तस्मिं समये अञ्ञाताविन्द्रियं होति? या तेसं अञ्ञातावीनं धम्मानं अञ्ञा पञ्ञा पजानना विचयो पविचयो धम्मविचयो सल्लक्खणा उपलक्खणा पच्चुपलक्खणा पण्डिच्चं कोसल्लं नेपुञ्ञं वेभब्या चिन्ता उपपरिक्खा भूरी मेधा परिणायिका विपस्सना सम्पजञ्ञं पतोदो पञ्ञा पञ्ञिन्द्रियं पञ्ञाबलं पञ्ञासत्थं पञ्ञापासादो पञ्ञाआलोको पञ्ञाओभासो पञ्ञापज्जोतो पञ्ञारतनं अमोहो धम्मविचयो सम्मादिट्ठि धम्मविचयसम्बोज्झङ्गो मग्गङ्गं मग्गपरियापन्नं –इदं तस्मिं समये अञ्ञाताविन्द्रियं होति ...पे०... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता। दुतियादिमग्गविपाको। लोकुत्तरविपाको।

(संस्कृतच्छाया) समये स्पर्शो भवति...पे०... आज्ञातावीन्द्रियं भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५५४. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०...।

५५५. कतमं तस्मिन् समये आज्ञातावीन्द्रियं भवति? या तेषाम् आज्ञातावीनां धर्माणाम् आज्ञा प्रज्ञा प्रज्ञानं विचय: प्रविचयो धर्मविचय: सल्लक्षणा उपलक्षणा प्रत्युपलक्षणा पाण्डित्यं कौशल्यं नैपुण्यं वैभव्या चिन्ता उपपरीक्षा भूरि: मेधा परिणायिका विपश्यना सम्प्रजन्यं प्रतोद: प्रज्ञा प्रज्ञेन्द्रियं प्रज्ञाबलं प्रज्ञाशस्त्रं प्रज्ञाप्रासाद: प्रज्ञालोक: प्रज्ञावभास: प्रज्ञाप्रद्योत: प्रज्ञारत्नम् अमोहो धर्मविचय: सम्यग्दृष्टि: धर्मविचयसम्बोध्यङ्गं मार्गाङ्गं मार्गपर्यापन्नम्– इदं तस्मिन् समये आज्ञातावीन्द्रियं भवति ...पे०... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

द्वितीयादिमार्गविपाक:। लोकोत्तरविपाक:।

(हिन्दी)...पूर्ववत्... अज्ञातावीन्द्रिय होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५५४. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श कराना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय स्पर्श होता है।

५५५. उस समय कौन सी आज्ञातावीन्द्रिय होती है? जो उसका सम्यक् ज्ञान प्राप्त, धर्मों का ज्ञान, प्रज्ञा, यथार्थ रूप में जानना, विचयन, प्रविचय (अनुशीलन), धर्मविचय , निश्चयात्मक ज्ञान, विवेचनात्मक ज्ञान, प्रभेदक ज्ञान, पाण्डित्य, कुशलता का भाव, निपुणता, अनित्य आदि धर्मों की विभावना करना, मीमांसा, जांच-पड़ताल, क्लेशों को जो नष्ट करती, हितकर धर्मों को प्राप्त कराने वाली क्रिया, विपश्यना, सम्प्रजन्य, अंकुश, प्रज्ञा, प्रज्ञा-इन्द्रिय, प्रज्ञा-बल, प्रज्ञा-शस्त्र, प्रज्ञा-प्रासाद, प्रज्ञा-आलोक, प्रज्ञा-प्रकाश, प्रज्ञा-प्रद्योत, प्रज्ञा-रत्न, अमोह, धर्म-विचय, सम्यग्दृष्टि, धर्मविचयसम्बोध्यंग आर्य-अष्टाङ्गिक-मार्ग का अंग या मार्ग पर आरूढ़ है- यही उस समय आज्ञातावीन्द्रिय होती है ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

लोकोत्तरविपाक समाप्त।

३.अकुसलविपाकअहेतुका

१. पञ्चविञ्ञाणानि

५५६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं चक्खुविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं रूपारम्मणं ...पे०... अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं सोतविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं सद्दारम्मणं ...पे०... अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं घानविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं गन्धारम्मणं ...पे०... अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं जिव्हाविञ्ञाणं उप्पन्नं होति उपेक्खासहगतं रसारम्मणं ...पे०... अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाकं कायविञ्ञाणं उप्पन्नं होति दुक्खसहगतं फोट्ठब्बारम्मणं, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, दुक्खं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, दुक्खिन्द्रियं होति– जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)५५६. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अकुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं चक्षुर्विज्ञानम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं रूपालम्बनम् ...पे०... अकुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं स्रोतविज्ञानम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं शब्दालम्बनम् ...पे०... अकुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं घ्राणविज्ञानम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं गन्धालम्बनम् ...पे०... अकुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं जिह्वाविज्ञानम् उत्पन्नं भवति उपेक्षासहगतं रसालम्बनम् ...पे०... अकुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाकं कायविज्ञानम् उत्पन्नं भवति दु:खसहगतं स्पृष्टव्यालम्बनम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, दु:खं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, दु:खेन्द्रियं भवति– जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)५५६. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय अकुशल कर्म के किये होने से, संचित होने से, विपाक चक्षुर्विज्ञान उत्पन्न होता है उपेक्षासहगत रूपालम्बन ...पूर्ववत्... अकुशल कर्म के किये होने से, संचित होने से, विपाक श्रोतविज्ञान उत्पन्न होता है उपेक्षासहगत शब्दालम्बन ..पूर्ववत्... अकुशल कर्म के किये होने से, संचित होने से, विपाक घ्राणविज्ञान उत्पन्न होता है उपेक्षासहगत गन्धालम्बन ..पूर्ववत्... अकुशल कर्म के किये होने से, संचित होने से, विपाक जिह्वाविज्ञान उत्पन्न होता है उपेक्षासहगत रसालम्बन ..पूर्ववत्... अकुशल कर्म के किये होने से, संचित होने से, दु:खसहगत स्पृष्टव्यालम्बन विपाक कायविज्ञान उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श, वेदना, संज्ञा, चेतना, चित्त, दु:ख, चित्त की एकाग्रता, मनइन्द्रिय, दु:खेन्द्रिय होती है- जीवितेन्द्रिय होती है, अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५५७. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति।

५५८.कतमा तस्मिं समये वेदना होति? यं तस्मिं समये तज्जाकायविञ्ञाणधातुसम्फस्सजं कायिकं असातं कायिकं दुक्खं कायसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं कायसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – अयं तस्मिं समये वेदना होति...पे०...।

५५९. कतमं तस्मिं समये दुक्खं होति? यं तस्मिं समये कायिकं असातं कायिकं दुक्खं कायसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं कायसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं तस्मिं समये दुक्खं होति...पे०...।

५६०. कतमं तस्मिं समये दुक्खिन्द्रियं होति? यं तस्मिं समये कायिकं असातं कायिकं दुक्खं कायसम्फस्सजं असातं दुक्खं वेदयितं कायसम्फस्सजा असाता दुक्खा वेदना – इदं तस्मिं

(संस्कृतच्छाया) ५५७. कतमः तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? यः तस्मिन् समये स्पर्शः स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति।

५५८. कतमा तस्मिन् समये वेदना भवति? यत् तस्मिन् समये तज्जं कायविज्ञानधातुसंस्पर्शजं कायिकम् अशातं कायिकं दुःखं कायसंस्पर्शजम् अशातं दुःखं वेदयितं कायसंस्पर्शजा अशाता दुःखा वेदना – इयं तस्मिन् समये वेदना भवति ...पे०...।

५५९. कतमं तस्मिन् समये दुःखं भवति? यत् तस्मिन् समये कायिकम् अशातं कायिकं दुःखं कायसंस्पर्शजम् अशातं दुःखं वेदयितं कायसंस्पर्शजा अशाता दुःखा वेदना – इदं तस्मिन् समये दुःखं भवति ...पे०...।

५६०. कतमं तस्मिन् समये दुःखेन्द्रियं भवति? यत् तस्मिन् समये कायिकम् अशातं कायिकं दुःखं कायसंस्पर्शजम् अशातं दुःखं वेदयितं कायसंस्पर्शजा अशाता दुःखा वेदना – इदं तस्मिन्

(हिन्दी) ५५७. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श है।

५५८. उस समय कौन सी वेदना होती है? जो उस समय में कायविज्ञानधातुसंस्पर्श से उत्पन्न कायिक अशात(दुःख देने वाला) एवं कायिक दुःख, काय के संस्पर्श से उत्पन्न अशात एवं दुःख अनुभूति, काय के संस्पर्श से उत्पन्न अशाता एवं दुःख वेदना है- यही उस समय वेदना होती है ...पूर्ववत्...

५५९. उस समय कौन सा दुःख होता है? जो उस समय कायिक अशात(दुःख देने वाला) कायिक दुःख है, काय के संस्पर्श से उत्पन्न अशात एवं दुःखद अनुभूति; कायसंस्पर्श से उत्पन्न अशात, दुःख वेदना है- यही उस समय दुःख होता है।

५६०. उस समय कौन सी दुःखेन्द्रिय होती है? जो उस समय कायिक अशात कायिक दुःख है, काय के संस्पर्श से उत्पन्न अशात एवं दुःख की अनुभूति; कायसंस्पर्श से उत्पन्न अशात एवं दुःख वेदना है- यही उस समय

समये दुक्खिन्द्रियं होति। कतमं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति? यो तेसं अरूपीनं धम्मानं आयु ठिति यपना यापना इरियना वत्तना पालना जीवितं जीवितिन्द्रियं– इदं तस्मिं समये जीवितिन्द्रियं होति। ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका कायविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे॰...।

(संस्कृतच्छाया) समये दु:खेन्द्रियं भवति। कतमं तस्मिन् समये जीवितेन्द्रियं भवति? य: तेषाम् अरूपीणां धर्माणाम् आयु: स्थिति: यपना यापना ईरणं वर्तनं पालनं जीवितं जीवितेन्द्रियम्– इदं तस्मिन् समये जीवितीन्द्रियं भवति। ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवन्ति, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, त्रीणीन्द्रियाणि भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति, एका वेदना भवति, एका संज्ञा भवति, एका चेतना भवति, एकं चित्तं भवति, एको वेदनास्कन्धो भवति, एक: संज्ञास्कन्धो भवति, एक: संस्कारस्कन्धो भवति, एको विज्ञानस्कन्धो भवति, एकं मनआयतनं भवति, एकं मनइन्द्रियं भवति, एक: कायविज्ञानधातुर्भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातुर्भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) दु:खेन्द्रिय होती है। उस समय कौन सी जीवित-इन्द्रिय होती है? जो उन अरूपी धर्मों की आयु, स्थिति, व्यतीत होना, गुजरना, क्रिया शीलता,विद्यमान रहना, पालन करना, जीवन और जीवित-इन्द्रिय है- यही उस समय जीवित-इन्द्रिय होती है। अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रिय होती हैं, एक स्पर्श होता है, एक वेदना होती है, एक संज्ञा होती है, एक चेतना होती है, एक चित्त होता है, एक वेदनास्कन्ध होता है, एक संज्ञास्कन्ध होता है, एक संस्कारस्कन्ध होता है, एक विज्ञानस्कन्ध होता है, एक मनआयतन होता है, एक मन-इन्द्रिय होती है, एक कायविज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं ...पूर्ववत्...

५६१. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं– अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

पञ्चविञ्ञाणानि।

२. अकुसलविपाकमनोधातु

५६२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोधातु उप्पन्ना होति उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा वा सद्दारम्मणा वा गन्धारम्मणा वा रसारम्मणा वा फोट्ठब्बारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं

(संस्कृतच्छाया)५६१. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:। पञ्चविज्ञानानि।

५६२. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अकुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाको मनोधातु: उत्पन्नो भवति उपेक्षासहगत: रूपालम्बनो वा शब्दालम्बनो वा गन्धालम्बनो वा रसालम्बनो वा स्पृष्टव्यालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं

(हिन्दी) ५६१. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, चित्त की एकाग्रता, जीवितेन्द्रिय; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

पाँचविज्ञान समाप्त।

५६२.. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय अकुशल कर्म के किये होने से, संचित होने से, रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर विपाक उपेक्षासहगत मनोधतु उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं ... पूर्ववत्...।

होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका मनोधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

५६३. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

अकुसलविपाका मनोधातु।

(संस्कृतच्छाया) भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे०...।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवन्ति, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, त्रीणीन्द्रियानि भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति...पे०... एक: मनोधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एक: धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५६३. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

अकुशलविपाक: मनोधातु:।

(हिन्दी)उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रियाँ होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक कायविज्ञानधातु होता है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं ... पूर्ववत्... ।

५६३. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, जीवितेन्द्रिय है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

अकुशलविपाक मनोधातु समाप्त।

३.अकुसलविपाकमनोविञ्ञाणधातु

५६४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अकुसलस्स कम्मस्स कतत्ता उपचितत्ता विपाका मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा सद्दारम्मणं वा गन्धारम्मणं वा रसारम्मणं वा फोट्ठब्बारम्मणं वा धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे॰...। तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं

(संस्कृतच्छाया)५६४. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अकुशलस्य कर्मण: कृतत्वात् उपचितत्वात् विपाको मनोविज्ञानधातु: उत्पन्नो भवति उपेक्षासहगतो रूपालम्बनो वा शब्दालम्बनो वा गन्धालम्बनो वा रसालम्बनो वा स्पृष्टव्यालम्बनो वा धर्मालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेइन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे॰...। तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, त्रीणीन्द्रियानि भवन्ति, एको स्पर्शो भवति, एका वेदना भवति, एका संज्ञा भवति, एका चेतना भवति, एकं चित्तं भवति, एको वेदनास्कन्धो भवति, एक: संज्ञास्कन्धो भवति, एक: संस्कारस्कन्धो भवति, एको विज्ञानस्कन्धो भवति, एकं मनआयतनं भवति,

(हिन्दी)५६४. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय अकुशल कर्म के किये होने से, संचित होने से, विपाक रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्मालम्बन अथवा पुनः भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर उपेक्षासहगत मनोविज्ञानधातु उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, मन-इन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है; ...पूर्ववत्...। उस समय पुनः चार स्कन्ध होते हैं , दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रियाँ होती हैं, एक स्पर्श होता है, एक वेदना होती है, एक संज्ञा होती है, एक चेतना होती है, एक चित्त होता है, एक वेदनास्कन्ध होता है,

होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

५६५. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

२. किरिया

१. अहेतुका

१.किरिया मनोधातु

५६६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये मनोधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव

(संस्कृतच्छाया) एकं मनइन्द्रियं भवति, एको मनोविज्ञानधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५६५. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५६६. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये मनोधातु: उत्पन्नो भवति क्रिया नैव कुशलो

(हिन्दी) एक संज्ञास्कन्ध होता है, एक संस्कारस्कन्ध होता है, एक विज्ञानस्कन्ध होता है, एक मनआयतन होता है, एक मन-इन्द्रिय होती है,एक मनोविज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं...पूर्ववत्...

५६५. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, जीवितेन्द्रिय है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध एवं विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

अव्याकृत विपाक समाप्त।

५६६. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय न कुशल, न अकुशल और न ही कर्मविपाक उपेक्षा सहगत

कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा...पे०... फोट्ठब्बारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...। तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, तीणिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति...पे०... एका मनोधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

५६७. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना

(संस्कृतच्छाया) नाकुशलो न च कर्मविपाक: उपेक्षासहगतो रूपालम्बनो वा ...पे०... स्पृष्टव्यालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे०...। तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, त्रीणीन्द्रियानि भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति ...पे०... एको मनोधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे०...।

५६७. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचारश्चित्तस्यैकाग्रता जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना

(हिन्दी) क्रिया रूपालम्बन ...पूर्ववत्... स्पृष्टव्यालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर मनोधातु उत्पन्न होती है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, मनेन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है; ...पूर्ववत्... उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, द्वे धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, तीन-इन्द्रिय होती हैं, एक स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... एक मनोधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५६७. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता,

अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति ...पे°... इमे धम्मा अब्याकता।

२. किरियामनोविञ्ञाणधातुसोमनस्ससहगता।

५६८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका सोमनस्ससहगता रूपारम्मणा वा सद्दारम्मणा वा गन्धारम्मणा वा रसारम्मणा वा फोट्ठब्बारम्मणा वा धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, पीति होति, सुखं होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति, मनिन्द्रियं होति, सोमनस्सिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम् – अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे°... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५६८. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये मनोविज्ञानधातु: उत्पन्नो भवति क्रिया नैव कुशलो नाकुशलो न च कर्मविपाक: सौमनस्यसहगतो रूपालम्बनो वा शब्दालम्बनो वा गन्धालम्बनो वा रसालम्बनो वा स्पृष्टव्यालम्बनो वा धर्मालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, प्रीति: भवति, सुखं भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति, मनइन्द्रियं भवति, सौमनस्येन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) जीवितेन्द्रिय है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५६८. कौन धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक सौमनस्य सहगत रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर मनोविज्ञानधातु उत्पन्न होता है, उस समय स्पर्श होता है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, प्रीति होती है, सुख होता है, चित्त की एकाग्रता होती है, वीर्येन्द्रिय होती है, समाधि इन्द्रिय होती है, मनइन्द्रिय होती है, सौमनस्येन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५६९. कतमो तस्मिं समये फस्सो होति? यो तस्मिं समये फस्सो फुसना संफुसना संफुसितत्तं – अयं तस्मिं समये फस्सो होति...पे०...।

५७०. कतमा तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं – अयं तस्मिं समये चित्तस्सेकग्गता होति।

५७१. कतमं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति? यो तस्मिं समये चेतसिको वीरियारम्भो निक्कमो परक्कमो उय्यामो वायामो उस्साहो उस्सोळ्ही थामो धिति असिथिलपरक्कमता अनिक्खित्तछन्दता अनिक्खित्तधुरता धुरसम्पग्गाहो वीरियं वीरियिन्द्रियं वीरियबलं – इदं तस्मिं समये वीरियिन्द्रियं होति।

५७२. कतमं तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति? या तस्मिं समये चित्तस्स ठिति सण्ठिति अवट्ठिति अविसाहारो अविक्खेपो अविसाहटमानसता समथो समाधिन्द्रियं समाधिबलं – इदं

(संस्कृतच्छाया) ५६९. कतम: तस्मिन् समये स्पर्शो भवति? य: तस्मिन् समये स्पर्श: स्पर्शनं संस्पर्शनं संस्पृष्टत्वम्– अयं तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०...।

५७०. कतमा तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं – इयं तस्मिन् समये चित्तस्यैकाग्रता भवति।

५७१. कतमं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति? य: तस्मिन् समये चैतसिको वीर्यारम्भो निष्क्रम: पराक्रम: उद्यमो व्यायाम: उत्साह: उत्साहित्वं स्थामं धृति: अशिथिलपराक्रमत्वम् अनिक्षिप्तछन्दत्वम् अनिक्षिप्तधुरत्वं धुरसम्प्रग्राहो वीर्यं वीर्येन्द्रियं वीर्यबलम्– इदं तस्मिन् समये वीर्येन्द्रियं भवति।

५७२. कतमं तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति? या तस्मिन् समये चित्तस्य स्थिति: संस्थिति: अवस्थिति: अविसंहार: अविक्षेप: अविसंहृतमानसता शमथ: समाधीन्द्रियं समाधिबलं– इदं

(हिन्दी)५६९. उस समय कौन सा स्पर्श होता है? जो उस समय स्पर्श, स्पर्श करने की क्रिया, भली प्रकार से स्पर्श करना, भली प्रकार से स्पर्श में लाने की अवस्था है- यही उस समय का स्पर्श है।

५७०. उस समय कौन सी चित्त की एकाग्रता होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति(सम्यक् रूप से स्थिति), सुदृढ़ स्थिति, अचञ्चलता, अविक्षेप, चित्त की शान्त अवस्था, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल और सम्यक्समाधि है- यही उस समय चित्त की एकाग्रता होती है।

५७१. उस समय कौन सी वीर्य-इन्द्रिय होती है? जो उस समय चैतसिक प्रयत्न का आरम्भ, प्रयत्न(निष्क्रम), पराक्रम, उद्यम, व्यायाम, उत्साह, अत्यन्त सुदृढ़ उत्साह का भाव, सामर्थ्य, धैर्य, वीरता (सुदृढ़ पराक्रम की दशा), सुदृढ़ संकल्प की मनोदशा, सुदृढ़ वीर्य वाला होना, सुदृढ़ प्रयत्न, वीर्य, वीर्येन्द्रिय, वीर्यबल, सम्यग्व्यायाम है - यही उस समय वीर्य-इन्द्रिय होती है।

५७२ उस समय कौन सी समाधीन्द्रिय होती है? जो उस समय चित्त की स्थिति, संस्थिति, अवस्थिति, अचंचलता, अविक्षेप, शान्त चित्त वाला, शमथ, समाधीन्द्रिय, समाधिबल है- यही उस समय समाधीन्द्रिय होती है

तस्मिं समये समाधिन्द्रियं होति ...पे॰... ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे॰...।

५७३. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो पीति चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् समये समाधीन्द्रियं भवति ...पे॰... ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा:– इमे धर्मा: अव्याकृता:।

तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, त्रीणीन्द्रियानि भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति, एका वेदना भवति, एका संज्ञा भवति, एका चेतना भवति, एकं चित्तं भवति, एको वेदनास्कन्धो भवति, एक: संज्ञास्कन्धो भवति, एक: संस्कारस्कन्धो भवति, एको विज्ञानस्कन्धो भवति, एकं मनआयतनं भवति, एकं मनइन्द्रियं भवति, एको मनोविज्ञानधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे॰...।

५७३. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्को विचार: प्रीति: चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि

(हिन्दी) ...पूर्ववत्... अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

उस समय पुनः चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, पाँच-इन्द्रियाँ होती हैं, एक स्पर्श होता है, एक वेदना होती है, एक संज्ञा होती है, एक चेतना होती है, एक चित्त होता है, एक वेदनास्कन्ध होता है, एक संज्ञास्कन्ध होता है, एक संस्कारस्कन्ध होता है, एक विज्ञानस्कन्ध होता है, एक मनआयतन होता है, एक मन-इन्द्रिय होती है, एक मनोविज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५७३. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, प्रीति, चित्त की एकाग्रता,

अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

३. किरिया मनोविञ्ञाणधातु उपेक्खासहगता

५७४. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका उपेक्खासहगता रूपारम्मणा वा सद्दारम्मणा वा गन्धारम्मणा वा रसारम्मणा वा फोट्ठब्बारम्मणा वा धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति, वेदना होति, सञ्ञा होति, चेतना होति, चित्तं होति, वितक्को होति, विचारो होति, उपेक्खा होति, चित्तस्सेकग्गता होति, वीरियिन्द्रियं होति, समाधिन्द्रियं होति मनिन्द्रियं होति, उपेक्खिन्द्रियं होति, जीवितिन्द्रियं होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

(संस्कृतच्छाया) सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५७४. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये मनोविज्ञानधातु: उत्पन्नो भवति क्रिया नैव कुशलो नाकुशलो न च कर्मविपाक: उपेक्षासहगत रूपालम्बनो वा शब्दालम्बनो वा गन्धालम्बनो वा रसालम्बनो वा स्पृष्टव्यालम्बनो वा धर्मालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति, वेदना भवति, संज्ञा भवति, चेतना भवति, चित्तं भवति, वितर्को भवति, विचारो भवति, उपेक्षा भवति, चित्तस्यैकाग्रता भवति, वीर्येन्द्रियं भवति, समाधीन्द्रियं भवति मनइन्द्रियं भवति, उपेक्षेन्द्रियं भवति, जीवितेन्द्रियं भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे०...।

(हिन्दी) वीर्येन्द्रिय, समाधीन्द्रिय, जीवितेन्द्रिय है; अथवा उस समय वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५७४. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक है, उपेक्षा सहगत रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्म आलम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर मनोविज्ञानधातु उत्पन्न होती है, उस समय स्पर्श होत है, वेदना होती है, संज्ञा होती है, चेतना होती है, चित्त होता है, वितर्क होता है, विचार होता है, उपेक्षा होती है, चित्त की एकाग्रता होती है, वीर्येन्द्रिय होती है, समाधीन्द्रिय होती है, मनइन्द्रिय होती है, उपेक्षा-इन्द्रिय होती है, जीवितेन्द्रिय होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

तस्मिं खो पन समये चत्तारो खन्धा होन्ति, द्वायतनानि होन्ति, द्वे धातुयो होन्ति, तयो आहारा होन्ति, पञ्चिन्द्रियानि होन्ति, एको फस्सो होति, एका वेदना होति, एका सञ्ञा होति, एका चेतना होति, एकं चित्तं होति, एको वेदनाक्खन्धो होति, एको सञ्ञाक्खन्धो होति, एको सङ्खारक्खन्धो होति, एको विञ्ञाणक्खन्धो होति, एकं मनायतनं होति, एकं मनिन्द्रियं होति, एका मनोविञ्ञाणधातु होति, एकं धम्मायतनं होति, एका धम्मधातु होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा – इमे धम्मा अब्याकता...पे०...।

५७५. कतमो तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति? फस्सो चेतना वितक्को विचारो चित्तस्सेकग्गता वीरियिन्द्रियं समाधिन्द्रियं जीवितिन्द्रियं; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा ठपेत्वा वेदनाक्खन्धं ठपेत्वा सञ्ञाक्खन्धं ठपेत्वा विञ्ञाणक्खन्धं – अयं तस्मिं समये सङ्खारक्खन्धो होति...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) तस्मिन् खलु पुन: समये चत्वार: स्कन्धा: भवन्ति, द्वे आयतने भवत:, द्वौ धातू भवत:, त्रय: आहारा: भवन्ति, पञ्चेन्द्रियानि भवन्ति, एक: स्पर्शो भवति, एका वेदना भवति, एका संज्ञा भवति, एका चेतना भवति, एकं चित्तं भवति, एको वेदनास्कन्धो भवति, एक: संज्ञास्कन्धो भवति, एक: संस्कारस्कन्धो भवति, एको विज्ञानस्कन्धो भवति, एकं मनआयतनं भवति, एकं मनइन्द्रियं भवति, एको मनोविज्ञानधातु: भवति, एकं धर्मायतनं भवति, एको धर्मधातु: भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे०...।

५७५. कतम: तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति? स्पर्शश्चेतना वितर्क: विचार: प्रीति: चित्तस्यैकाग्रता वीर्येन्द्रियं समाधीन्द्रियं जीवितेन्द्रियम्; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: स्थापयित्वा वेदनास्कन्धं स्थापयित्वा संज्ञास्कन्धं स्थापयित्वा विज्ञानस्कन्धम्– अयं तस्मिन् समये संस्कारस्कन्धो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)उस समय चार स्कन्ध होते हैं, दो आयतन होते हैं, दो धातुएँ होती हैं, तीन आहार होते हैं, पाँचेन्द्रिय होती हैं, एक स्पर्श होता है एक वेदना होती है, एक संज्ञा होती है, एक चेतना होती है, एक चित्त होता है, एक वेदनास्कन्ध होता है, एक संज्ञास्कन्ध होता है, एक संस्कारस्कन्ध होता है, एक विज्ञानस्कन्ध होता है, एक मनआयतन होता है, एक मान-इन्द्रिय होती है, एक मनोविज्ञानधातु होती है, एक धर्मायतन होता है, एक धर्मधातु होती है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५७५. उस समय कौन सा संस्कारस्कन्ध होता है? स्पर्श, चेतना, वितर्क, विचार, चित्त की एकाग्रता, वीर्य-इन्द्रिय, समाधीन्द्रिय जीवितेन्द्रिय है; ये या पुनः वेदनास्कन्ध, संज्ञास्कन्ध, विज्ञानस्कन्ध को छोड़कर उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- यही उस समय संस्कारस्कन्ध होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

२.सहेतुका

१.कामावचरा

५७६. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये मनोविञ्ञाणधातु उप्पन्ना होति किरिया नेव कुसला नाकुसला न च कम्मविपाका सोमनस्ससहगता ञाणसम्पयुत्ता रूपारम्मणा वा सद्दारम्मणा वा गन्धारम्मणा वा रसारम्मणा वा फोट्ठब्बारम्मणा वा धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ ...पे०... सोमनस्ससहगता ञाणसम्पयुत्ता ससङ्खारेन ...पे०... सोमनस्ससहगता ञाणविप्पयुत्ता ...पे०... सोमनस्ससहगता ञाणविप्पयुत्ता ससङ्खारेन ...पे०... उपेक्खासहगता ञाणसम्पयुत्ता ...पे०... उपेक्खासहगता ञाणसम्पयुत्ता ससङ्खारेन ...पे०... उपेक्खासहगता ञाणविप्पयुत्ता ...पे०... उपेक्खासहगता ञाणविप्पयुत्ता ससङ्खारेन रूपारम्मणा वा सद्दारम्मणा वा गन्धारम्मणा वा रसारम्मणा वा फोट्ठब्बारम्मणा वा धम्मारम्मणा वा यं यं वा पनारब्भ, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता...पे०... अलोभो अब्याकतमूलं...पे०... अदोसो अब्याकतमूलं...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५७६. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये मनोविज्ञानधातु: उत्पन्नो भवति क्रिया नैव कुशलो नाकुशलो न च कर्मविपाक: सौमनस्यसहगतो ज्ञानसम्प्रयुक्तो रूपालम्बनो वा शब्दालम्बनो वा गन्धालम्बनो वा रसालम्बनो वा स्पृष्टव्यालम्बनो वा धर्मालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, ...पे०... सौमनस्यसहगतो ज्ञानसम्प्रयुक्त: ससंस्कारेन ...पे०... सौमनस्यसहगतो ज्ञानविप्रयुक्त: ...पे०... सौमनस्यसहगतो ज्ञानविप्रयुक्त: ससंस्कारेन ...पे०... उपेक्षासहगतो ज्ञानसम्प्रयुक्त: ...पे०... उपेक्षासहगतो ज्ञानसम्प्रयुक्त: ससंस्कारेन ...पे०... उपेक्षासहगतो ज्ञानविप्रयुक्त: ...पे०... उपेक्षासहगतो ज्ञानविप्रयुक्त: ससंस्कारेन रूपालम्बनो वा शब्दालम्बनो वा गन्धालम्बनो वा स्पृष्टव्यालम्बनो वा धर्मालम्बनो वा यत् यत् वा पुन: आलम्ब्य, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता: ...पे०... अलोभो अव्याकृतमूलम् ...पे०... अद्वेष: अव्याकृतमूलम् ...पे०... इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी) ५७६.. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक है, सौमनस्यसहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्मालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर मनोविज्ञानधातु उत्पन्न होती है ...पूर्ववत्... सौमनस्यसहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त ससंस्कारिक से युक्त ...पूर्ववत्... सौमनस्यसहगत ज्ञानविप्रयुक्त ...पूर्ववत्... सौमनस्यसहगत ज्ञानविप्रयुक्त ससंस्कारिक से युक्त है ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानसम्प्रयुक्त ससंस्कारिक से युक्त है ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानविप्रयुक्त ...पूर्ववत्... उपेक्षासहगत ज्ञानविप्रयुक्त ससंस्कारिक से युक्त रूपालम्बन, शब्दालम्बन, गन्धालम्बन, रसालम्बन, स्पृष्टव्यालम्बन या धर्मालम्बन अथवा पुन: भिन्न-भिन्न आलम्बनों को ग्रहणकर मनोविज्ञानधातु उत्पन्न होती है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं ...पूर्ववत्... अलोभ अव्याकृतमूल ...पूर्ववत्... अद्वेष अव्याकृतमूल ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

२.रूपावचरा

५७७. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये रूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं विविच्चेव कामेहि विविच्च अकुसलेहि धम्मेहि सवितक्कं सविचारं विवेकजं पीतिसुखं पठमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

५७८. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये रूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं वितक्कविचारानं वूपसमा अज्झत्तं सम्पसादनं चेतसो एकोदिभावं अवितक्कं अविचारं समाधिजं पीतिसुखं दुतियं झानं...पे०... ततियं झानं...पे०... चतुत्थं झानं...पे०... पठमं झानं...पे०... पञ्चमं झानं उपसम्पज्ज विहरति पथवीकसिणं, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया) ५७७. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये रूपावचरं ध्यानं भावयति क्रियामात्रकं नैव कुशलं नाकुशलं न च कर्मविपाकं दृष्टधर्मसुखविहारं विविच्यैव कामेभ्यो विविच्य अकुशलेभ्यो धर्मेभ्य: सवितर्कं सविचारं विवेकजं प्रीतिसुखं प्रथमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५७८. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये रूपावचरं ध्यानं भावयति क्रियामात्रकं नैव कुशलं नाकुशलं न च कर्मविपाकं दृष्टधर्मसुखविहारं वितर्कविचारयो: व्युपशमात् आध्यात्मसम्प्रसादनं चेतस: एकोतिभावम् अवितर्कम् अविचारं समाधिजं प्रीतिसुखं द्वितीयं ध्यानम् ...पे०... तृतीयं ध्यानम् ...पे०... चतुर्थं ध्यानम् ...पे०... प्रथमं ध्यानम् ...पे०... पञ्चमं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति पृथिवीकृत्स्नम्, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

(हिन्दी)५७७. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक है, दृष्टधर्मसुखविहार रूपावचर ध्यान की भावना करता है, काम-भोगों की वासना का त्यागकर, पापमय अकुशल धर्मों का प्रहाणकर, वितर्क एवं विचार सहित और विवेक से जनित प्रीति एवं सुख से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्तकर पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५७८. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक है, दृष्टधर्मसुखविहार रूपावचर ध्यान की भावना करता है, वितर्क-विचारों के शान्त हो जाने से, आन्तरिक रूप से स्वच्छता करने वाले चित्त की एकाग्रता से युक्त वितर्क-विचार से रहित समाधि से उत्पन्न प्रीति एवं सुख वाले द्वितीय ध्यान को प्राप्तकर ...पूर्ववत्... द्वितीयध्यान ...पूर्ववत्... तृतीय ध्यान ...पूर्ववत्... चतुर्थ ध्यान ...पूर्ववत्... प्रथम ध्यान ...पूर्ववत्... पञ्चम ध्यान उपसम्पन्न पृथ्वीकृत्स्न के साथ विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

३. अरूपावचरा

५७९. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं सब्बसो रूपसञ्ञानं समतिक्कमा पटिघसञ्ञानं अत्थङ्गमा नानत्तसञ्ञानं अमनसिकारा आकासानञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

५८०. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं सब्बसो आकासानञ्चायतनं समतिक्कम्म विञ्ञाणञ्चायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति ...पे०... इमे धम्मा अब्याकता।

(संस्कृतच्छाया)५७९. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अरूपावचरं ध्यानं भावयति क्रियामात्रकं नैव कुशलं नाकुशलं न च कर्मविपाकं दृष्टधर्मसुखविहारं सर्वशो रूपसंज्ञानां समतिक्रमात् प्रतिघसंज्ञानाम् अस्तंगमनात् नानात्वसंज्ञानाम् अमनसिकाराद् आकाशानन्त्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५८०. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अरूपावचरं ध्यानं भावयति क्रियामात्रकं नैव कुशलं नाकुशलं न च कर्मविपाकं दृष्टिधर्मसुखविहारं सर्वश: आकाशानन्त्यायतनं समतिक्रम्य विज्ञानानन्त्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाद् दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति तस्मिन् समये स्पर्शो भवति...पे०... अविक्षेपो भवति ...पे०... इमे धर्मा:

(हिन्दी)५७९. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक है, दृष्टधर्मसुखविहार अरूपावचर ध्यान की भावना करता है, सभी तरह से रूप संज्ञाओं का अतिक्रमण कर प्रतिहिंसा की संज्ञाओं के अस्त हो जाने से, नानत्वसंज्ञाओं का मन में ध्यान न कर, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से, सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित, उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध आकाशानन्त्यायतनसंज्ञा से युक्त चतुर्थ ध्यान को प्राप्त कर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं।

५८०. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक है, दृष्टधर्मसुखविहार अरूपावचर ध्यान की भावना करता है, आकाशानन्त्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से, सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित, उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध विज्ञानानत्यायतन संज्ञा के साथ चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५८१. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं सब्बसो विञ्ञाणञ्चायतनं समतिक्कम्म आकिञ्चञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता।

५८२. कतमे धम्मा अब्याकता? यस्मिं समये अरूपावचरं झानं भावेति किरियं नेव कुसलं नाकुसलं न च कम्मविपाकं दिट्ठधम्मसुखविहारं सब्बसो आकिञ्चञ्ञायतनं समतिक्कम्म नेवसञ्ञानासञ्ञायतनसञ्ञासहगतं सुखस्स च पहाना दुक्खस्स च पहाना पुब्बेव सोमनस्सदोमनस्सानं अत्थङ्गमा अदुक्खमसुखं उपेक्खासतिपारिसुद्धिं चतुत्थं झानं उपसम्पज्ज

(संस्कृतच्छाया)५८१. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अरूपावचरं ध्यानं भावयति क्रियामात्रकं नैव कुशलं नाकुशलं न च कर्मविपाकं दृष्टिधर्मसुखविहारं सर्वशो विज्ञानानन्त्यायतनं समतिक्रम्य आकिञ्चन्यायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाय दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानम् उपसम्पद्य विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुन: तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्मा: – इमे धर्मा: अव्याकृता:।

५८२. कतमे धर्मा: अव्याकृता:? यस्मिन् समये अरूपावचरं ध्यानं भावयति क्रियामात्रकं नैव कुशलं नाकुशलं न च कर्मविपाकं दृष्टिधर्मसुखविहारं सर्वश: आकिञ्चन्यायतनं समतिक्रम्य नैवसंज्ञानासंज्ञायतनसंज्ञासहगतं सुखस्य च प्रहाणाय दु:खस्य च प्रहाणात् पूर्वमेव सौमनस्यदौर्मनस्ययोरस्तंगमनाददु:खासुखम् उपेक्षास्मृतिपरिशुद्धिवन्तं चतुर्थं ध्यानम् उपसम्पद्य

(हिन्दी)५८१. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक है, दृष्टधर्मसुखविहार अरूपावचर ध्यान की भावना करता है, विज्ञानानन्त्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध आकिञ्चन्यायतनसंज्ञा के साथ चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है उस समय स्पर्श होता है ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

५८२. कौन से धर्म अव्याकृत हैं? जिस समय क्रिया जो न तो कुशल न अकुशल और न ही कर्मविपाक है, दृष्टधर्मसुखविहार अरूपावचर ध्यान की भावना करता है, आकिञ्चन्यायतन का सर्वथा अतिक्रमण कर, सुख एवं दु:ख के नष्ट होने से सौमनस्य एवं दौर्मनस्य के पहले ही अस्त हो जाने से, दु:ख-सुख से रहित उपेक्षा एवं स्मृति से परिशुद्ध नैवसंज्ञानासंज्ञायतन संज्ञा के साथ चतुर्थ ध्यान को प्राप्तकर विहार करता है, उस समय स्पर्श होता है

विहरति, तस्मिं समये फस्सो होति ...पे०... अविक्खेपो होति; ये वा पन तस्मिं समये अञ्ञेपि अत्थि पटिच्चसमुप्पन्ना अरूपिनो धम्मा– इमे धम्मा अब्याकता ...पे०... अलोभो अब्याकतमूलं...पे०... अदोसो अब्याकतमूलं...पे०... अमोहो अब्याकतमूलं...पे०...इमे धम्मा अब्याकता।

अरूपावचरा।
किरिया अब्याकता।

चित्तुप्पादकण्डं निट्ठितं।

(संस्कृतच्छाया) विहरति, तस्मिन् समये स्पर्शो भवति ...पे०... अविक्षेपो भवति; ये वा पुनः तस्मिन् समये अन्येऽपि सन्ति प्रतीत्यसमुत्पन्ना अरूपिणो धर्माः– इमे धर्माः अव्याकृताः ...पे०... अलोभोऽव्याकृतमूलम् ...पे०... अद्वेषोऽव्याकृतमूलम् ...पे०... अमोहोऽव्याकृतमूलम् ...पे०... इमे धर्माः अव्याकृताः।

अरूपावचराः।
क्रिया अव्याकृताः।

चित्तोत्पादकाण्डं निष्ठितम्।

(हिन्दी) ...पूर्ववत्... अविक्षेप होता है; अथवा उस समय जो भी अन्य प्रतीत्यसमुत्पन्न अरूपी धर्म हैं- ये धर्म अव्याकृत हैं ...पूर्ववत्... अलोभ अव्याकृतमूल ...पूर्ववत्... अद्वेष अव्याकृतमूल ...पूर्ववत्...अमोह अव्याकृतमूल ...पूर्ववत्... ये धर्म अव्याकृत हैं।

अरूपावचर।
अव्याकृत क्रिया।

चित्तोत्पादकाण्ड समाप्त।

*****